Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अगस्त 2010

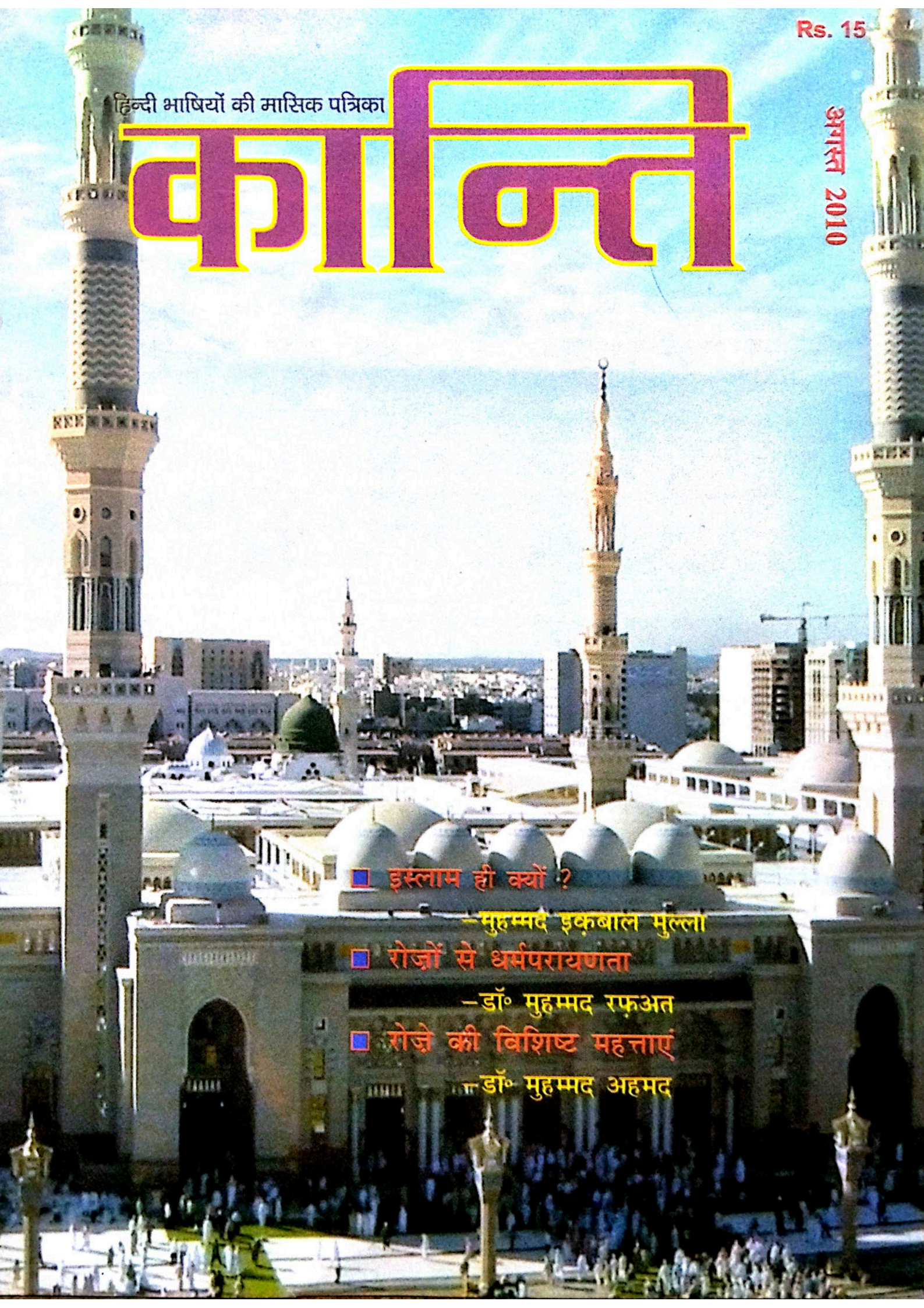

- इस्लाम ही क्यों ?
  —मुहम्मद इक़बाल मुल्ला
- रोज़ों से धर्मपरायणता
  —डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत
- रोज़े की विशिष्ट महत्ताएं
  —डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली, से मान्यता प्राप्त
इंगलिश मिडियम, आवासिय विद्यालय)
महाराज गंज, पोस्टः दादपूर, जिलाः हजारीबाग (झारखण्ड)

हमारा उद्देश्य :– शैक्षणिक रूप से पिछडे मुस्लिम अल्प संख्यक छात्रों के बीच आधूनिक शिक्षा का प्रचार प्रसार करना एंव उन्हें संस्कार युक्त शिक्षा प्रदान कर प्रतियोगिता परीक्षा हेतु तैयार करना।







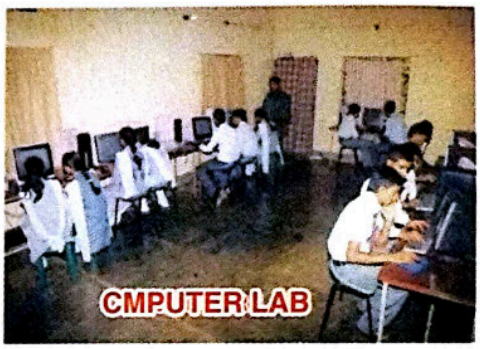

हमारी उपलब्धी :– दस एकड भुमी पर फैला विशाल कैम्पस, विद्यालय एंव छात्रावास की भव्य इमारतें। विज्ञान एंव कम्पयुटर प्रयोगशालाऐं, सुसज्जित पुस्तकालय, स्पोंटस हेतु खेल मैदान, उच्च योग्यताधारी प्रशिक्षित शिक्षक।

–: परिणाम दसवीं बोर्ड परीक्षा 2009 :–

कुल छात्र	उर्तीण	40% से अधिक	50% से अधिक	60% से अधिक	70% से अधिक	80% से अधिक	90% से अधिक
203	198	51	41	49	28	27	2

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:– 94315 30878 / 99345 66213
ई–मेल :– munam_school2000edu@yahoo.com

वकील अहमद
एम.एस.सी., बी.एड.
कार्यवाहक प्राचार्य

मतिनुल हसन
सचीव
एम.पी.एस

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 20 अंक 3 अगस्त 2010

ऐ ईमान लाने वालो ! तुम पर रोज़े अनिवार्य किये गये, जिस प्रकार तुम से पहले के लोगों पर किये गये थे, ताकि तुम (अल्लाह का) डर रखने वाले बन जाओ । (क़ुरआन, 2:183)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantimasik@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

विश्वास

आज एकेश्वरवाद को, चल अपनाएं हम
अपना मानव जीवन सफल बनाएं हम

जाति-धर्म के भेदभाव से मुक्त बनें
रसूल में अपना विश्वास जताएं हम

धर्म नहीं वह जहां अंधविश्वास बहुत
कर्म नहीं वह जिससे लोग निराश बहुत

अवैज्ञानिक तर्कों का हम हवन करें
पैग़म्बर का सत्य-मार्ग अपनाएं हम

सहज प्रेम, इस्लाम हमें सिखलाता है
एक है, सबका मालिक हमें बताता है

परवरदिगार अल्लाह का हम ध्यान करें
नबी के तरीक़े पर ज़िन्दगी चलाएं हम

जाति-जाति का भेद जहां वह धर्म नहीं
जहां ग़रीबों का शोषण वह कर्म नहीं

हलाल का धन ही उत्तम, सच्चा धन मानें
हराम के धन-दौलत को ठुकराएं हम

जो बेबस लाचार सभी का मान बढ़े
दीन दलितों का भी जग में सम्मान बढ़े

भाईचारा, मिल्लत हो पूंजी सबकी
आओ मिलकर बेहतर विश्व बनाएं हम
आज एकेश्वरवाद को, चल अपनाएं हम ।

डॉ० गोरख मस्ताना
राज० इन्टर कॉलेज
बेतिया, प० चंपारण (बिहार)-845438



कहां क्या है ?

विश्वास (कविता)	–डॉ॰ गोरख मस्ताना	3
कुरआन ज्योति		5
मध्य मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष (हदीस प्रभा)		6
रमज़ान : अनुपम प्रशिक्षण-मास (संपादकीय)		7
समाज से अनैतिकता को दूर करें (आपके पत्र)		8
ख़रीदा हुआ दूल्हा (कविता)	–संध्या वीरमानी सुभेदार	11
हज़रत ख़ौला बिन्ते क़ैस रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	13
इस्लाम ही क्यों ? (इंटरव्यू)	–मुहम्मद इक़बाल मुल्ला	15
पवित्र नगर मदीना	–विद्या प्रकाश	21
वोटों की खेती करें... (पुस्तक-समीक्षा)		22
एस॰सी॰/एस॰टी॰ एक्ट और दहेज उत्पीड़न एक्ट में संशोधन की आवश्यकता (विमर्श)	–पुष्पा श्रीवास्तव	23
इस्लामी त्योहार (विशेष आयोजन)		26-27
रोज़ों से धर्मपरायणता	–डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत	29
रोज़े की विशिष्ट महत्ताएं	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	33
टूटी छत, दूषित पानी (कविता)	–अभिराम सत्यज्ञ जयशील	34
हिन्दी साहित्य : संकट पाठकों की संख्या में गिरावट का	–विद्या प्रकाश	35
अभिमत		39
आधुनिक समाज और नारी (उद्‌गार)	–मुदस्सिर मुहम्मद	40
जीवन में घुले कीटनाशक (स्वास्थ्य चर्चा)	–विनय राणा	41
चंगेज़ ख़ान और मुसलमान (अतीत)	–एहसान शौक़	43
मानवता-डॉ॰ पूरन सिंह, अपराधों का ग्राफ़-संजय कुमार चतुर्वेदी (लघुकथाएं)		47
ईश्वर (कविता)	–वृहस्पति	47
वनों का महत्व (बालवीथी)		48

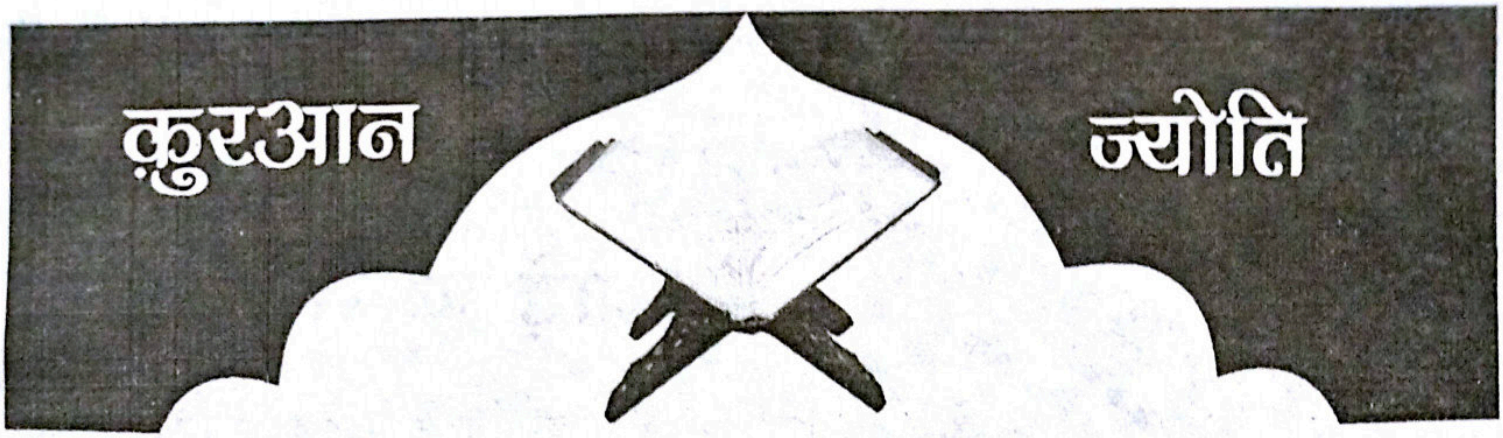

ऐ नबी (सल्ल॰), नरमी और क्षमा का तरीक़ा अपनाओ, भलाई के लिए कहते जाओ, फिर जाहिलों से न उलझो। अगर कभी शैतान तुम्हें उकसाये तो अल्लाह की पनाह मांगो, वह सब कुछ सुनने और जानने वाला है। वास्तव में जो लोग (अल्लाह से) डरनेवाले हैं, उनका हाल तो यह होता है कि कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल अगर उन्हें छू भी जाता है तो तुरन्त चौकन्ने हो जाते हैं और फिर उन्हें साफ़ नज़र आने लगता है कि उनके लिए सही तरीक़एकार क्या है। रहे उनके (अर्थात शैतानों के) भाई बंधु, तो वे उन्हें उनके टेढ़पन में खींच लिए जाते हैं और उन्हें भटकाने में कोई कसर उठा नहीं रखते।[150]

–क़ुरआन, 7 : 199-202

150. इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रचार-प्रसार और मार्गदर्शन व सुधार के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु बताये गये हैं और अभीष्ट केवल आप (सल्ल॰) ही को शिक्षा देना नहीं है, बल्कि आप (सल्ल॰) के द्वारा उन सब लोगों को यही हिकमत सिखाना है जो आप (सल्ल॰) के कार्यवाहक बनकर दुनिया को सीधी राह दिखाने के लिए उठें। इन बिन्दुओं को क्रमवार देखना चाहिए :

1. सत्य के आवाहक के लिए जो गुण सबसे अधिक आवश्यक हैं उनमें से एक यह है कि उसे नर्म स्वभाव, सहनशील और उदार-हृदय होना चाहिए। उसको अपने साथियों के लिए स्नेही, जन-सामान्य के लिए दयावान और अपने विरोधियों के लिए सहनशील होना चाहिए। उसको अपने साथियों की कमज़ोरियों को भी बर्दाश्त करना चाहिए और अपने विरोधियों की सख़्तियों को भी। उसे तीव्र से तीव्र उत्तेजनापूर्ण मौक़ों पर भी अपने स्वभाव को ठंडा रखना चाहिए। अत्यंत असह्य बातों को भी उदार-हृदयता के साथ टाल देना चाहिए, विरोधियों की ओर से कितनी ही कटु बात, लांछन, कष्ट पहुंचाने के दुष्कर्म एवं दुष्टतापूर्ण प्रतिरोध प्रकट हो, उसको क्षमा ही से काम लेना चाहिए। सख़्तगीरी, क्रूरता, पाषाण हृदयता, कटु वार्ता, कुतर्कपूर्ण उकसाव व उत्तेजना इस काम के लिए ज़हर के समान है और इससे काम बिगड़ता है बनता नहीं है। इसी चीज़ को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं बयान किया है कि मेरे रब ने मुझे आदेश दिया है कि क्रोध और प्रसन्नता दोनों स्थितियों में इन्साफ़ की बात कहूं, जो मुझसे कटे मैं उससे जुड़ूं, जो मुझे मेरे हक़ से वंचित करे मैं उसे उसका हक़ दूं, जो मेरे साथ ज़ुल्म करे मैं उसको क्षमा करूं।" और इसी चीज़ का निर्देश आप उन लोगों को देते थे जिन्हें आप दीन (इस्लाम धर्म) के काम पर अपनी ओर से भेजते थे कि "जहां तुम जाओ वहां तुम्हारा पहुंचना लोगों के लिए शुभ सूचना का कारण हो न कि नफ़रत का, और लोगों के लिए तुम सहूलत के मूजिब (कारक) बनो, न कि तंगी व सख़्ती के" (मुस्लिम)। और इस चीज़ का उल्लेख अल्लाह तआला ने नबी (सल्ल॰) के हक़ में कही है : "यह अल्लाह की रहमत है कि तुम इन लोगों के लिए नर्म हो अन्यथा अगर तुम क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब लोग तुम्हारे पास से छंट जाते" (क़ुरआन 3: 159)।

(शेष पृष्ठ 19 पर)

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com



मध्य-मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, मैं भूख के कारण अपना पेट ज़मीन से लगा देता था और भूख के कारण पेट पर पत्थर बांधा करता था । एक दिन मैं उस रास्ते पर बैठ गया जिससे लोग गुज़रते थे । नबी (सल्ल॰) मेरे पास से गुज़रे तो मुझे देखकर मुस्करा दिये और मेरे चेहरे को देखकर मेरी हालत समझ गये, फिर कहा : ''ऐ अबू हुरैरा ।'' मैंने कहा : हाज़िर हूं मैं ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) । आपने कहा : ''मेरे साथ चलो ।'' आप चल पड़े और मैं भी आपके पीछे-पीछे चल पड़ा । आप इजाज़त लेकर घर में गये और फिर मुझे भी इजाज़त दी और मैं भी अन्दर गया । आपने एक प्याले में दूध देखा, तो (घर वालों से) पूछा : '' यह दूध कहां से आया है ?'' उन्होंने कहा : फलां पुरुष या स्त्री ने आपके लिए भेंट किया है । आपने कहा : ''ऐ अबू हुरैरा ।'' मैंने कहा : मैं हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)। आपने कहा : ''जाओ सुफ़्फ़ह वालों को बुला लाओ ।'' हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं : सुफ़्फ़ह वाले इस्लाम के अतिथि थे, न उनका घर था और न उनके पास माल था और न वे किसी का सहारा लेते थे । नबी (सल्ल॰) के पास सदक़ा की चीज़ आती, तो आप उसे उनकी तरफ़ भेज देते और उसमें से स्वयं कुछ नहीं लेते थे । और जब आपके पास भेंट की चीज़ आती, तो उनको बुला लेते और स्वयं भी इस्तेमाल करते थे और उनको भी उसमें शरीक करते । मुझे यह बात नागवार गुज़री और मैंने (जी में) कहा : सुफ़्फ़ह वालों का इससे क्या बनेगा । मैं इसका ज़्यादा हक़दार था कि इस दूध में से कुछ पीता और कुछ ताक़त हासिल करता । जब वे आ जाएंगे, तो आप मुझी को हुक्म देंगे कि सुफ़्फ़ह वालों को पेश करूं । इस तरह तो इसकी आशा है कि मुझ तक इस दूध में से कुछ न पहुंच सके । और अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) के आज्ञापालन के अतिरिक्त कोई चारा भी नहीं है । मैं सुफ़्फ़ह वालों के पास गया और उन्हें बुला लाया । वे आये और आपसे इजाज़त मांगी । आपने इजाज़त दी और वे अपनी-अपनी जगह बैठ गये । आपने कहा : ''ऐ अबू हुरैरा ।'' मैंने कहा : हाज़िर हूं मैं ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)। आपने कहा : "प्याला पकड़ो और उनको दो ।" हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने प्याला लिया । मैं उसे एक व्यक्ति को देता और वह पीता यहां तक कि तृप्त हो जाता । फिर वह प्याला मुझे लौटाता और मैं इसे दूसरे को देता । वह तृप्त होकर फिर प्याला मुझे लौटा देता । अंततः मैं नबी (सल्ल॰) तक पहुंचा और सभी लोग तृप्त हो चुके थे । आपने प्याला लिया और उसे अपने हाथ पर रखा । फिर मेरी तरफ़ देखकर मुस्कराये । और कहा : ''अबू हुरैरा ।'' मैंने कहा : हाज़िर हूं मैं ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) । आपने कहा : ''अब मैं और तुम बाक़ी रह गये हैं । मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) आपने सच कहा । आपने कहा : ''बैठो और पियो ।'' मैं बैठ गया और पीने लगा । आपने कहा : ''पियो ।'' मैंने पिया । आप बराबर यही कहते रहे ? ''पियो ।'' यहां तक कि मैंने कहा : उसकी क़सम जिसने आपको सत्य के साथ भेजा । अब मैं इसके लिए कोई गुंजाइश नहीं पाता । आपने कहा : ''अच्छा तो मेरे समक्ष लाओ ।'' मैंने आपको प्याला दे दिया आपने अल्लाह तआला की प्रशंसा की और अल्लाह का नाम लेकर (बिस्मिल्लाह पढ़कर) बचा हुआ दूध पी लिया ।

–बुख़ारी

(रियाजुस्सालिहीन' से)

रमज़ान : अनुपम प्रशिक्षण-मास

रोज़ा एक महत्वपूर्ण पवित्रतम इबादत है । कुरआन में रोज़ा के लिए 'सौम' शब्द आया है, जिसका अर्थ रुकना, बचना और निगाह रखना है, अर्थात् अपने आपको अल्लाह की हदों के अन्दर रखना और मनोकामनाओं पर नियंत्रण है । इस्लाम चाहता है कि इन्सानों में ईशपरायणता विकसित होने के साथ ही उनमें सद्गुणों का विकास हो और उनकी सारी क्षमता और शक्ति कल्याणकारी कार्यों में लगे । रमज़ान मास के रोज़े आध्यात्मिक और नैतिक प्रशिक्षण का सर्वोत्तम साधन एवं प्रावधान हैं । इन रोज़ों के द्वारा रोज़ेदार में अल्लाह का डर पैदा होता है, धर्मपरायणता पैदा होती है, मन को शुद्धता और हृदय को विशालता पैदा होती है । सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है, संयम पैदा होता है, चरित्र-सुधार होता है और मनोकामनाओं पर क़ाबू पाने की शक्ति पैदा होती है । इसके शारीरिक फ़ायदे भी हासिल होते हैं । पवित्र कुरआन में है–"रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है, और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य एवं असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली हैं । अतः अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाये, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे" (2:185)। एक हदीस में है कि, "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक कर्म उसके लिए है सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । और रोज़ा ढाल है । अतः जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात जुबान पर लाए और न शोर मचाये और दंगा व फ़साद करे और यदि कोई उसे अपशब्द कहे या उससे लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं" (बुख़ारी, मुस्लिम)। यह महीना सर्वथा नेकी और भलाई का है । हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा, "जब रमज़ान का पवित्र महीना आता है, तो आकाशों के द्वार खोल दिये जाते हैं ।" एक और रिवायत में है, "जन्नत के द्वार खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ (नरक) के द्वार बन्द कर दिये जाते हैं और शैतानों को ज़ंजीरों से जकड़ दिया जाता है और रहमत के द्वार भी खोल दिये जाते हैं" (बुख़ारी, मुस्लिम, मुस्नद अहमद, मिश्कात, तिरमिज़ी)।

रमज़ान माह नेकी, भलाई, सहायता, सहानुभूति और सहनशीलता का है, इसीलिए इसे 'शहरुल मुआसात' कहा जाता है । यह इन्सानों, अपने भाइयों और बहनों के साथ सहानुभूति, हमदर्दी और ग़मख़्वारी का महीना है, विशेष रूप से यह एक-दूसरे की तंगियों, महरूमियों, परेशानियों और विपत्तियों में शामिल होने एवं उनकी सेवा-सहायता करने का महीना है । इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि केवल इसी महीने पुण्य कार्य किये जाएं, बल्कि यह प्रशिक्षण मास है । इस पूरे महीने सुकर्म व चरित्र-निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्सान शेष 11 महीने में भलाई-कल्याण के कार्यों में लगा रहता है । फिर वर्ष में एक बार रमज़ान के महीने में भलाई-कल्याण की ओर अग्रसर रखने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है । इस प्रकार यह व्यवस्था अनुपम, पावन और कल्याणकारी बन जाती है । नेकी, भलाई और ईशपरायणता का दायरा बहुत विस्तृत है । इनकी अगणित शाखाएं हैं । खाना खिलाना, रोगियों की चिकित्सा, उनकी सेवा-टहल, अनाथों और विधवाओं की ख़बरगीरी, मुहताजों और फ़क़ीरों की उचित आवश्यकताएं पूरी करना और उनकी सहायता करना आदि ये सब इसी विस्तृत सीमा के कुछ क्षेत्र हैं । इस सेवा के पात्र सब हैं । आपके घर-परिवार वाले और निकट संबंधी भी, अपने दीनी भाई और मित्र भी, आपके पड़ोसी भी और आम मुसलमान एवं इन्सान भी । सहानुभूति के इस सार्वभौम कार्य की ओर निरंतर ध्यान दिलाने और इसे करते रहने के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने रोज़ेदार को इफ़्तार कराने की बड़ी प्रेरणा दी है । आपने कहा, "जो व्यक्ति इस महीने में किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराये तो उसके लिए गुनाहों से मुक्ति और दोज़ख़ (नरक) की आग से रिहाई है । उसको उतना ही सवाब (पुण्य) मिलेगा जितना रोज़ेदार को और इससे रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी नहीं आएगी ।"

समाज से अनैतिकता को दूर करें

सरकारी आंकड़ों के अनुसार महिलाओं की संख्या पुरुषों के अनुपात में लगातार घट रही है, जिससे सामाजिक असंतुलन पैदा हो रहा है । विवाह योग्य युवकों को युवतियां उपलब्ध न होने से ऐसे युवक कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं और मार्ग से भटक जाते हैं । परिणाम आतंकवाद, नक्सलवाद और माओवाद के रूप में प्रकट होता है । प्रकृति ने स्त्री-पुरुष का अनुपात बराबर रखने के लिए ही संरचना की है । किन्तु वर्तमान में व्यक्ति पुत्र पैदा करने के लिए लालायित हो रहा है और माता-पिता दोनों यह चाहते हैं कि उनके घर में पुत्र पैदा हो पुत्री पैदा न हो । इसके कई कारण हैं । सर्वप्रथम कारण तो दहेज है, जिसके चलते कभी-कभी लड़कियों का विवाह रुक जाता है और अगर हो भी जाता है तो बाद में संबंध विच्छेदन की स्थिति उत्पन्न होती है अथवा ससुराल में युवतियों को प्रताड़ित किया जाता है अथवा हत्या कर दी जाती है । इन सबसे भयभीत माता-पिता यह चाहते हैं कि उनके यहां पुत्री का जन्म न हो । किन्तु समस्या का यह हल नहीं है । हमें समाज में बदलाव लाना चाहिए तथा ऐसी परिस्थिति पैदा करनी चाहिए जिससे दहेज के कारण युवतियों की हत्या जैसे कुकृत्य न हों । भ्रूण हत्या समस्या का हल नहीं है ।

भ्रूण हत्या घोर अपराध घोषित कर दिया गया है, किन्तु फिर भी लिंग परीक्षण जारी है और भ्रूण हत्याएं हो रही है । अभी एक शहर में एक कूड़े के ढेर पर 14 भ्रूण पाये गये, जो संभवत: कुंवारी मांओ के रहे होंगे, जिन्होंने समाज के डर से अपना पाप छिपाने के डर से गर्भपात कराया और भ्रूण को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया, किन्तु कुछ भ्रूण ऐसे अवश्य होंगे जो लिंग परीक्षण के बाद कन्या उत्पत्ति होने के डर से कूड़े पर फेंक दिये गये होंगे । भ्रूण हत्या जघन्यतम अपराध है, जिसकी सज़ा कठोर होनी चाहिए, जब तक कठोर सज़ा का प्रावधान नहीं होगा, तब तक भ्रूण हत्या नहीं रुकेगी, किन्तु साथ ही साथ हमें ऐसे उपाय भी ढूंढ़ने होंगे जिससे युवतियों का दहेज के कारण प्रताड़ित किया जाना रुके और उनकी हत्याएं न हों । इसके लिए सामाजिक चेतना आवश्यक है ।

यह सोचने की आवश्यकता है कि यदि भ्रूण हत्याएं नहीं रुकेंगी तो संबंधों के आधार ही नष्ट हो जाएंगे । परिवार में कन्या का होना भी बहुत आवश्यक है । रिश्तों को बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है कि भ्रूण हत्याएं न हों । इसके लिए भले ही कठोर क़दम क्यों न उठाने पड़ें, किन्तु भ्रूण हत्याओं को रोकना ही सामाजिक दृष्टि से उचित है । दहेज लेना-देना भी क़ानूनन अपराध घोषित किया गया है, किन्तु फिर भी दहेज के कारण हत्याएं भी हो रही हैं और झगड़े भी हो रहे हैं । दहेज लेने वाला चुपचाप सौदा करता है और कन्या के पिता को चुपचुप दहेज देना ही पड़ता है, क्योंकि वह कन्या को अधिक आयु की होने तक घर में कुंवारी नहीं रख सकता । अत: वह दहेज देने को मजबूर हो जाता है और दहेज की मांग कभी पूरी नहीं होती । जहां दहेज का दानव सर उठा लेता है, वहां वह बहू की हत्या करके ही शांत होता है । यह दहेज ही जड़ है भ्रूण हत्या की ।

यदि हम भ्रूण हत्यां रोकना चाहते हैं तो इसके लिए हमें कुंवारी महिलाओं को नौकरी न दिये जाने का प्रावधान करना होगा । कुंवारी महिलाएं कभी-कभी प्रलोभन में फंसकर स्वयं को ऐसी स्थिति में ले आती है कि उन्हें गर्भपात कराना पड़ता है । इसलिए आवश्यक है कि समाज में कुंवारी महिलाओं को प्रोत्साहन न दिया जाए, प्रयास किया जाना चाहिए कि महिलाओं को तभी नौकरी दी जाएं जब वह विवाहित हों । इस संदर्भ में यह भी विचारणीय है कि परित्यक्ता और विधवा स्त्रियों का भी पुनर्विवाह होना चाहिए, जिससे समाज में सदाचार बना रहे । ऐसे भी मामले सामने आते हैं जब विधवा और परित्यक्ता स्त्रियों को भी भ्रूण हत्या के लिए विवश होना पड़ता है ।

भ्रूण हत्या का मामला सामने आने पर लिंग परीक्षण करने वाले डॉक्टर को भी सज़ा दी जानी चाहिए और सज़ा इतनी कठोर हो कि भविष्य में कोई इस कार्य को न दोहरा सके । डॉक्टर के पश्चात उन माता-पिताओं को भी कठोर दंड देना चाहिए जो भ्रूण परीक्षण कराकर अपनी पुत्रियों को

जन्म देने से रोक रहे हैं । ऐसे व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए और आर्थिक रूप से दंड के साथ-साथ सज़ा भी होनी चाहिए । जब तक कठोर दंड का प्रावधान नहीं होगा, तब तक भ्रूण हत्या नहीं रुकेगी और यदि भ्रूण हत्या नहीं रुकी तो सामाजिक असंतुलन बढ़ता जाएगा ।

सामाजिक असंतुलन को रोकने के लिए कुंवारी कन्याओं का चाल-चलन भी विचारणीय है । कन्या कुंवारी क्यों रहना चाहती है अथवा मां-बाप उसे कुंवारी क्यों रखना चाहते हैं, इस पर भी ध्यान देना आवश्यक है । वर्तमान में कई मामले ऐसे आये हैं कि कन्या कुंवारी है और मॉडल अथवा कॉल सेन्टर में कार्य कर रही है, जहां उसके पुरुष मित्र बन जाते हैं और आपसी संबंध में निकटता होने के बाद भ्रूण हत्या जैसा पाप हो जाता है । कुंवारी कन्याओं के चाल-चलन पर निगाह रखना सामाजिक दृष्टि से भी आवश्यक है । इसी प्रकार कुंवारे लड़कों पर भी ध्यान रखा जाना चाहिए । कुछ लड़के जान-बूझकर कुंवारा रहना पसन्द करते हैं और कुछ पारिवारिक व सामाजिक कारणों से विवाह नहीं कर पाते । सामाजिक संस्थाओं को ऐसे संदर्भों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जिससे कुंवारे युवक-युवतियों का सुविधापूर्वक विवाह हो सके और दहेज जैसा दानव सर न उठा सके । कुंवारापन बहुत-सी कुंठाओं को जन्म देता है, सामाजिक दृष्टि से इनको रोकना आवश्यक है और कुंवारेपन पर भी प्रतिबंध लगाना आवश्यक है ।

अनैतिक संबंधों पर नित्य प्रति अख़बारों में ख़बरें छपती हैं । परिणाम भी भयंकर होते हैं किन्तु कोई रोक नहीं पा रहा है । सरेआम प्रेमालाप करते हुए लड़के-लड़कियों को पकड़ने का अभियान भी चलाया गया किन्तु यह कुकृत्य नहीं रुक सका, जबकि यह सामाजिक ज़िम्मेदारी है और सामाजिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि ऐसे संबंधों का विरोध करे जो नैतिक नहीं है । अनैतिकता बहुत से दुष्कर्मों को पैदा करती है अत: हमें समाज से अनैतिकता को दूर करना होगा, इसी में हमारी भलाई है ।

हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाइंस बिजनौर-246701 (उ०प्र०)

'कान्ति' : ग़लतफ़हमियां दूर करने का प्रयास

'कान्ति' नियमित मिल रही है । मुल्क की ख़िदमत में आपका प्रयास सराहनीय है । इस्लाम धर्म के संबंध में कुछ लोगों ने जो ग़लत धारणाएं बना रखी हैं, 'कान्ति' उन्हें दूर करने में एक अच्छा क़दम है । मज़हब अपनी जगह है और इन्सानियत अपनी जगह । जो सच्चे इन्सान होते हैं, वे ही मेरी दृष्टि में सच्चे हिन्दू हैं, सच्चे मुसलमान हैं, सच्चे ईसाई हैं । उसका फल बड़ा मीठा होता है ।

भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज़'
सनपावर फ़्लैट्स, अहमदाबाद (गुज०)

नारी सम्मान का सवाल

'कान्ति' मई 2010 अंक मिला । विशेष आयोजन के तहत मुहतरमा नुज़हत यासमीन द्वारा लिखित ''आधुनिक नारी की समस्याएं एवं समाधान'' सामयिक तथा समाज को नयी दिशा व उच्च आयाम देने वाला सरस शब्दों में वर्णन बहुत अच्छा लगा । लड़कियों को कोख में मारने के प्रचलन भ्रूण हत्या पर चर्चा बहुत ही मार्मिक लगी । नारी को मर्यादापूर्ण व शालीन जीवन बिताने की विविध विधाएं भी मुहतरमा ने रखी जो काफ़ी प्रशंसनीय हैं । पुरुष प्रधान समाज नारी समाज का आदिकाल से शोषण करता रहा है । जिस प्रकार से पशुओं को बांध कर रखने के लिए लोहे का सीकड़ तथा नाक में नकेल लगाया जाता है ठीक उसी प्रकार नारियों को बांधने के लिए नाक, कान, हाथ गला, कमर, पैर में सोने और चांदी के करधनी, कील, हार, पैजनी आदि का उपयोग पुरुष समाज करता रहा ।

मौज-मस्ती तथा सभ्यता की राह में नारियों को वेश्यावृत्ति देहव्यापार में झोंकता रहा है । आज शिक्षा के नाम पर स्त्री समाज ने अभूतपूर्व योगदान दिखाया है । प्रत्येक परीक्षा परिणामों में नारियों की सफलता का क्रम सर्वोपरि है, परन्तु कैरियर के नाम पर लगभग शून्य है । आज नारी की दशा अत्यंत शोचनीय है । उसे मनोरंजन व विज्ञापन के नाम पर अश्लील रूप में परोसा जाता है । नारी समाज को एक तरफ़ परदे में लज्जा के नाम पर रखा जाता है तो दूसरी तरफ़ वेश्या बनाकर समाज में नाचने के लिए विवश किया जाता है । आज इतने प्रेशर के बावजूद नारी समाज ने राजनीति के क्षेत्र में विज्ञान के क्षेत्र में, आई०टी० के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में नाम अर्जित किया है परन्तु इसकी आड़ में कई गुना नारियां शोषण और दोहन की शिकार प्रतिदिन हो रही हैं, जो कि नकारात्मक पहलू है ।

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

आज इस्लाम या कोई भी धर्म यदि सामाजिक सुरक्षा की ज़मानत लेता है तो अति प्रशंसनीय है । आपके लेख ने सचमुच नारियों के आत्म-सम्मान और पारिवारिक सुख, शान्ति, मर्यादा के सही मुक़ाम तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया है, इस प्रकार के लेखों से नारियों के जनमानस पर अवश्य घनात्मक प्रभाव पड़ेगा । परिवारों में फूट पड़ने से अवश्य रोक लगेगी ।

डॉ॰ रामगोपाल गुप्त

रौज़ा, मऊनाथ भंजन, मऊ

तिरंगा नहीं चौरंगा

राष्ट्र ध्वज तिरंगा कई अर्थों में अप्रासंगिक एवं असत्य प्रसारक है जिन पर भारत सरकार जनप्रतिनिधियों, जनहित याचिकाओं द्वारा समाज की सेवा करने वाले समाज सेवियों सहित शिक्षा जगत को भी विचार करना चाहिए ।

1. तिरंगे झंडे में नीला अशोक चक्र बाद में जोड़ा गया जिसके कारण अब यह तिरंगा नहीं रहकर चौरंगा हो गया है ।

2. तिरंगे झंडे के रंगों की व्याख्या करते समय सिर्फ़ केसरिया रंग, सफ़ेद रंग व हरे रंगों की ही व्याख्या की जाती है और बीच वाली सफ़ेद पट्टी के चक्र के नीले रंग के बारे में जान-बूझकर कुछ नहीं कहा जाता है जो एक रंग के साथ अन्याय व्यवहार है ।

3. तिरंगे झंडे का नाम बदलकर चौरंगा किया जाना चाहिए ताकि इसे तार्किक आधार प्राप्त हो और यह नित्य असत्य प्रसारक होने से बच सके ।

4. यदि स्वतंत्रता प्राप्ति में तिरंगे के योगदान के मद्देनज़र (झंडा ऊंचा रहे हमारा...विजयी विश्व तिरंगा प्यारा...) तिरंगा नाम बदलने में अड़चन हो तो बीच वाले अशोक चक्र के ऊपरी आधे भाग को केसरिया व नीचे वाले आधे भाग को हरे रंग का करके तिरंगा नाम सार्थक रखा जा सकता है ।

5. तिरंगे के चक्र में 24 आरे हैं अत: राज्यों की संख्या 24 स्थिर करके जितने भी केन्द्र शासित प्रदेश हों उतनी संख्या में चक्र के बाहर छल्ले या रिंग बनाए जा सकते हैं या बीचोबीच में उतने फूल-सितारे आदि प्रतीक बनाए जा सकते हैं । राष्ट्र ध्वज को भारत संघ का प्रतिनिधि प्रतीक एवं प्रासंगिक होना चाहिए ।

जिसे तिरंगा समझते, चौरंगा है प्यारे
तृप्तानंद इस पर सभी, ध्यान दीजिए श्योर ।

स्वामी तृप्तानंद

खातेगांव, देवास, म॰प्र॰

परस्पर प्रीति करें

'कान्ति' जून 2010 का अंक कहीं से मिला व पढ़कर आनन्द हुआ । सारे लेख अच्छे लगे । लेखकों को हमारा हार्दिक धन्यवाद !

मेरी तरफ़ से–''ईश्वर, गॉड, खुदा आदि नामों से जाना जाता है, वह एक ही है । उसका स्वरूप–वह निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापक, सर्व अन्तर्यामी, पवित्र, अजर, अमर, अविनाशी व सृष्टिकर्ता है । वह सभी प्राणियों का जन्मदाता पिता है, उसी की उपासना करने योग्य है ।

वह सारे संसार का पिता है । अपने अनंत सामर्थ्य से अद्‌भुत सृष्टि उपजाया है–सूरज, चांद, पृथ्वी, तारे और नक्षत्र उसी ने बनाए हैं ।

संसार के सारे प्राणी उसके प्रिय पुत्र हैं–हम सबका जन्म-मरण, सुख-दुख, बीमारी-दवा, भूख-प्यास, जाड़ा-गर्मी-बरसात, सोना-जागना, मन-बुद्धि, खान-पान एक है । हम सबका ख़ून लाल है । सभी का ख़ून ए, बी, ओ, ही है, डी॰एन॰ए॰ एक है, बीमारी व दवा एक है ।

फिर हमारे विचार भिन्न क्यों हैं ? धर्म भी एक ही है । धर्म मनुष्य नहीं ईश्वर बनाता है । मनुष्य धर्म नहीं बना सकता । मनुष्य केवल इतिहास बनाता है । फिर मनुष्य आपस में धर्म-मज़हब-रिलीजन के नाम पर एक-दूसरे का दुश्मन क्यों है ?

संसार के श्रेष्ठ पुरुषों, धार्मिक, विद्वानों में परस्पर प्रीति क्यों नहीं है ?

सत्य को सब स्वीकार क्यों नहीं करते ? हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सब आपस में प्रीति करके एक मत ''सच्चाई'' को क्यों स्वीकार नहीं करते ?

भय, आतंक, लूट, खसोट, मार, पीट, हत्या और बलात्कार क्यों करते हैं ? क्या हम प्रेम, प्रीति, सेवा, श्रद्धा, विश्वास, दया और क्षमा नहीं अपना सकते ?

योगेन्द्र राय

134ए/6-घाऊखेड़ा, चकेरी एडी॰, कानपुर-208008

धन्यवाद

'कान्ति' मासिक के जून 2010 अंक के लिए धन्यवाद । मुझे इसकी सामग्री पसन्द आयी ।

मंडल विजय

भुवनेश्वर (उड़ीसा)

पता

'कान्ति' पत्रिका माह मई 2010 में ''अनूठी मिसाल'' शीर्षक से पाठकों के पत्र कॉलम में समाचार छपा, जिस पर कुछ पाठकों ने संबंधित क्षेत्र का पूरा पता चाहा जो इस प्रकार है–श्री दिगम्बर जैन आतशय क्षेत्र

''मम्सी पार्श्वनाथ''

ग्राम मम्सी, ज़िला–इंदौर–म०प्र०

इस बारे में और विस्तृत जानकारी श्री प्रदीप कुमार सिंह कासलीवाल अध्यक्ष नार्थ क्षेत्र कमेटी, इन्दौर अथवा सीधे ही मम्सी पार्श्वनाथ जैन मंदिर को पत्र लिखा जाना चाहिए ।

मम्सी पार्श्वनाथ उज्जैन–भोपाल राजमार्ग पर उज्जैन से 40 किलोमीटर दूर मम्सी ग्राम पर है ।

घेवरचन्द गोदीका

किशनपोल बाज़ार, जयपुर (राज०)

ख़ुशी की बात

'कान्ति' का जून 2010 अंक मिला । दिन–ब–दिन 'कान्ति' के बदलते हुए कलेवर को देखकर और उसमें छपी हुई सामग्री पढ़कर ख़ुशी होती है । हिन्दी माध्यम से इस्लाम के विषय में नयी–नयी जानकारी मिलने से फ़िरक़ापरस्ती में कमी होगी इसकी उम्मीद की जा सकती है । इसी दिशा में अनेक संतों और महात्माओं ने काम किया है ।

भागवत प्रसाद 'नियाज़'

अहमदाबाद

पठनीय

आपके द्वारा भेजी 'कान्ति' मासिक का मई 2010 अंक प्राप्त हुआ । बहुत–बहुत धन्यवाद ! इसमें प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय हैं ।

नयन कुमार राठौर

इंदौर, म०प्र०

जीवन संदेश

सदा सच बोल, पूरा तोल
असली में नक़ली मत घोल
क्यों हैं अंधा, आंखें खोल
बजता सिर पर मौत का ढोल
जीवन हीरा है अनमोल
मिट्टी में इसको मत रोल ।

देवराज आर्य मिश्र

हरिनगर, नयी दिल्ली

ख़रीदा हुआ दूल्हा

विवाह के एक समारोह में
पंडित जी ने वधु से कहा
कृपया आप पति की...
दाहिनी ओर बैठें...
वधु ने तुनक कर कहा...
जहां मैं बैठी हूं
बिल्कुल ठीक बैठी हूं ।
फिर पंडित जी ने समझाते...
हुए कहा : नाहि बालिके...
दाहिनी ओर बैठने से ही
कार्य मंगलमय होगा...
वरना अनर्थ...
जीवन दुखमय होगा
वह फिर गरज कर बोली...
जी...नहीं...
सब आनंदमय होगा...
मैंने अपने पति देव को
ख़रीद लिया है ।
दुल्हा बिकने के लिए...
तैयार था, ढेर सारा
दहेज देकर...
उस बिकाऊ को ख़रीद लिया है
मेरी विधवा माता ने अपना...
सब कुछ बेचबाच कर
उसे मेरे नाम किया है ।

संध्या वीरमानी सुभेदार

हनुमान टेकड़ी, हैदराबाद

मानव जाति के लिए ख़तरा

पर्यावरण असंतुलन मानवजाति के लिए ज़बरदस्त ख़तरा है । तापमान बढ़ रहा है । कार्बन डाईऑक्साइड और ग्रीन हाउस गैस बढ़ रही है । पश्चिमी देशों में कारख़ानों की बड़ी संख्या पर्यावरण को दूषित कर रही हैं । मौसम, हवा, पानी सब कुछ बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं और धरती पर हर प्रकार के जीवन के लिए ख़तरा पैदा हो गया है ।

हमें पर्यावरण को इन ख़तरों से बचाना है । धरती को बचाने के लिए जंगलों की कटाई रोकनी है । पेड़ लगाना

है । औद्योगिकरण को नियंत्रित करना है । हम सबको मिलकर पर्यावरण की सुरक्षा के लिए क़दम बढ़ाना है । राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं को इस काम में जुट जाना चाहिए । राज्य सरकारों को पर्यावरण बचाने के लिए कड़े क़ानून बनाने चाहिए । एटमी शक्तियां ख़ासतौर पर अमेरिका को जिसके पास 5113 एटम बम हैं, चाहिए कि वह इन बमों और एटमी हथियारों को नष्ट कर दे ।

जी॰ हसनैन कैफ़

भंडारा, महाराष्ट्र

दूर हों अपराधों के कारण

केन्द्र शासन द्वारा न्यायालयों में बढ़ते प्रकरणों पर चिंता जतायी जा रही है, ठीक इसी प्रकार उसे बढ़ते अपराधों पर भी गहरी चिंता जतानी चाहिए, जो कि निराकरण हेतु न्यायालयों की शरण में जाते हैं । न्याय के प्रभावी होने तथा अधिकारों के हनन से बदले की भावनाएं, अपराधों के रूप में जन्म लेती हैं । अधिकार प्राप्ति के आन्दोलन हिंसा में बदल जाते हैं । धर्मों पर लांछन से धार्मिक स्वतंत्रता प्रभावित होती है, जिससे साम्प्रदायिक दंगे भड़कते हैं । शराब व्यसन से घरेलू एवं चिरपरिचितों से झगड़े एवं हत्याएं बढ़ रही हैं ।

पश्चिमी सभ्यता को अपनाने के कारण नैतिक पतन हो रहा है, जिससे महिलाएं स्वयं ही यौन अपराधों में व्यभिचार का शिकार बन रही हैं । फ़िल्मों तथा चरित्रहीन सीरियलों से यौन अपराधों को बढ़ावा मिल रहा है । असंतुलित विरासत के बंटवारे भी अपराध का कारण बन रहे हैं । विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने हेतु चोरी एवं भ्रष्टाचार को अपनाया जा रहा है । क़र्ज़ का ब्याज, अवसाद, आत्महत्याओं तथा पारिवारिक विसंगतियों को जन्म दे रहा है । अतएव ऐसे छोटे-बड़े अपराधों के कारणों को दूर करने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाना चाहिए तथा जन्म से मृत्यु तक के नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ।

मलिक

नागपुर

समस्या का समाधान हो कैसे ?

आज सभी धर्म, धर्म की बात करते हैं । धर्म की बात एक भूखा व्यक्ति कैसे करेगा, जिसे रोटी की चिंता हो, ऐसे में यदि उससे धर्म की बात की जाए तो यह क्रूरता है । अहिंसा परमो धर्म सभी धर्म कहते हैं । ऐसे में सबसे पहले यह सोचा जाना चाहिए कि हिंसा होती ही क्यों है और उसके कारणों को समझकर उसे सुलझाना चाहिए तभी ऐसे नारों का सार्थक होना सही है । आज ऐसी ही शैली बन गयी है कि एक समस्या को निबटाने के लिए दूसरी समस्या को खड़ा किया जाता है । अब देखिए सरकार भी ग़रीबी को हटाने का प्रयास 1947 से कर रही है । आज तक ग़रीबों की ग़रीबी तो नहीं हटी लेकिन जो इस कार्यक्रम में संलग्न थे उनकी ग़रीबी ज़रूर हट गयी और अमीरों की संख्या में इज़ाफ़ा दर इज़ाफ़ा होता गया । ग़रीबों को चाहिए था रोज़गार जिससे वे दो जून की रोटी जुटा सकते । ऐसा न करने से तो आतंकवाद पनप रहा है, ऐसा सरकार भी मानने लगी है और ऐसे क्षेत्रों के विकास पर अब ज़ोर देने लगी है । अत: सरकार को सबसे पहले रोटी का जुगाड़ करना चाहिए, उद्योग-धंधों को पनपाना चाहिए ताकि लोग हिंसा की तरफ़ जाएं ही नहीं । तभी धर्म की बात सार्थक सिद्ध हो सकती है ।

धर्म का आधार है नैतिकता, लेकिन इस भौतिकतावादी युग में धर्म और नैतिकता में लोगों ने घालमेल कर लिया है । अब देखिये आप किसी से भी पूछिए–धर्म करते हो ? वह कहेगा–दिन में दो बार मंदिर जाता हूं, पांच बार नमाज़ भी पढ़ता हूं। कहने का मतलब सभी लोग चाहे हिन्दू हों या मुस्लिम सभी धर्म के प्रति जागरूक हैं । लेकिन जीवन में नैतिकता से कोसों दूर हैं । कर्म कांड का नैतिकता से कुछ लेना-देना नहीं ।

अब देखिए बाप ने बेटे से कहा–आटे में मिलावट कर दी ? उसने कहा हां पिजा जी कर दी । सिमेंट में राख मिला दी ? बेटे ने कहा–हां पिता जी मिला दी । मसालों में लकड़ी का बुरादा मिला दिया ? हां पिता जी मिला दिया । आज के युग के लोगों की इस प्रकार की होती है धार्मिकता और नैतिकता । इस प्रकार का आयकरण कभी शुद्ध परिणाम दे ही नहीं सकता । इस तरह के दोहरे आचरण ने ही भारत को कमज़ोर बनाया है ।

आज अनैतिकता सबसे ज़्यादा बड़े आदमियों, राजनेताओं और धर्म गुरुओं में पायी जाती है । इसीलिए भारत के लोग मज़ाक़ में कहा करते हैं सौ में निन्यानवे बेईमान–फिर भी मेरा भारत महान । तो सबसे पहले आप और हम नैतिक बनने की ठानें ताकि एक-एक कर सभी नैतिकता की ओर बढ़ें तभी भारत का कल्याण होगा । **घेवरचन्द गोदीका**

किशनपोल बाज़ार, जयपुर (राज॰)

हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस (रज़ि॰) मदीना मुनव्वरा की रहने वाली थीं । उनका ताल्लुक़ ख़ज़रज के ख़ानदान बनू नज्जार से था । हज़रत ख़ौला (रज़ि॰) का निकाह आप (सल्ल॰) के प्यारे चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) बिन अब्दुल मुत्तलिब से हुआ था । इस तरह हज़रत ख़ौला (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की चची थीं ।

हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) ने नुबूवत के 6 साल बाद इस्लाम क़ुबूल किया था । हज़रत ख़ौला (रज़ि॰) अपने पति के साथ ही इस्लाम के आग़ोश में आयीं और फिर कुछ वर्षों के बाद हिजरत करके मदीना आ गयीं । सन तीन हिजरी में जंगे उहुद हुई जिसमें हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) को शहादत नसीब हुई ।

हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) की शहादत के बाद हज़रत ख़ौला (रज़ि॰) का निकाह हज़रत नोमान बिन अजलान अंसारी (रज़ि॰) से हुआ और आपने काफ़ी लंबी उम्र पायी ।

हज़रत ख़ौला (रज़ि॰) को हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से बड़ी मुहब्बत और अक़ीदत थी । आप (सल्ल॰) को भी उन पर बहुत नाज़ और भरोसा था । इब्न माजा (रह॰) ने हज़रत अबू सईद (रज़ि॰) से उल्लेख किया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने एक बार किसी आराबी (बद्दू) से क़र्ज़ लिया । एक दिन वह आप (सल्ल॰) के पास आया और बड़ी सख़्ती से अपने क़र्ज़ की वापसी की मांग की । आप (सल्ल॰) के प्यारे सहाबियों ने उसको डांटते हुए कहा कि "तू जानता नहीं कि किससे बात कर रहा है ?"

आराबी ने कहा कि, "मैं तो अपना हक़ मांग रहा हूं ।"

इस पर आप (सल्ल॰) ने अपने सहाबियों से कहा : "यह व्यक्ति अपनी मांग में सच्चा है । इसलिए तुम्हें इसका साथ देना चाहिए था ।" फिर आप (सल्ल॰) ने हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस (रज़ि॰) को कहला भेजा कि यदि तुम्हारे पास खजूरें हों तो इस व्यक्ति का क़र्ज़ अदा करने के लिए मुझे उधार दे दो । जब हमारे पास खजूरें आएंगी तो मैं तुम्हारा क़र्ज़ लौटा दूंगा ।

हज़रत ख़ौला (रज़ि॰) को आप (सल्ल॰) का जैसे ही संदेश मिला उन्होंने तुरंत कहा, "मेरे मां-बाप अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) पर क़ुरबान ! आप (सल्ल॰) को जितनी खजूरें दरकार हैं, ख़ुशी-ख़ुशी ले लें ।"

अतएव आप (सल्ल॰) ने आवश्यकतानुसार खजूरें लेकर उस आराबी का क़र्ज़ अदा कर दिया और उसको खाना खिलाया । जब वह आराबी वहां से रुख़्सत हुआ तो दुआएं दे रहा था । मुसनदे बर्रार में स्वयं हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) पर बनी साअदा के एक व्यक्ति की साठ साअ् (5 मन दस सेर यानी 230 किलोग्राम) खजूरें क़र्ज़ थीं । उसने उनकी वापसी की मांग की । आप (सल्ल॰) ने एक अंसारी सहाबी से कहा कि वह आप (सल्ल॰) की ओर से क़र्ज़ अदा कर दे । उन्होंने तुरंत अपनी खजूरें पेश कीं ।

लेकिन उस व्यक्ति ने उसे लेने से इन्कार कर दिया । क्योंकि उसके विचार में वह खजूरें घटिया क्वालीटी की थीं । उसने आप (सल्ल॰) को अच्छी खजूरें क़र्ज़ दी थीं ।

अंसारी ने उससे कहा, "क्या तू आप (सल्ल॰) के पास वापस जा रहा है ?"

उसने कहा, "हां, अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से बढ़कर कौन व्यक्ति हक़पसन्द हो सकता है ।"

आप (सल्ल॰) ने सुना तो आपकी आंखें भींग गयीं और कहा, "साअदी ने सच कहा, मुझ से अधिक न्याय करने का कौन हक़दार है । अल्लाह उस उम्मत को बाक़ी नहीं रखता जिसमें उसका कमज़ोर उसके किसी शक्तिशाली व्यक्ति से अपना हक़ किसी परेशानी के बिना न ले सके ।"

फिर आप (सल्ल॰) ने मुझ से कहा (यानी हज़रत खौला (रज़ि॰) से कहा) : "ऐ ख़ौला ! तुम उसको खाना खिलाओ और उसका क़र्ज़ अदा करो ।" मैंने आप (सल्ल॰) के आदेश का पालन किया । उपरोक्त रिवायतों से पता चलता है कि हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस (रज़ि॰) एक धनवान महिला थीं और आप (सल्ल॰) बिना किसी तकल्लुफ़ के उनसे क़र्ज़ ले लिया करते थे ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप ख़ुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ़्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO. : 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

इंटरव्यू



इस्लाम ही क्यों ?

जमाअत इस्लामी हिन्द के सचिव जनाब मुहम्मद इक़बाल मुल्ला से 'कान्ति' के उपसंपादक मुशर्रफ़ अली की बातचीत के प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं–

■ इस्लाम का आह्वान क्यों ?

जवाब : इस्लाम हर मानव समाज की आवश्यकता है । किसी भी समाज की स्थापना, स्थायित्व और बहुमुखी विकास के लिए समाज के लोगों में शान्ति, सुरक्षा और न्याय ज़रूरी है । समाज के निर्माण के लिए सही दृष्टिकोण और नियमों की ज़रूरत होती है । जहां शान्ति, सुरक्षा और न्याय नहीं होगा, वहां अनिवार्यत: बिगाड़, अत्याचार, शोषण और अराजकता की स्थिति पैदा होगी ।

इस्लाम एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण और जीवन व्यवस्था है । यह मानव निर्मित नहीं है, बल्कि यह मनुष्यों के रचयिता और पालनहार ने अपने बन्दों के लिए तैयार किया है और पैग़म्बरों के ज़रिये लोगों को दिया है । पैग़म्बरों का सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त हुआ । अत: हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आख़िरी पैग़म्बर और आप पर अवतरित की गयी किताब क़ुरआन मजीद आख़िरी किताब है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लामी दृष्टिकोण के आधार पर अरब में व्यक्ति, समाज और व्यवस्था का नव-निर्माण किया और व्यावहारिक रूप प्रदान किया । यह केवल 23 वर्षों में हुआ ।

इस्लाम से पहले अरब का समाज हर तरह के अत्याचार, हिंसा, शोषण और नैतिक अपराधों से भरा हुआ था । चारों ओर लड़ाई और झगड़े का माहौल था । नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक और अन्य पहलुओं से समाज अत्यंत पिछड़ा हुआ था । साथ ही उसमें कुछ विशेषताएं और ख़ूबियां भी थीं । इस्लाम के आह्वान ने एक छोटे से समय में पूरे अरब में एक क्रांति पैदा कर दी, जिसके प्रभाव 15 सदियों बाद भी मौजूद हैं और मौजूद रहेंगे । इस क्रांति को शान्ति और सुरक्षा की क्रांति कहना चाहिए, जो केवल अपनों के लिए ही नहीं बल्कि इस क्रांति के कट्टर विरोधियों को भी शान्ति, सुरक्षा, न्याय और उनके अधिकारों की रक्षा की गारंटी देता है ।

इससे स्पष्ट है कि इस्लाम का ही आह्वान क्यों ज़रूरी है । दुनिया आज तक किसी ऐसी विचारधारा और उसके आधार पर बनने वाली व्यवस्था से अवगत नहीं है, जो सारी मानवता के लिए रहमत हो, जो सभी को शान्ति, सुरक्षा, न्याय और मानवाधिकारों की रक्षा की गारंटी देती हो, जो अपने विरोधियों के लिए भी स्वतंत्रता, सद्भाव, सम्मान एवं प्रतिष्ठा रखता हो ।

इस्लाम का आह्वान इसलिए भी ज़रूरी है कि यह लोगों को ध्यान दिलाता है कि वे अपने स्रष्टा और पालनहार की बन्दगी करें, जो उनके स्वभाव की मांग है । अल्लाह के मार्गदर्शन के अनुसार व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन बिताएं । उससे आगे की बात यह है कि मरने के बाद कर्मों का हिसाब लिया जाएगा । इसको हमेशा याद रखें कि आख़िरत में हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी की कामयाबी मिल जाए ।

इस्लाम की ओर बुलाना इसलिए भी ज़रूरी है कि इसके अलावा जितनी भी विचारधाराएं और जितने भी धर्म पाये जाते हैं वे मनुष्यों के अपने बनाए हुए हैं या ग़लत ढंग से उनमें मिलावट की जा चुकी हैं । जबकि इस्लाम अल्लाह का दिया हुआ दीन (पूर्ण जीवन व्यवस्था) है । अल्लाह ने इन्सानों के लिए इस्लाम को ही पसन्द किया है । इस्लाम को छोड़कर किसी दूसरे धर्म को अगर इन्सान अपनाता है तो वह अल्लाह के यहां स्वीकार्य नहीं होगा । ऐसा करने वाले इस दुनिया में भी नुक़सान उठाएंगे ।

■ दूसरे धर्मों की तुलना में इस्लाम में क्या विशेषताएं

हैं ?

जवाब : धर्मों के सम्मान के साथ–इस्लाम के अलावा दूसरे धर्मों का हाल यह है कि वे सब अपने अस्तित्व के लिए इन्सानों से जुड़े हैं या इन्सानों के बनाये हुए हैं । इस्लाम किसी भी इन्सान से जुड़ा नहीं है । यह ईश्वरीय दीन (धर्म) है पूर्ण जीवन व्यवस्था है । अल्लाह जो सभी इन्सानों का रचयिता है, उसका दिया हुआ है । इस्लाम का एक अर्थ शान्ति है, इस्लाम का दूसरा अर्थ पूर्ण समर्पण है और दूसरे शब्दों में सम्पूर्ण आज्ञापालन और बन्दगी है और यह अल्लाह के प्रति होनी चाहिए । इस्लाम कोई क़ौमी, नस्ली, भाषाई दीन (धर्म) नहीं है, बल्कि सार्वभौम और विश्वव्यापी इन्सानी दीन है ।

इस्लाम में सब कुछ स्पष्ट है, कोई संदेह और आशंका नहीं । इसकी शिक्षा एवं आदेशों में कोई भ्रांति नहीं । इसमें किसी तरह की काल्पनिक कहानियां या घटनाएं नहीं हैं । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का जन्म, बचपन, जवानी, नुबूवत मिलने के बाद, आप (सल्ल॰) की लायी हुई क्रान्ति, आपकी मृत्यु हर चीज़ पूरी रोशनी में है । धारणाएं साफ़ और स्पष्ट है । इबादत, नैतिकता, समाज, मामलात, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति, राजनीति सारांश यह कि जीवन के हरेक क्षेत्र में नियम एवं आदेश, शिक्षाएं एवं मूल्य मौजूद हैं । अर्थात व्यक्तित्व के निर्माण, परिवार, समाज और व्यवस्था के निर्माण एवं विकास के लिए पूरा-पूरा मार्गदर्शन मौजूद है । सबसे बढ़कर व्यावहारिक नमूना हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के द्वारा लायी गयी क्रांति का मौजूद है । यह विशेषता किसी भी दूसरे धर्म या विचारधारा को प्राप्त नहीं है । दूसरे धर्मों को व्यावहारिक रूप में लागू नहीं किया जा सकता है ।

इस्लाम में सब कुछ स्पष्ट है, कोई संदेह और आशंका नहीं । इसकी शिक्षा एवं आदेशों में कोई भ्रांति नहीं । इसमें किसी तरह की काल्पनिक कहानियां या घटनाएं नहीं हैं । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का जन्म, बचपन, जवानी, नुबूवत मिलने के बाद, आप (सल्ल॰) की लायी हुई क्रान्ति, आपकी मृत्यु हर चीज़ पूरी रोशनी में है । धारणाएं साफ़ और स्पष्ट है । इबादत, नैतिकता, समाज, मामलात, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति, राजनीति सारांश यह कि जीवन के हरेक क्षेत्र में नियम एवं आदेश, शिक्षाएं एवं मूल्य मौजूद हैं । अर्थात व्यक्तित्व के निर्माण, परिवार, समाज और व्यवस्था के निर्माण एवं विकास के लिए पूरा-पूरा मार्गदर्शन मौजूद है ।

इस्लाम लोगों के दिन प्रति दिन के जीवन और गतिविधियों को अल्लाह तआला के मार्गदर्शन से जोड़ता है । इसके नतीजे में लोगों का संबंध अल्लाह से जुड़ता है । इस्लाम कुछ विशेष समयों और विशेष कार्यों को ही इबादत नहीं ठहराता है, बल्कि इन्सानों की पूरी ज़िन्दगी को इबादत बताता है । इस्लाम में दीन और दुनिया अलग-अलग ख़ानों में विभाजित नहीं है, बल्कि पूरी ज़िन्दगी में अल्लाह का पूरा आज्ञापालन और पैरवी की मांग है । अल्लाह के आज्ञापालन का आदर्श नमूना अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का जीवन है । यही नमूना अनुकरणीय है । कुरआन में कहा गया है–"ऐ ईमान वालो, पूरे-पूरे इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ।"

इस्लाम के अनुसार मज़हब व्यक्ति का निजी मामला नहीं है । इस्लाम की मान्यता यह नहीं है कि "जो खुदा का है वह खुदा को और जो क़ैसर (राजा) का है वह क़ैसर को दो ।" यहां हर चीज़ खुदा की है । इस्लाम इस विचार को नकारता है की मज़हब पर चलने से आख़िरत में तो कामयाबी मिलती है, लेकिन उसकी दुनिया नहीं बन सकती । इस्लाम बताता है कि अल्लाह की मर्ज़ी पर चलकर और उसके आदेशानुसार जीवन गुज़ारने से निश्चित रूप से शान्ति, खुशहाली और विकास प्राप्त होगा ।

इस्लाम सभी दूसरे धर्मों, धर्म से जुड़े व्यक्तित्व, धार्मिक स्थलों और धार्मिक पुस्तकों के आदर-सम्मान की शिक्षा देता है । आपस में भाईचारा, सद्भाव, प्रेम और दया का आदेश देता है । समाज में फूट, बिगाड़, अशान्ति, अत्याचार, शोषण, हिंसा आदि के विरुद्ध कठोर आदेश देता है । धार्मिक स्वतंत्रता सबको देते हुए इस्लाम मज़हब के

मामले में ज़ोर-ज़बरदस्ती से छुटकारा दिलाता है ।

मानवाधिकार के बारे में इस्लाम का रिकार्ड बहुत ही अच्छा है । इस्लाम ने प्रत्येक मनुष्य (स्त्री-पुरुष) को 1450 वर्ष पूर्व व्यावहारिक रूप में मौलिक अधिकार प्रदान किये जबकि यू॰एन॰ओ॰ ने 1948 ई॰ में मानवाधिकार का चार्टर पास किया है ।

इस्लाम की विशेषता यह है कि आज यह दुनिया ज्ञान, सभ्यता और विकास के नाम पर जिन मूल्यों की चर्चा करती है वे इस्लाम ने मानव को 1450 वर्ष पूर्व दिये हैं । लोकतांत्रिक मूल्य, धार्मिक उदारता, मानव समानता, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, वैज्ञानिक अनुसंधान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता का सम्मान इत्यादि । इस्लाम की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसका अल्लाह के एक होने के बारे में अत्यंत संवेदनशील होना है । दुनिया के सभी धर्म एकेश्वर-वाद को खो चुके हैं, केवल इस्लाम ही है, जिसमें अल्लाह के एक होने की मान्यता उसकी सभी मांगों और आनबान के साथ बाक़ी हैं ।

इस्लाम की विशेषता यह है कि आज यह दुनिया ज्ञान, सभ्यता और विकास के नाम पर जिन मूल्यों की चर्चा करती है वे इस्लाम ने मानव को 1450 वर्ष पूर्व दिये हैं । लोकतांत्रिक मूल्य, धार्मिक उदारता, मानव समानता, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, वैज्ञानिक अनुसंधान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता का सम्मान इत्यादि । इस्लाम की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसका अल्लाह के एक होने के बारे में अत्यंत संवेदनशील होना है । दुनिया के सभी धर्म एकेश्वरवाद को खो चुके हैं, केवल इस्लाम ही है, जिसमें अल्लाह के एक होने की मान्यता उसकी सभी मांगों और आनबान के साथ बाक़ी हैं ।

अल्लाह की सत्ता, गुणों, अधिकारों आदि में कोई साझीदार नहीं । इस्लाम का कलिमा-ए शहादत बताता है कि अल्लाह ही वास्तविक उपास्य है और मुहम्मद (सल्ल॰) उसके बन्दे और रसूल हैं । यहां मुहम्मद (सल्ल॰) जैसे महान व्यक्ति की पहली हैसियत बन्दा होने की बतायी गयी है, फिर रसूल होने की ।

इस्लाम की एक विशेषता यह है कि कई अस्वाभाविक बुराइयों और ख़राबियों को हमेशा के लिए निषिद्ध ठहराया । संसार त्याग, मां के गर्भ में बच्चियों की हत्या, पादरी बन जाना, शराब, बलात्कार, कुमार्गमन, अश्लीलता आदि ।

इस्लाम की विशेषता यह भी है कि उसने ऊंच-नीच, छुआछूत और मानव असमानता को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया । इस्लाम सारे इन्सानों को भाई-भाई बताकर विश्व बंधुत्व क़ायम करता है ।

■ विभिन्न वर्गों के लिए इस्लाम में क्या आकर्षण है ? विशेष रूप से ग़रीबों, अमीरों, महिलाओं और नवजवानों के लिए इस्लाम में क्या आकर्षण है ?

जवाब : इस्लाम में समाज के सभी वर्गों के लिए आकर्षण है । इस्लाम किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं आया, बल्कि यह सम्पूर्ण मानवता के लिए आया । यह प्रत्येक वर्ग को एक ही दृष्टि से देखता है । यह वर्ग-संघर्ष पैदा होने नहीं देता । यह एक शान्ति, न्याय और दया की व्यवस्था है । इसमें हर वर्ग के लिए रहमत ही रहमत है । इस्लाम पर प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वर्ग अपने ज्ञान और समझ-बूझ के अनुसार चल सकता है और उसे उसी का मुकल्लफ़ भी ठहराया गया है । इस्लाम एक व्यावहारिक दीन है । यह दिन प्रतिदिन की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है, एक अनपढ़, देहाती और ग़रीब बिना किसी कठिनाई के इस पर चल सकता है वहीं एक उच्च शिक्षा प्राप्त डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, उद्योगपति, राजनैतिक नेता भी अपनी सारी व्यस्तता के साथ इस पर चल सकता है । यहां ग़रीब और अमीर, सेवक और स्वामी, शहरी और देहाती के बीच नफ़रत और लड़ाई की कोई दीवार नहीं है । सभी इस दीन (इस्लाम धर्म) पर चलते हुए एक आदर्श समाज का निर्माण करते हैं । महिलाएं भी आसानी से इस दीन पर चल सकती हैं । इस्लाम ने उनके लिए समाज के निर्माण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्धारित की है ।

इस्लाम में बिरादरीवाद, जातिवाद और पेशों के आधार पर मानवता का विभाजन नहीं है कि वर्ग-संघर्ष पैदा हो सके

और धरती पर बिगाड़ का वातावरण बन सके ।

ग़रीबों के लिए इत्मीनान और संतोष की बात यह है कि धन और जीवन के दूसरे संसाधन मूल रूप से अल्लाह के हाथ में है । वह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ (आजीविका) देता है और जिसे चाहता है, तंगी में रखता है । जायज़ तरीक़ों से मेहनत करके रोज़ी कमाने के प्रयासों के बावजूद अगर तंगी की हालत है तो इसका यह मतलब नहीं कि अल्लाह नाराज़ है । मेहनत और प्रयास का सिलसिला जारी रहना चाहिए और सब्र एवं साहस से काम लेकर ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए । दुनिया की छोटी-सी ज़िन्दगी के बाद आख़िरत (परलोक) की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी में ज़रूर खुशियां मिलेंगी । ग़रीबों में यह ऊंचा, पवित्र और सकारात्मक विचार दुनिया का कोई दूसरा, मज़हब, मत या विचारधारा नहीं पैदा कर सकती । आधुनिक विचारधाराओं एवं मतों के कारण ग़रीबों और अमीरों के बीच जो दूरी बढ़ी है उससे सम्पन्न और विपन्न के दो वर्ग पैदा हो गये हैं । ग़रीबी कोई ऐब या अपराध नहीं है और न ही गर्व करने वाली चीज़ है, इसे दूर करने की कोशिश करते रहना चाहिए । इस्लाम ग़रीबों में हीन भावना नहीं पैदा होने देता है । सब्र, शुक्र एवं संतोष से तक़वा (परहेज़गारी) पैदा होता है ।

इस्लाम ग़रीबों के प्रति अमीरों पर जो हक़ हैं उन्हें अदा करने की ओर ध्यान दिलाता है । ज़कात, सदक़े, दान और वक़्फ़ आदि इसके विभिन्न रूप हैं । इस्लाम यह क्रान्तिकारी दृष्टिकोण देता है कि अमीरों के माल में वंचितों का अधिकार है जो उन्हें मिलना ही चाहिए ।

अमीर लोगों के लिए इस्लाम में आकर्षण यह है कि इस्लाम उन्हें जायज़ और हलाल तरीक़ों से दौलत कमाने से नहीं रोकता । संन्यासी और भिक्षु बनने की शिक्षा नहीं देता । उनकी हलाल आमदनी के लिए की जाने वाली भाग-दौड़ को बुरा नहीं बताता, बल्कि इबादत ठहराता है । अगर यह भाग-दौड़ सच्चाई और ईमानदारी के साथ की जाए तो आख़िरत (परलोक) में अच्छे बदले का वादा करता है । इस्लाम मालदारों को आह्वान करता है कि माल को अल्लाह की मिल्कियत और उसकी अमानत समझें । इसमें ग़रीबों, मजबूरों और अन्य ज़रूरतमन्दों का हक़ स्वीकार करें । ज़कात, सदक़े और दान के माध्यम से बन्दों की ख़िदमत करें । फ़िज़ूलख़र्ची और कृपणता से बचकर मध्यमार्ग की शिक्षा दी गयी है । आख़िरत (परलोक) की ज़िन्दगी में अल्लाह उन सारी नेमतों के बारे में सवाल करेगा जो दुनिया में किसी के हिस्से में आती हैं ।

सूदी लेन-देन, धोखा, झूठ और नाजायज़ तरीक़ों से बचकर इस्लाम में मालदारों के लिए अपनी दौलत बढ़ाने की पूरी गुंजाइश है । हराम रोज़ी से बचने की चेतावनी है, जो शरीर हराम पर पलता है उस पर जन्नत हराम है और उसका ठिकाना जहन्नम की आग है ।

महिलाओं के लिए इस्लाम में जितना आकर्षण है वह कहीं और नहीं है । महिला विभिन्न विचारधाराओं और मतों के अन्तर्गत अत्याचार और शोषण का शिकार हुई हैं । पुरुष और महिला के बीच विभेद रखा गया है । लेकिन इस्लाम ने औरत का दर्जा ऊंचा किया । महिला और पुरुष के बीच भेदभाव को समाप्त किया । महिलाओं के वे अधिकार लागभग 1450 वर्ष पूर्व उसे दिये, जिन्हें प्राप्त करने के लिए उनको आज भी कठोर परिश्रम करना पड़ रहा है, जो इस्लाम में नहीं है ।

इस्लाम ने महिला को महिला रखते हुए समाज में उसकी भूमिका निर्धारित की, उसके नारीत्व को नहीं छीना । उसे मां, बेटी, पत्नी के रूप में बहुत ऊंचा स्थान दिया । मां के पांव के नीचे जन्नत होने का शुभ समाचार दिया । पत्नी को दुनिया की पवित्र नेमतों में सबसे अच्छी नेमत बताया । महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया । विरासत में लड़की का हिस्सा निर्धारित किया । इस्लाम ने स्पष्ट किया कि लड़की की पैदाइश को रोकना या उसकी हत्या करना अपराध है । महिला को भी जीने का अधिकार है । वह अपने नाम प्रापर्टी बना सकती है । वह व्यापार या व्यावसायिक गतिविधियों में भाग ले सकती है । वह पुरुष के अधीन नहीं है, बल्कि उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व है । उसकी अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी है । औरत की गोद नयी नस्ल की पहली पाठशाला है । महिला की प्रकृति अगर बिगड़ नहीं गयी हो तो इस्लाम के हिजाब और घर में महिला के लिए बड़ा आकर्षण है, क्योंकि ये दोनों पाबन्दियां महिला को कमतर समझकर नहीं, बल्कि ये उन्हें अनमोल समझकर उसकी सुरक्षा के लिए है । स्वाभाविक रूप से महिला इनको पसन्द करती है । महिला की बेपरदगी और मर्दों के साथ उसका बैठना उसके स्वाभाविक शर्म के ख़िलाफ़ है । उसकी मर्यादा और सम्मान के लिए ख़तरा है ।

क़ुरआन ज्योति का शेषांश

(पृष्ठ 5 का शेष)

2. सत्य के आह्वान की कामयाबी का गुर यह है कि आदमी फ़लसफ़ा बघारने और बारीकियों में पड़ने के बजाय लोगों को मारूफ़ अर्थात उन सीधी और साफ़ भलाइयों की तलक़ीन (नसीहत) करे, जिन्हें आम तौर से सारे ही इन्सान भला जानते हैं या जिनकी भलाई को समझने के लिए सामान्य बोध (Common Sense) पर्याप्त होता है जो हर इन्सान को प्राप्त है । इसी प्रकार सत्य-आवाहक की अपील सामान्य व विशिष्ट सभी लोगों को प्रभावित करता है और हर सुनने वाले के कान से दिल तक पहुंचने की राह अब निकाल लेता है । ऐसी भली पुकार के ख़िलाफ़ जो लोग वबाल खड़ा करते हैं, वे स्वयं अपनी नाकामी और इस आह्वान की कामयाबी का सामान जुटाते हैं, क्योंकि आम इन्सान चाहे वे कितने ही पक्षपात में ग्रस्त हों, जब यह देखते हैं कि एक ओर एक सज्जन और उच्च अख़्लाक़ वाला इन्सान है जो सीधी-सीधी भलाइयों की दावत दे रहा है और दूसरी ओर बहुत-से लोग उसके विरोध में हर प्रकार अख़्लाक़ व इन्सानियत से गिरी हुई तदबीरें कर रहे हैं, तो धीरे-धीरे उनके दिल स्वत: सत्य-विरोधियों से फिरते और सत्य-आवाहक की ओर आकर्षित होते चले जाते हैं, यहां तक कि अंतत: मुक़ाबले के मैदान में केवल वे लोग रह जाते हैं जिनके निजी हित मिथ्या व्यवस्था की स्थापना ही से जुड़े हों या फिर जिनके दिलों में पूर्वजों के अंधानुकरण और अज्ञानकाल के पक्षपातों ने किसी रोशनी को स्वीकार करने की योग्यता शेष ही नहीं छोड़ी हो । यही वह तत्वदर्शिता थी जिसकी बदौलत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरब में कामयाबी हासिल हुई और फिर आपके बाद थोड़ी ही अवधि में इस्लाम का सैलाब निकटवर्ती देशों पर इस प्रकार फैल गया कि कहीं सौ प्रतिशत और कहीं 80 और 90 प्रतिशत निवासी मुसलमान हो गये ।

3. इस आह्वान के काम में जहां यह बात ज़रूरी है कि भलाई के इच्छुकों को भलाई की तलक़ीन (नसीहत) की जाए, वहां यह बात भी उतनी ही ज़रूरी है कि जाहिलों से न उलझा जाए, चाहे वे उलझने और उलझाने की कितनी ही कोशिश करें । आवाहक को इस मामले में अत्यन्त सावधान होना चाहिए कि उसका संबोधन केवल उन लोगों से रहे जो बुद्धिमत्ता के साथ बात को समझने के लिए तैयार हों । और जब कोई व्यक्ति अज्ञानता पर उतर आये और कठहुज्जती, झगड़ालूपन और कुतर्कता शुरू कर दे तो आवाहक को उसका प्रतिद्वंद्वी बनने से इन्कार कर देना चाहिए, इसलिए कि इस झगड़े में उलझने से कुछ प्राप्त होने वाला नहीं और नुक़सान यह है कि आवाहक की जिस शक्ति को दावत (इस्लामी संदेश) के प्रचार और लोगों के सुधार में लगना चाहिए वह इस फ़िज़ूल काम में नष्ट हो जाती है ।

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

हमारी हिन्दी पुस्तकें

• औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
• औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
• आख़िरत के अज़ाब से ख़ानदान को बचाईए	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
• आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	5.00
• आदाबे ज़िन्दगी	मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही	110.00
• आतंकवाद और इस्लाम	डॉ० अब्दुल मुग़नी	12.00
• आतंकवाद और आक्रमक नीति	प्रो० खुर्शीद अहमद	10.00
• आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	40.00
• अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	60.00
• अहम हिदायतें	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
• अच्छे लोग	इरफान ख़लीली	25.00
• अनूदित कुरआन मजीद	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	400.00
• अन्देशों के गिरफ़्तार	माइल ख़ैराबादी	15.00
• अन्धा इन्साफ़ (बच्चों के लिए)	मतीन तारिक़ बाग़पती	05.00
• अनमोल नसीहतें	अब्दुल बदीअ सक़र	35.00
• अपनी इस्लाह आप	नईम सिद्दीक़ी	05.00
• अमानत का बोझ	माइल ख़ैराबादी	10.00
• अल-असमाउलहुस्ना (काव्य)	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	05.00
• अल्लाह का दीन नौजवानों से क्या चाहता है	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	05.00
• अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	08.00
• अल्लाह ही के हो कर रहो	खुर्रम मुराद	08.00
• इक़बाल की कविताएँ (बच्चों के लिए)	सनाउल्लाह सुमन	14.00
• ईदुल-फ़ित्र किसके लिए?	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	04.00
• इंसान और उसकी समस्याएं	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	15.00
• इंसान अपने आप को पहचान	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां	06.00
• इंसान की आर्थिक समस्या और उसका इस्लामी हल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

पवित्र नगर मदीना

■ विद्या प्रकाश

इस्लाम धर्मावलंबियों की दृष्टि में तीर्थ स्थानों में दूसरी पवित्रतम स्थान मदीना का है तथा यह पैग़म्बर के नगर के रूप में सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है । यह पश्चिमी सऊदी अरब के हिजाज़ क्षेत्र में स्थित है तथा शताब्दियों से विश्ववासियों को इस्लाम धर्म की महानता, श्रेष्ठता, इन्सानियत और इस्लामी जीवन दर्शन की उत्कृष्टता का संदेश प्रदान करता चला आ रहा है । जब सरवरे कायनात पैग़म्बर मुहम्मद साहब (स०अ०व०) द्वारा बुरी धार्मिक परम्पराओं तथा पाखंडपूर्ण सामाजिक मान्यताओं का विरोध करने पर तत्कालीन शासकों द्वारा उनको मक्का छोड़ने पर विवश किया गया तब मोहसिने इन्सानियत पैग़म्बर (स०अ०व०) द्वारा इसी मदीना शहर को अपना ठिकाना बनाया गया ।

यहीं पर आपने इस्लामी शिक्षाओं पर आधारित सुसमाज का निर्माण किया । मदीना का पूरा नाम है मदीना रसूलुल्लाह जिसका अभिप्राय है ईश्वर दूत की नगरी । इसका छोटा रूप है अल-मदीना जिसका शाब्दिक अर्थ है नगर । इस्लाम धर्मानुयायी हज़रत पैग़म्बर मुहम्मद के नाम के साथ हमेशा 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' जोड़ते हैं । मदीना शांति और सुरक्षा की नगरी है।

मदीना में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (स०अ०व०) ने आश्रय लेकर धर्म तथा समाज में प्रचलित नाना प्रकार के दोषों तथा अन्याय के ख़िलाफ़ अल्लाह के पवित्र सन्देशों तथा उपदेशों का भली-भांति प्रचार-प्रसार किया । इस प्रकार यहीं से जिहाद या धर्म युद्ध की शुरुआत हुई । इस्लाम धर्मावलंबियों का अगाध लगाव इस स्थान से भावनात्मक स्तर पर इसलिए भी है कि इसी स्थान पर पैग़म्बर (स०अ०व०) ने अपने जीवन का अन्तिम काल बिताया तथा यहीं पर उनका देहावसान हुआ तथा यहीं पर आपकी पवित्र समाधि है ।

हज़रत मुहम्मद (स०अ०व०) ने मानवीय मूल्यों तथा आचरण की पवित्रता के महत्व तथा आवश्यकता से इन्सानियत को अवगत कराया । आपका सन्देश था कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वजीवन में ईश्वर के प्रति समर्पण भाव रखकर बुराइयों से बचने का प्रयास करना चाहिए तथा इन्सानियत और अच्छाई की राह को ही अपनाना चाहिए । मदीना में अन-नबवी नाम से प्रसिद्ध मस्जिद स्थित है, जिसका निर्माण पैग़म्बर मुहम्मद (स०अ०व०) ने करवाया था और जो आपके घर के बिल्कुल पास है, जहां उनको दफ़नाया गया था । प्रथम मस्जिद जो मस्जिद अल-क़ुबा के नाम से विश्व प्रसिद्ध है, मदीना में स्थित है ।

HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Implipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G)

वोटों की खेती करें, नोटों की दे खाद

कृति	: **पारदर्शी सतसई**
कृतिकार	: श्री ॐ पारदर्शी (ॐ प्रकाश डांगी 'पारदर्शी)
संपर्क	: पारदर्शी साधना केन्द्र, 261, उत्तरी आयड़, उदयपुर-313001
मूल्य	: 100/- रुपये (एक सौ रुपये मात्र), पृष्ठ-128
प्रकाशन	: सन् 2007
प्रकाशक	: कुलदीप प्रकाशन, उदयपुर (राजस्थान)

कवित्त सृजन में कीर्तिमान निर्माता ॐ प्रकाश डांगी 'पारदर्शी' जी ने अपने साहित्य सृजन के क्रम में 807 दोहों का एक संग्रह 'पारदर्शी सतसई' शीर्षक से प्रकाशित कर कविता की प्राचीन विधा 'दोहा' को पुनर्स्थापित किया है । 'परिमार्जित' हिन्दी में लिखे ये दोहे रुचिकर हैं एवं प्राय: हर दोहे में 'पारदर्शी', जो कि उनका उपनाम है, सम्मिलित है । यह एक अनोखा काव्य कौशल है जो प्राय: प्राचीन कवियों जैसे कबीर, रहीम आदि की परिपार्टी से जुड़ाव रखता है । मनुष्य जिस परिधि में जीवित रहता है उसी में से उसको काव्य-रचना की प्रेरणा व शीर्षक दोनों उपलब्ध होते हैं । ऐसा ही कुछ श्री ॐ पारदर्शी जी की रचनाओं से भी प्रमाणित होता है ।

सर्वप्रथम नेताओं पर कटाक्ष करते हुए पारदर्शी जी लिखते हैं–

"वोटों की खेती करें, नोटों की दे खाद ।
प्राप्त 'पारदर्शी करें, सत्ता फ़सल प्रसाद ।।"

आज साहित्य जगत में कवि और कविता का जो रूप है उसका 'पारदर्शी' जी कुछ इस प्रकार अपने दोहे में वर्णन करते हैं–

"ठेके पर होने लगे, कवि सम्मेलन आज ।
मौन 'पारदर्शी' रहें, जोकर हैं कविराज ।।"

दोहे इतने सरल हैं कि पाठक को कहीं कोई असुविधा नहीं होगी ।

पुस्तक सर्वश्री श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी, कुन्दनमयजी डांगी, सूरज चन्दजी डांगी, माधव लालजी डांगी, श्रीमती पान बाई जी डांगी को यह कृति क्रमश: अर्पण, समर्पण व समर्पित है । इसके अतिरिक्त 130 विद्वानों के मत-अभिमत इस पुस्तक में मुद्रित हैं जो कि एक उपलब्धि है ।

मूल्य उचित है । 'पारदर्शी' जी ने अपनी बात मात्र एक दोहे से इस प्रकार रखी है :

"दो पंक्ति में कहता हूं, शतक पंक्ति का सार ।
भेंट 'पारदर्शी' करें, दोहों का उपहार ।।"

निश्चय ही यह दोहा-संग्रह अत्यंत रोचक व शिक्षाप्रद है । इसके लिए 'पारदर्शी' जी बधाई के पात्र हैं ।

पार्थो सेन
सी-3087, राजाजीपुरम, लखनऊ-17
मो॰ : 93357-31367



एस॰सी॰/एस॰टी॰ एक्ट और दहेज उत्पीड़न एक्ट में संशोधन की आवश्यकता

■ पुष्पा श्रीवास्तव
(एडवोकेट)

किसी भी समाज में प्रचलित नियमोपनियमों तथा विधि व्यवस्था का उद्देश्य अपराधोन्मूलन और शान्ति की स्थापना होता है और प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रूप से इस नियम क़ानून का उल्लंघन कर जुल्मो-ज़्यादती और नाइन्साफ़ी को बढ़ावा तथा डकैती, पाकेटमारी, इस्मतदरी, अग़वा, छिनैती वग़ैरह मुख़्तलिफ़ शक्ल में आपराधिक कृत्यों को अंजाम देने वालों के ख़िलाफ़ विधि की विभिन्न धाराओं-उपधाराओं के तहत कारावास, अर्थदंड और मृत्यु दंड के रूप में दंडित करने का प्रावधान है ।

नियम-क़ानून ऐसे हों जो दोषी को दंडित करने तथा पीड़ित पक्षकार को न्याय प्रदान करने में मददगार तथा संतुलित हों । मगर जब क़ानून अपने मूल वास्तविक उद्देश्य से भटककर दोषी जन की स्वार्थपूर्ति तथा निर्दोष व्यक्तियों को परेशान करने का माध्यम बन जाए तो उसमें आवश्यकतानुसार यथोचित परिवर्तन-संशोधन की ज़रूरत महसूस की जाने लगती है । देश में शताब्दियों से आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्तर पर पिछड़े तथा सामंती प्रवृत्ति के दबंगों द्वारा शोषण-उत्पीड़न के शिकार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों तथा महिलाओं के हक़ की रक्षा और सुरक्षा के मक़सद से बनाए गये नियमों का आज दुरुपयोग ही ज़्यादा हो रहा है, जिनमें आज बदलाव की आवश्यकता है ।

आज हमारे समाज में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न से बचाव और उनके अधिकारों की हिफ़ाज़त के लिए एस॰सी॰/एस॰टी॰ एक्ट लागू है जिसके अंतर्गत किसी सवर्ण व्यक्ति द्वारा अपमानजनक व्यवहार, अशोभनीय कथन तथा किसी प्रकार का उत्पीड़न किये जाने की स्थिति में पीड़ित पक्षकार संबंधित थाना/कोतवाली में उसके ख़िलाफ़ एस॰सी॰/एस॰टी॰ एक्ट के अंतर्गत प्राथमिकी अंकित कराता है तथा तहरीर के आधार पर अंकित प्राथमिकी पर पुलिस कार्रवाई करती है । इस एक्ट के तहत अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लोगों द्वारा पुलिस विभाग में दर्ज कराये जाने वाले अनेक मामले तथ्य के प्रतिकूल तथा ग़लत होते हैं ।

ऐसे मामलों में भले दोष अनुसूचित जाति के व्यक्ति का हो और सवर्ण व्यक्ति बेक़सूर हो, मगर चूंकि प्राथमिकी दर्ज कर दी गयी है इसलिए पुलिस सवर्ण व्यक्ति के ख़िलाफ़ क़ानूनी दफ़ात के तहत कार्रवाई करने को बाध्य है । इस स्थिति में पुलिस बेगुनाह होते हुए भी सवर्ण व्यक्ति को एक बार तो गिरफ़्तार कर न्यायालय के कटघरे में पेश कर ही देती है । सही-ग़लत का फ़ैसला होने में सालों का वक़्त गुज़र जाता है और तब तक निर्दोष व्यक्ति कारागार के सींकचों में सड़ता, अपनी क़िस्मत को कोसता रहता है ।

प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के परिचित एक पंडितजी हैं । उन्होंने चार साल पूर्व अनुसूचित जाति के एक व्यक्ति को ज़रूरत पर पांच सौ रुपये बतौर उधार दे दिया । जब वादे पर उस व्यक्ति ने रुपया नहीं लौटाया तो पंडितजी ने तक़ाज़ा शुरू किया । बार-बार कहने के बावजूद व्यक्ति रुपये लौटाने में बहानाबाज़ी, टालमटोली और हीलाहवाली करता रहा और एक दिन पंडितजी ने गुस्से में उसे फटकार क्या दिया, वह व्यक्ति चुपचाप उठा और थाने में जाकर उनके ख़िलाफ़ एस॰सी॰/एस॰टी॰ एक्ट में प्राथमिकी अंकित करा आया । पुलिस हरकत में आयी और पंडितजी को पकड़कर ले गयी । मुक़दमेबाज़ी और कोर्ट-कचहरी के चक्कर में हज़ारों रुपये फूंकने के बाद किसी प्रकार उनकी जान बची । इसके पश्चात उन्होंने आइंदा फिर किसी अनुसूचित जाति के व्यक्ति को ज़रूरत व मुसीबत पर आर्थिक, अनार्थिक सहयोग न करने की ठान ली ।

समाज में हमें आये दिन ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं, जिसमें कोई दलित व्यक्ति तथ्यों को छिपाकर सवर्ण को इस एक्ट के तहत ग़लत तरीक़े से फंसा देता है ।

इसी प्रकार हमारे समाज में विवाहिता महिलाओं की सुरक्षा और दहेज विरोध से संबंधित दहेज उत्पीड़न एक्ट 494 और 3/4 डी॰पी॰ एक्ट लागू है । हालांकि इन दोनों एक्टों के निर्माण का उद्देश्य तो अच्छा है मगर इनका भी एस॰सी॰/एस॰टी॰ एक्ट की ही भांति कम दुरुपयोग नहीं हो रहा है । यह सत्य है कि कुछ वर पक्ष वाले ऐसे हैं जो दहेज लोभी, कुसंस्कारी और ग़लत होते हैं और लड़के के विवाहोपरांत दुधारू गाय की तरह कन्या पक्ष वालों का अधिकाधिक अर्थ दोहन करने से बाज़ नहीं आते । पुत्र के हाथ पीले होने और दहेज में मोटर साइकिल, रंगीन टी॰वी॰, रेफ्रिजरेटर, हज़ारों रुपये मूल्य के सोने-चांदी के आभूषण नक़दी वग़ैरह लेने के बावजूद उनका पेट नहीं भरता ।

शादी के बाद इससे भी ज़्यादा दहेज की फ़रमाइश पूरी न होने पर वे नवविवाहिता का उत्पीड़न शुरू कर देते हैं जिसके फलस्वरूप क्षुब्ध नवविवाहि दुल्हन विषपान कर खुदकुशी कर लेती है अथवा उसकी हत्या कर दी जाती है । लेकिन इस प्रकार के मामलों में सभी लड़के पक्ष वाले ऐसे नहीं होते । तस्वीर का दूसरा पहलू भी है । कुछ लड़कियों का स्वभाव सहिष्णु, समायोजनशील और विनम्र नहीं होता । वे गृह कार्य कुशल और सुसंस्कारी नहीं होतीं । विवाह के उपरांत यदि किसी मामूली-सी बात को लेकर सास ने थोड़ी सी फटकार लगा दी अथवा सास, ससुर, पति, देवर, जेठ या ननद से थोड़ा वाद-विवाद हो गया तो वे मायके पक्ष वालों को सच्चाई से गुमराह कर दिग्भ्रमित करने लगती हैं और तिल का ताड़ बनाकर, बाल की खाल निकालकर थाना/कोतवाली में दहेज उत्पीड़न एक्ट व डी॰पी॰ एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज करवा देती हैं । यदि वे चाहें तो ससुराल में होने वाले छोटे-मोटे विवादों और समस्याओं का समझदारी, अक़लमंदी व सहिष्णुता से समाधान कर अपना जीवन नरक होने से बचा सकती हैं ।

प्रस्तुत पंक्तियों की लेखिका का एक परिचित परिवार है । लगभग आठ-नौ वर्ष इस परिवार में एक नवविवाहिता बहू ने सल्फास की गोली खाकर आत्महत्या कर ली । इस कांड में दोष खुद बहू का था । उसका शौहर मुंबई में एक प्राइवेट फर्म में अल्पवेतनभोगी कर्मचारी था और वह साल-डेढ़ साल में एक बार महीने बीस दिन की छुट्टी लेकर घर आया-जाया करता था । विवाहोपरांत बहू की मुंबई जाकर शौहर के साथ मुस्तक़िल तौर पर रहने की इच्छा थी । उसने शौहर से अपनी इच्छा जतायी ।

मगर शौहर ने परदेस में कम तनख़्वाह की बात कहकर मना कर दिया तथा मुंबई चला गया । किसी भी सूरत में शौहर के साथ मुंबई जाने की ज़िद पर अड़ी विवाहिता ने शौहर के मुंबई जाने के बाद सल्फास की गोली खाकर अपनी जान दे दी । उसके पास, ससुर तथा ससुराल के अन्य सदस्यगण निहायत शरीफ़ और भले स्वभाव के हैं । बेटी के सल्फ़ास की गोली खाकर आत्महत्या कर लेने की जानकारी



जब मायके पक्ष वालों को हुई तो वे आये और थाने में जाकर दहेज उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए संबंधित धाराओं में ससुराल वालों के ख़िलाफ़ फ़र्ज़ी मुक़दमा दर्ज करा दिया। पुलिस आयी और आरोपित सास, ससुर, ननद वग़ैरह को गिरफ़्तार करके ले गयी। इस प्रकार के प्रकरणों के संबंध में प्रस्तुत पंक्तियों के परिचित एक पुलिस अधिकारी ने एक बार यह कहा था कि ऐसे मामलों में आरोपित व्यक्तियों की निर्दोषिता के संबंध में पूर्ण रूप से आश्वस्त होने के बावजूद उनके ख़िलाफ़ नामज़द एफ०आई०आर० लागू करना और गिरफ़्तार करना हमारी विवशता है। दोषारोपित व्यक्तियों के सही-ग़लत होने का सबूत शहादत के आधार पर फ़ैसला करने का काम न्यायालय पर छोड़कर हमें क़ानून के तहत अपनी कार्रवाई तो हर हाल में आवश्यक रूप से करनी ही पड़ती है। अनेक पुलिस अधिकारियों और वरिष्ठ प्रबुद्ध अधिवक्ताओं में भी इस बात को स्वीकार किया है कि समाज के दलित वर्ग और महिलाओं के उत्पीड़न से संबंधित इन धाराओं का आज कम दुरुपयोग नहीं हो रहा।

इन संबंधित धाराओं के मनमानी दुरुपयोग की रोकथाम के लिए आज इनके प्रावधानों में मुनासिबियत और ज़रूरत के अनुसार संशोधन-परिवर्तन की आवश्यकता है। जनपद स्तर पर प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक कमेटी या सेल गठित की जाए, जहां थाने में प्राथमिकी दर्ज कराने से पूर्व संबद्ध पक्षकार द्वारा इस संबंध में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया जाए। कमेटी या सेल द्वारा दलित या महिला के उत्पीड़न संबंधी प्रकरण की जांच की जाए और यदि जांचोपरांत यह लगे कि मामला वाक़ई सही है, तभी दोषी जन के ख़िलाफ़ प्राथमिकी, गिरफ़्तारी और मुक़दमे की कार्रवाई की शुरुआत की जाए।

मामला ग़लत, निराधार और मनगढ़ंत पाये जाने पर बेबुनियाद आरोप लगाने वालों के ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जाए। दलित उत्पीड़न तथा दहेज उत्पीड़न के नाम पर एक्ट की बैसाखी का ग़लत तरीक़े से दुरुपयोग करते हुए भले निर्दोष व्यक्तियों के जीवन और सम्मान से मनमानी खिलवाड़ करने का किसी को हक़ नहीं है। दलित और महिलाओं का उत्पीड़न अवश्य रुकना चाहिए तथा समाज में घटने वाली इस प्रकार की घटनाएं निन्दनीय है। मगर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि दलितों और महिलाओं को संबंधित एक्ट का दुरुपयोग करने की इजाज़त दी जाए।

'काफ़िर' का अर्थ

काफ़िर का अर्थ है इन्कार करने वाला। अरबी शब्द काफ़िर 'कुफ़्र' से बना है। कुफ़्र का अर्थ है छिपाना या इन्कार करना। इस्लामी परिभाषा में काफ़िर वह व्यक्ति होता है जो इस्लाम की सत्यता और उसकी सच्चाई को छिपाए या इन्कार करे। अंग्रेज़ी में इस इन्कार करने वाले के लिए ग़ैर- मुस्लिम (Non-Muslim) शब्द का प्रयोग किया जाता है। किसी ग़ैर-मुस्लिम के लिए 'काफ़िर' शब्द का प्रयोग सशर्त होता है और इस शब्द को उसी सूरत में इस्तेमाल किया जाता है जब वह इस्लाम पेश करने के बाद वह उसे मानने से इन्कार कर दे।

कुरआन में काफ़िर, कुफ़्र और शिर्क के शब्द बहुत-सी जगहों पर प्रयुक्त हुए हैं। 'कुफ़्र' के अर्थ अवसर के अनुरूप विभिन्न होते हैं, जैसे–इन्कार, अवज्ञा, कृतघ्नता, निरादर और नाक़द्री, सच्चाई को छिपाना और अधर्म आदि। कुफ़्र करने वाले को अरबी भाषा में 'काफ़िर' कहते हैं।

'काफ़िर' शब्द व्याकरण की दृष्टि से गुणवाचक संज्ञा है, यह अपमान-बोधक शब्द नहीं है। यह शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है जिनके सामने ईश्वरीय धर्म इस्लाम की शिक्षाएं पेश की गयीं और उन्होंने किसी भी कारण से उनको ग़लत समझा और उनका इन्कार कर दिया। वैसे मानवता की दृष्टि से सभी अल्लाह के परिवार के सदस्य हैं और सभी मानवीय व्यवहार और अधिकार के पात्र हैं।

हर धर्म में उस धर्म की मौलिक धारणाओं एवं शिक्षाओं को मानने वालों और न मानने वालों के लिए अलग-अलग विशेष शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे–हिन्दू धर्म में उन लोगों के लिए नास्तिक, अनार्य, असभ्य, दस्यु और मलेच्छ शब्द प्रयुक्त हुए हैं जो हिन्दू धर्म के अनुयायी न हों।

अगर कोई व्यक्ति किसी धर्म की धारणा या शिक्षा को स्वीकार नहीं करता तो उसे उसका इन्कार करने वाला अर्थात 'काफ़िर' (नास्तिक) ही कहा जाएगा। अतः जब तक इस्लाम की शिक्षाओं को पेश नहीं किया जाता और इसके बाद इन्कार जवाब नहीं आता, तब तक किसी को काफ़िर नहीं कहा जा सकता। **● संपादन प्रभाग**

इस्लामी त्योहार



● संकलित

ईद के दिन प्रभात के समय समस्त मुसलमान स्त्री-पुरुष और बालक स्नान करते थे और अच्छे से अच्छे वस्त्र जो ईश्वर ने उन्हें दिये हों, पहनकर निकलते थे । रमज़ान की ईद में नमाज़ के लिए जाने से पूर्व समस्त संपन्न व्यक्ति एक निश्चित परिमाण में दान (सदक़ा) के लिए द्रव्य निकालकर निर्धनों को देते थे, ताकि कोई व्यक्ति ईद के दिन भूखा न रह जाए । बक़रईद में इसके विपरीत नमाज़ के पश्चात् क़ुरबानी (बलिदान) की जाती थी । थोड़ा दिन चढ़ने पर सब लोग घरों से निकल खड़े होते थे । आदेश था कि स्त्रियां, पुरुष और बालक सब निकलें जिससे मुसलमानों की संख्या और उनके वैभव का प्रदर्शन हो । ईश्वर से प्रार्थना करने में भी सब सम्मिलित हों और सामूहिक हर्ष में भी सबको सम्मिलित होने का अवसर मिल जाए । ईद की नमाज़ मस्जिद के बजाय बस्ती के बाहर मैदान में होती थी, जिससे कि बड़ा से बड़ा समूह हो सके ।

नमाज़ के लिए जाते समय समस्त मुसलमान यह तकबीर (ईश प्रशस्ति) पढ़ते थे–"अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल हम्द" । अर्थात ईश्वर सबसे बड़ा है, ईश्वर के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, ईश्वर ही सबसे बड़ा है, सारी प्रशंसाओं का पात्र ईश्वर ही है । प्रत्येक गली, कूचे, बाज़ार और सड़क पर यही घोषणा होती चली जाती थी, जिससे पूरी बस्ती गूंज उठती थी । 'ईदगाह' के मैदान में जब सब लोग एकत्र हो जाते थे, तब समस्त समूह पंक्तिबद्ध होकर ईश्वरीय संदेष्टा के नेतृत्व में पूर्णतया विधिपूर्वक 'नमाज़' की दो 'रकअतें' पढ़ता फिर ईश-सन्देष्टा खड़े होकर खुत्बा देते ।

जुमे की नमाज़ के विपरीत खुत्बा नमाज़ के पश्चात् होता था जिससे कि अधिक से अधिक व्यक्ति अपने नेता के उस महत्वपूर्ण भाषण के समय उपस्थित रहें, जिसका अवसर वर्ष में केवल दो ही बार आता है । पहले एक भाषण पुरुषों के समक्ष होता था, फिर आप मैदान के उस भाग की ओर पधारते थे, जहां स्त्रियां एकत्र होती थीं और वहां भी खुत्बा देते थे । इन खुत्बों में शिक्षा एवं उपदेश के अतिरिक्त इस्लामी समुदाय से संबद्ध उन समस्त गंभीर समस्याओं पर



भी प्रकाश डाला जाता था जो उस समय सम्मुख होती थीं । कोई राजनीतिक एवं सैनिक प्रस्थान यदि करना होता तो उसका प्रबंध भी वहीं उसी समूह में कर दिया जाता । सामुदायिक आवश्यकताओं की ओर भी लोगों का ध्यान आकृष्ट किया जाता और प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके पूर्ण करने में भाग लेता, यहां तक कि स्त्रियां अपने आभूषण तक उतारकर समुदाय की सेवा के लिए प्रस्तुत कर देती थीं । फिर यह समूह 'ईदगाह' से लौटता था और आदेश यह था कि जिस मार्ग से आये हो उसके विपरीत दूसरे मार्ग से घरों की ओर लौटो, जिससे कि जनपद का कोई भाग तुम्हारी चहल-पहल और ईश-गुणगान के गुंजन से शून्य न रह जाए ।

'नमाज़' से लौट कर 'बक़रईद' के दिन सभी समर्थ व्यक्ति क़ुरबानी (बलिदान) करते थे । इस बलिदान का प्रयोजन उस घटना की स्मृति को नवीन करना ही नहीं अपितु उन भावनाओं को भी नवजीवन देना था, जिनके साथ 'इराक़' में निवास करने वाला एक प्रवासित वृद्ध मनुष्य 'मक्के' में ईश्वरीय संकेत प्राप्त कर स्वयं ही अपने पुत्र को ईश्वर के प्रेम पर बलिदान करने के लिए प्रस्तुत हो गया था और ठीक समय पर ईश्वर ने अपनी कृपा से उसके पुत्र के स्थान पर मेंढे का बलिदान करने की आज्ञा दे दी थी ।

ठीक उसी तिथि को उसी समय समस्त मुसलमान वही कार्य व्यवहारतः करके इस भावना को नवजीवन देते हैं कि हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की भांति वे भी ईश्वर के अनुयायी एवं भक्त हैं, उन्हीं की भांति अपने धन, जीवन, संतान आदि प्रत्येक वस्तु को ईश्वरीय आज्ञा एवं उसके प्रेम पर निछावर करने के लिए प्रस्तुत हैं और उनका जीवन-मरण ईश्वर के लिए है । इस संकल्प का प्रकटीकरण पशु का बलिदान करने की क्रिया एवं उन शब्दों से होता है जिनका उच्चारण बलिदान के समय किया जाता है ।

"इन्नी वज्जहतु वजहि-य लिल्लज़ी फ़-तरस्समावाति वल्अर्ज़ि अला मिल्लति इबराहीम हनीफ़ंव्वमा अना मिनल् मुशरिकीन । इन-न सलाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन । ला शरीकलहू व बिज़ालिक उमिर्तु व अना मिनल्मुस्लिमीन । अल्लाहुम-म मिन्-क व ल-क । बिस्मल्लाहि अल्लाहु अकबर ।"

अर्थात ''मैंने अपना ध्यान उसकी ओर लगा दिया जिसने पृथ्वी एवं आकाश को उत्पन्न किया है, मैं पूर्णतया उसी मार्ग का अनुयायी हूं जो इबराहीम (अलैहि०) का था और मैं अनेकेश्वरवादियों में से नहीं हूं। मेरी 'नमाज़' और मेरे द्वारा किया हुआ बलिदान जीवन एवं मरण सब कुछ विश्वम्भर अल्लाह के लिए है, जिसका कोई साझी नहीं। इसी का मुझे आदेश दिया गया है और मैं ईश्वर के आज्ञाकारी जीवों में से हूं। हे ईश्वर ! यह तेरी ही वस्तु है और तेरे ही लिए प्रस्तुत है। ईश्वर के नाम से आरंभ करता हूं, जो सबसे बढ़कर महामहिम है।''

पशु का बलिदान मुख से इन शब्दों का उच्चारण करते हुए किया जाता था एवं उस दृश्य को घर की स्त्रियां और बच्चे सब देखते थे, जिससे कि सबके हृदय में बलिदान, ईश्वर-भक्ति एवं आज्ञाकारिता की वही भावनाएं नवीन हो जाएं। फिर इस मांस का वितरण निर्धनों एवं संबंधियों में कर दिया जाता था और उसका एक भाग घर में अपने खाने के लिए भी रख लिया जाता था। पशुओं की खाल अथवा उसका मूल्य दरिद्र व्यक्तियों को दे दिया जाता था और इसके अतिरिक्त भी मुक्तहस्त होकर दान दिया जाता था जिससे कि ईद केवल संपन्न व्यक्तियों का ही त्योहार बनकर न रह जाए।

यह ईद थी, जो ईश-सन्देष्टा के युग में मनायी जाती थी। इन 'राजकीय' प्रथाओं के अतिरिक्त निजी रूप में युवकवृन्द कुछ खेल-कूद भी लेते थे और घरों की लड़की-बालियां मिल-बैठकर कुछ गीत भी गा लिया करती थीं, परन्तु यह सब कुछ एक सीमा में ही था। इसका अतिक्रमण करने की आज्ञा नहीं थी, अपितु समाज के नेता तो युवकों के इस वैध राग-रंग में भी भाग लेने से बचते थे, ताकि उनका साहस न बढ़ जाएं और वे अनुचित प्रदर्शन करने की चेष्टा न करने लगें।

नेताओं की जो नीति थी उसका अनुमान उस घटना से हो सकता है जिसका वर्णन प्रामाणिक अनुश्रुतियों में किया गया है कि एक बार ईद के दिन ईश-सन्देष्टा अपने घर में प्रविष्ट हुए तो देखा कि हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास-पड़ोस की दो लड़कियां बैठी गीत गा रही हैं। गीतों का विषय प्रेम अथवा मदिरा इत्यादि न था, अपितु 'बुआस युद्ध' (एक विशेष युद्ध) के युग की कविता थी। लड़कियां भी वे नहीं थीं कि जिनका व्यावसाय गाना-बजाना हो, अपितु घरों की बहू-बेटियां थीं जो कभी मनोरंजन के लिए परस्पर बैठकर दोषरहित गीत गा लिया करती हैं। ईश-सन्देष्टा ने उनके इस मनोरंजन में हस्तक्षेप न किया और चुपचाप चादर ओढ़ी और लेट गये। कुछ समय के पश्चात हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) आये और उन्होंने अपनी पुत्री को डांट पिलायी कि ईश-सन्देष्टा के घर में यह क्या उपद्रव हो रहा है ? उनका शब्द सुनकर ईश-सन्देष्टा ने मुंह पर से चादर हटाई और कहा, ''रहने दो, प्रत्येक जाति का एक सामूहिक उत्सव होता है, आज हमारा भी है।''

ईश-सन्देष्टा का यह कथन सुनकर हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) चुप हो गये, परन्तु गीतों का कार्यक्रम फिर न चल सका, उनके पीठ मोड़ते ही हज़रत आइशा (रज़ि०) ने लड़कियों को आंख का संकेत किया और वे अपने घरों को भाग गयीं। इस घटना से ज्ञात होता है कि युवकों और युवतियों के पृथक-पृथक मन-बहलाव, खेल-कूद और कुछ गा-बजा लेने को वैध तो समझा जाता था, परन्तु गुरुजन स्वयं मनोरंजनों में, भाग लेकर उनका साहस नहीं बढ़ाते थे। पश्चाद्वर्ती युग में जब गुरुजनों ने मर्यादाओं की देख-भाल छोड़ दी, तब रस्सी ढीली ही होती चली गयी और उस अवस्था को प्राप्त हुई जो आज हम-आप देखते हैं।

नमाज़ के लिए जाते समय समस्त मुसलमान यह तकबीर (ईश प्रशस्ति) पढ़ते थे–''अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल हम्द''। अर्थात ईश्वर सबसे बड़ा है, ईश्वर के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, ईश्वर ही सबसे बड़ा है, सारी प्रशंसाओं का पात्र ईश्वर ही है। प्रत्येक गली, कूचे, बाज़ार और सड़क पर यही घोषणा होती चली जाती थी, जिससे पूरी बस्ती गूंज उठती थी।

रोज़ों से धर्मपरायणता

❖ डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत

रमज़ान के महीने की प्रमुख इबादत रोज़ा है, जिसे पूरा करने के परिणामस्वरूप क़ुरआन ने हमें धर्मपरायणता की प्राप्ति की आशा दिलायी है–

''ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे लिए व्रत (रोज़े) अनिवार्य कर दिये गये, जिस प्रकार तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे आशा है कि तुममें धर्मपरायणता का गुण पैदा होगा । (क़ुरआन, 2:183)

प्रश्न उठता है कि इस महीने की वह विशेष बात क्या है, जिसके आधार पर इसे इस महत्वपूर्ण इबादत (रोज़ा) के लिए चुना गया ? क़ुरआन इस प्रश्न के उत्तर में हमें बताता है कि इस महीने को यह प्रमुखता क़ुरआन के अवतरण के कारण पैदा हुई है–

''रमज़ान वह महीना है, जिसमें क़ुरआन उतारा गया जो मानवों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है, जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य एवं असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । अत: अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाये, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे । और जो कोई बीमार हो या यात्रा पर हो, तो वह दूसरे दिनों में रोज़ों की संख्या पूरी करे । अल्लाह तुम्हारे साथ नर्मी करना चाहता है, सख़्ती करना नहीं चाहता । इसलिए यह तरीक़ा तुम्हें बताया जा रहा है ताकि तुम रोज़ों की संख्या पूरी कर सको और जिस सीधे मार्ग पर अल्लाह ने तुम्हें लगाया है उस पर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और कृतज्ञ बनो ।

(क़ुरआन, 2:185)

क़ुरआन और हदीसों में मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के बारे में मौलिक बातें बतायी गयी हैं उनके आधार पर मौलाना मौदूदी (रह॰) ने मनुष्य के आध्यात्मिक विकास की चार श्रेणियां बतायी हैं–ईमान, इस्लाम, तक़वा (धर्मपरायणता) और एहसान । मौलाना मौदूदी लिखते हैं–

जिस चीज़ को हम इस्लामी नैतिकता कहते हैं वह क़ुरआन व हदीस के अनुसार वास्तव में चार श्रेणियों पर आधारित है–ईमान, इस्लाम, तक़वा और एहसान ये चारों श्रेणियां एक के बाद एक उस प्राकृतिक क्रम पर आधारित हैं कि प्रत्येक बाद वाली श्रेणी पहले वाली श्रेणी से पैदा होती है ।

इन चार शब्दावलियों में से तीन की व्याख्या हमें हदीसे जिबरील में मिलती है–

''अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने लोगों से कहा तुम लोग मुझ से दीन की बातें पूछो, लेकिन लोग आदर और सम्मान के कारण पूछते नहीं थे (हरेक यह चाहता कि बाहर से कोई पूछने वाले आये और पूछे ताकि वे भी आप (सल्ल॰) की बातों से लाभान्वित हों) एक आदमी आया । वह नबी (सल्ल॰) के एकदम पास बैठ गया । उसने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! इस्लाम क्या है ?'' आपने जवाब दिया, ''किसी को अल्लाह का साझी न बनाना, नमाज़ क़ायम करना, माल को अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना और रमज़ान के रोज़े रखना ।'' उसने कहा, ''आपने ठीक कहा ।'' फिर उसने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ईमान क्या है ?'' आपने उत्तर दिया, ''अल्लाह को मानना, फ़रिश्तों को मानना, अल्लाह की किताबों को मानना, उसके रसूलों को मानना, मरने के बाद जी उठने को मानना और अल्लाह की तक़दीर को मानना ।'' उसने कहा, ''आपने सच कहा ।'' फिर उसने पूछा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! एहसान क्या है ?'' आपने कहा, ''एहसान यह है कि तुम अल्लाह से इस प्रकार डरो मानो तुम उसे देख रहे हो (इसलिए कि) अगर तुम उसे नहीं देख रहे हो तो वह तो तुम्हें देख रहा है ।'' उसने कहा, ''आपने सच कहा ।''

(बुख़ारी, मुस्लिम)

मौलाना अबुल आला मौदूदी लिखते हैं, तक़वा दरअस्ल अंतरात्मा की उस हालत का नाम है, जो अल्लाह के आज्ञापालन और ज़िम्मेदारी के एहसास से पैदा होती है और

जीवन के प्रत्येक पहलू में नज़र आती है । वास्तविक तक़वा यह है कि इन्सान के दिल में ख़ुदा का डर हो, बन्दगी की चेतना हो, ख़ुदा के सामने अपनी ज़िम्मेदारी एवं जवाबदेही का एहसास हो और इसका विवेक मौजूद हो कि दुनिया एक परीक्षा स्थल है, जहां ख़ुदा ने उम्र की एक छूट देकर मुझे भेजा है और आख़िरत में मेरे भविष्य का निर्णय पूरी तरह इस पर निर्भर है कि मैं इस दिये हुए समय के भीतर इस परीक्षा स्थल में अपनी शक्तियों और क्षमताओं को किस प्रकार प्रयोग करता हूं । उन सामानों का किस प्रकार उपभोग करता हूं, जो अल्लाह की ओर से मुझे दिया गया है और उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार क़रता हूं, जिनसे अल्लाह ने विभिन्न रूपों में मेरा जीवन संबंधित कर दिया है । यह एहसास और चेतना जिस व्यक्ति में भी पैदा हो जाए, उसकी अन्तरात्मा जाग जाती है और उसकी दीनी चेतना तीव्र हो जाती है ।''

तक़वा और एहसान का अन्तर स्पष्ट करते हुए मौलाना मौदूदी लिखते हैं : ''तक़वा की मौलिक अवधारणा अल्लाह का डर है, जो इन्सान को उसकी नाराज़गी से बचने पर आमादा करे और एहसान की मौलिक अवधारणा अल्लाह की मुहब्बत है जो आदमी को उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उभारे ।''

तक़वा के प्रभाव पूरे जीवन पर छाये होते हैं, इसलिए इसके प्रदर्शन भी अनगिनत हैं । उदाहरण के लिए कुछ का उल्लेख किया जा रहा है–

''नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अंतिम दिन को और फ़रिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके पैग़म्बरों को दिल से माने, और अल्लाह के प्रेम में अपना मनभाता धन नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफ़िरों पर, सहायतार्थ हाथ फैलाने वालों पर और ग़ुलामों की रिहाई पर ख़र्च करे, नमाज़ का आयोजन करे और दान दे । और नेक वे लोग हैं कि जब वचन दें तो उसे पूरा करें और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य और असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएं । ये हैं सच्चे लोग और यही लोग परहेज़गार हैं ।'' (क़ुरआन, 2:177)

वास्तविक नेकी का वर्णन कर देने के बाद क़ुरआन एक दूसरी जगह पर तलाक़ के अवसर पर अल्लाह के क़ानून के सम्मान पर ज़ोर देता है–

''और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और उनकी इद्दत (निश्चित अवधि) पूरी होने को आ जाए तो भली रीति से उन्हें रोक लो या भली रीति से विदा कर दो । केवल सताने के लिए उन्हें न रोके रखना कि यह ज़्यादती होगी और जो ऐसा करेगा वह वास्तव में अपने ही ऊपर ज़ुल्म करेगा । अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ । भूल न जाओ कि अल्लाह ने किस बड़ी नेमत का तुम्हें पात्र बनाया है । वह तुम्हें समझाता है कि जो पुस्तक और तत्वदर्शिता उसने तुम पर अवतरित की है, उसके आदर का ध्यान रखो ।

09425164608, 09752189505

UNIQUE COLLECTION

Exclusive Branded Shop

For : Mens, Girls & Kids

Central Bank Road, Durga Chowk, Seoni (M.P.) 480661

अल्लाह से डरो और अच्छी तरह जान लो कि अल्लाह हर बात जानता है ।'' (कुरआन, 2:231)

अल्लाह से तक़वा के लिए आवश्यक है कि आदमी ब्याज न ले–

''हे ईमान लाने वालो, अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा ब्याज लोगों पर शेष रह गया हैं उसे छोड़ दो यदि वास्तव में तुम ईमान लाए हो ।'' (कुरआन, 2:278)

कुरआन में है–''ये वे लोग हैं, जो कहते हैं, मालिक हम ईमान लाए, हमारी ख़ताओं को क्षमा कर और हमें नरकाग्नि से बचा ले । ये लोग धैर्य से काम लेने वाले हैं, सत्यवान हैं, आज्ञाकारी और दानशील हैं और रात की अन्तिम घड़ियों में अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करते हैं ।''

(कुरआन, 3:16-17)

मरते दम तक दीन पर बने रहना भी तक़वा की मांग है । कुरआन के अनुसार–

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है और तुमको मृत्यु न आये किन्तु इस दशा में कि तुम मुस्लिम हो ।'' (कुरआन, 3:102)

आपस के संबंधों के बारे में कुरआन कहता है–

''लोगो, अपने प्रभु से डरो जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जीव से उसका ज़ोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से पुरुष और स्त्री संसार में फैला दिये । उस अल्लाह से डरो जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे से अपने हक़ मांगते हो और नाते रिश्तों के संबंधों को बिगाड़ने से बचो । विश्वास करो कि अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है ।'' (कुरआन, 4:1)

खाने-पीने के मामले में हलाल एवं हराम में अन्तर तक़वा की मांग है–

''लोग पूछते हैं कि उनके लिए क्या वैध किया गया है, कहो तुम्हारे लिए सारी अच्छी स्वच्छ चीज़ें वैध कर दी गयी हैं । और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधाया हो–जिनको अल्लाह के दिये हुए ज्ञान के आधार पर तुम शिकार की शिक्षा दिया करते हो–वे जिस जानवर को तुम्हारे लिए पकड़ रखें उसको भी तुम खा सकते हो । अलबत्ता उस पर अल्लाह का नाम ले लो और अल्लाह का नियम भंग करने से डरो । अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती ।''

(कुरआन, 5:4)

न्याय के बारे में अल्लाह फ़रमाता है–

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह के लिए औचित्य पर क़ायम रहने वाले और न्याय की गवाही देने वाले बनो । किसी गिरोह की शत्रुता तुमको इतना उत्तेजित न कर दे कि न्याय से फिर जाओ, न्याय करो यह ईशपरायणता और विनम्रता के अधिक अनुकूल है । अल्लाह से डरकर काम करते रहो, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे पूरी तरह जानता है ।

(कुरआन, 5:8)

तक़वा का तक़ाज़ा है कि आदमी माल की मुहब्बत के बजाय अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञापालन को प्राथमिकता दे ।

संधि या समझौते का उल्लंघन तक़वा के विरुद्ध है–

''निश्चय ही अल्लाह की दृष्टि में धरती पर चलने वाले प्राणियों में सबसे बुरे वे लोग हैं, जिन्होंने सत्य को मानने से इन्कार कर दिया फिर किसी प्रकार वे इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं । (विशेषत:) उनमें से वे लोग, जिनके साथ तूने संधि की वे हर अवसर पर उसे भंग करते हैं और तनिक भी अल्लाह से नहीं डरते ।''

(कुरआन, 8:55-56)

तक़वा का एक प्रदर्शन यह है कि आदमी अल्लाह की

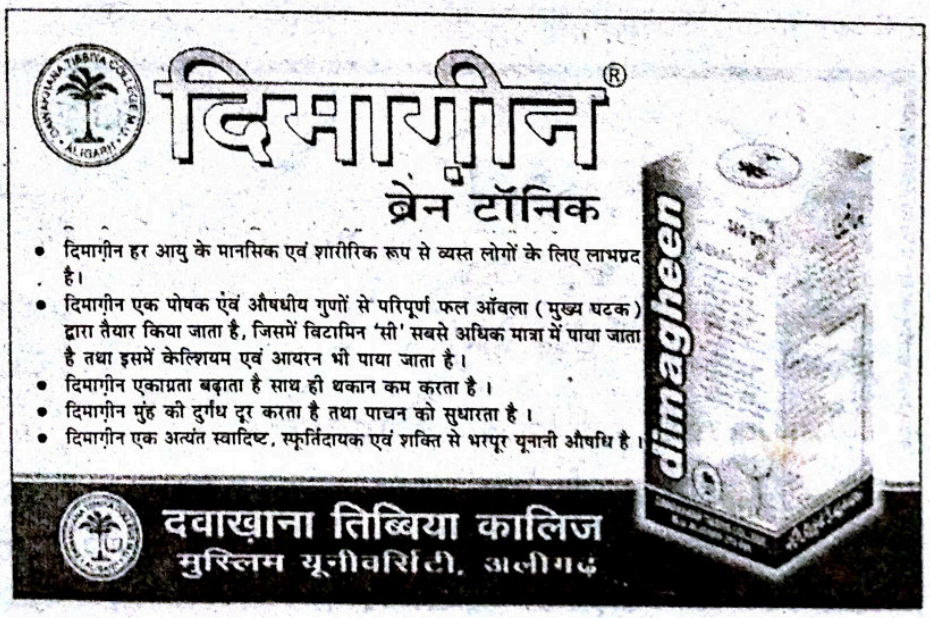

निशानियों का सम्मान करे । क़ुरआन में है–

''यह है असल मामला (इसे समझ लो) और जो अल्लाह के निश्चय किये हुए (व्यक्ति संबंधी) निशानों का आदर करे तो यह दिलों की धर्मपरायणता में से है ।''

(क़ुरआन, 22:32)

मौलाना मौदूदी लिखते हैं–

''हर वह चीज़ जो किसी धर्म, मान्यता या विचारधारा और व्यवहार या किसी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती हो वह उसका ''शिआर'' (चिन्ह) कहलाएगी, क्योंकि वह उसके लिए प्रतीक या निशानी का काम देती है । सरकारी झंडे, सेना और पुलिस आदि के यूनीफार्म, सिक्के-नोट और स्टाम्प सरकारों के शिआर हैं । गिरजा, बलि स्थल और सलीब ईसाइयत के शिआर हैं । चोटी, जनेऊ और मंदिर ब्राह्मण धर्म के शिआर हैं । केश, कड़ा और कृपाण सिख धर्म के शिआर हैं । हंसिया और हथौड़ा साम्यवाद का शिआर है । ये सारे धर्म और विचारधाराएं अपने-अपने मानने वालों से अपने शिआर के सम्मान की मांग करते हैं । अगर कोई व्यक्ति किसी व्यवस्था के शिआर में से किसी का अनादर करता है तो यह इस बात का प्रतीक है कि वह उस व्यवस्था के प्रति दुश्मनी रखता है और अगर वह अनादर करने वाला खुद उसी व्यवस्था से संबंध रखता हो तो उसका यह काम अपनी व्यवस्था से विद्रोह का समानार्थक है । अल्लाह की निशानियों का अर्थ वे सभी प्रतीक और निशानियां हैं जो बहुदेववाद, इन्कार या नास्तिकता के विरुद्ध एक अल्लाह की उपासना के धर्म का प्रतिनिधित्व करती हैं ।

तक़वा के अच्छे परिणाम दुनिया और आख़िरत दोनों में सामने आएंगे । आख़िरत के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

''निश्चय ही डर रखने वालों के लिए सफलता का एक स्थान है । बाग़ और अंगूर और समायु नवयुवतियां और छलकते हुए जाम । वहां कोई व्यर्थ और झूठी बात वे न सुनेंगे । बदला और काफ़ी इनाम तुम्हारे प्रभु की ओर से ।'' (क़ुरआन, 78:31-36)

रही दुनिया तो यहां तक़वा अपनाने वाले को मुश्किलों का हल मिल जाएगा । सूरह तलाक़ में है–

''जो कोई अल्लाह से डरते हुए काम करेगा, अल्लाह उसके लिए मुश्किलों से निकलने का कोई रास्ता पैदा कर देगा और उसे ऐसे रास्ते से आजीविका देगा जिधर से उसका गुमान भी न जाता हो ।'' (क़ुरआन, 65:2,3)

तक़वा का दूसरा नतीजा बसीरत है, जिससे आदमी सत्य और असत्य में अन्तर करने के योग्य हो जाता है ।

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो अगर तुम ईशपरायणता की नीति अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए कसौटी जुटा देगा और तुम्हारी बुराइयों को तुम से दूर कर देगा और तुम्हारे क़ुसूर माफ़ कर देगा । अल्लाह बड़ा अनुग्राहक है ।''

(क़ुरआन, 8:29)

रमज़ान का यह मुबारक महीना हमें एक बार फिर यह अवसर प्रदान कर रहा है कि हम तक़वा का गुण अपने भीतर पैदा करें । भाग्यशाली हैं वे लोग जो इस अवसर का लाभ उठाएं ।

मारूफ़
शू पैलेस
जी०ई० रोड, बस स्टैंड, बी०एम०वाई०
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस०के० इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

रोज़े की विशिष्ट महत्ताएं

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

रोज़े के अनेक लाभ हैं । इस्लाम में इसकी महत्ता स्पष्ट है । यह इसका चौथा स्तंभ है । रोज़े के इतने लाभ हैं कि इन पर पूरी किताब लिखी जा सकती है । आपकी जानकारी के लिए हम यहां रोज़ों के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाल रहे हैं ।

रोज़ा ईशपरायणता और ईशभय का स्रोत है । इसके द्वारा इन्सान के भीतर तक़वा (ईशपरायणता) का गुण उत्पन्न होता है । इस बारे में क़ुरआन, सुन्नत (हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की जीवनचर्या) आदि में उल्लेख किया गया है । अल्लाह ने रोज़ा को इन्सानों के लिए अनिवार्य ठहराया है ।

क़ुरआन में है, ''ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस प्रकार तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे आशा है कि तुममें तक़वा (ईशपरायणता) का गुण पैदा होगा ।''

इसी प्रकार अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा है, ''रोज़ा (दुनिया में गुनाहों से और आख़िरत में नरक से बचाने वाली) ढाल है ।'' इस कथन का अर्थ भी यही है कि रोज़ा तक़वा की दशा पैदा करता है ।

एक हदीस में लिखा है, ''अत: जब तुममें से किसी का रोज़ा हो तो चाहिए कि वह अश्लील बातें न करें, न ही शोर मचाए और यदि कोई उससे गाली-गलौच करे या लड़ने-भिड़ने पर उतर आये तो (उससे भी और अपने मन में भी) कहे कि मैं रोज़े से हूं, मैं रोज़े से हूं ।''

यूं तो प्रत्येक मुसलमान के लिए बुरी बात कहने और गाली-गलौच करने तथा लड़ने-भिड़ने से बचना हर हाल में आवश्यक है लेकिन जब वह रोज़े से हो तो उसके लिए शांति की इस नीति की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है । सामान्य दशा में वह यदि इस तरह की कमज़ोरियों से पूरी तरह सुरक्षित नहीं रह पाता तो कम से कम रोज़े की दशा में तो उसे इनके निकट कदापि नहीं जाना चाहिए । यह हदीस वास्तव में इस बात की उद्घोषणा है कि रोज़ा अच्छे कर्म करने और ईशपरायण बनने का प्रभावी उपाय है ।

तक़वा (ईशपरायणता) अल्लाह की नाराज़गी से बचने के उस गहरे एहसास का नाम है, जो इन्सान को प्रत्येक भले कार्य के लिए उभारता और हर बुरे कार्य से रोकता है । यह हृदय की एक विशिष्ट दशा है, जिससे एक विशेष प्रकार की व्यावहारिक नीति अस्तित्व में आती है । यह नीति अल्लाह के आज्ञापालन और उसकी प्रसन्नता की प्राप्ति की

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman

(Prof M. B. Zaman) Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

नीति है । इस दशा से जो हृदय आपूरित होता है, वह प्रत्येक समय यह देखता रहता है कि मेरा ईश्वर कहीं मुझसे नाराज़ न हो जाए और मैं कोई ऐसा कार्य न कर बैठूं, जिसे वह पसन्द न करता हो और कोई ऐसा काम करने से रुक न जाऊं, जिसे वह पसन्द करता हो ।

रोज़ों की महत्ता यह भी है कि तक़वा (ईशपरायणता) सही अर्थ में रोज़े के बिना पैदा ही नहीं हो सकता । निस्संदेह ऐसी बहुत-सी चीज़ें हैं, जो तक़वा के विकास में सहायक हैं । मगर रोज़ा इस सिलसिले में जो भूमिका निभाता है, वह इसी का भाग है । दूसरा कोई कर्म इसका विकल्प नहीं बन सकता । तक़वा के अपेक्षित गुण रोज़ों के द्वारा ही परवान चढ़ते हैं ।

रोज़े की एक विशिष्ट महत्ता यह भी है कि यह कुछ दृष्टियों से इस्लाम के मूल स्वभाव का सबसे बड़ा प्रतिबिम्ब है और इस्लाम की जो धारणा क़ुरआन ने दी है, उसकी विशिष्ट रूपरेखा रोज़े के आईने में सबसे अधिक स्पष्ट रूप में दिखायी देती है ।

इसका अर्थ यह है कि रोज़ा इन्सान को केवल कर्म से ही परहेज़गार नहीं बनाता बल्कि सोच व दृष्टि का भी परहेज़गार बनाता है । वह इन्सान को तक़वा ही नहीं प्रदान करता अपितु इसका व्यापक अर्थ भी प्रदान करता है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिसने जीवन भर लगातार रोज़े रखे, उसका रोज़ा, रोज़ा नहीं ।"

एक अन्य हदीस के अनुसार, दो या दो से अधिक दिनों को मिलाकर (बिना सहरी व इफ़्तार) रोज़ा नहीं रखना चाहिए ।

एक सफ़र के दौरान नबी (सल्ल०) ने देखा कि लोगों की भीड़ इकट्ठी है और एक व्यक्ति के ऊपर उन लोगों ने छाया कर रखी है । नबी (सल्ल०) ने पूछा, "यह सब क्या मामला है ?" आपको बताया गया कि यह एक रोज़ेदार है तो नबी (सल्ल०) ने कहा, "यह कोई नेकी का काम नहीं है कि सफ़र में (इस प्रकार का, जिसकी कठिनाइयां सामान्य सहन शक्ति से बाहर हो) रोज़ा रखा जाए ।" अल्लाह से दुआ है कि रोज़ा सभी रोज़ेदारों के भीतर अपेक्षित गुण पैदा करे ।

टूटी छत, दूषित पानी

टूटी छत दूषित पानी
और वही बीमारी है
लूट-पाट, हिंसा का तांडव
'रात' सूर्य पर भारी है

पैसे वाले लहू पी रहे
लाचारों के मजबूरों के
बोटी-बोटी चबा रहे ये
ज़ालिम बेटे कंगूरों के

आम आदमी मरे तो मरे
भुखमरी, महंगाई से
गर्म गोश्त पहलू में लेकर
'नेता' मिलते 'भाई' से

एक देवता हर 'मंदिर' में
नाम है जिसका भ्रष्टाचार
रावण से बहु ग्रीव हैं इसके
'सर से पा' काला व्यापार

अपना भारत नहीं है अपना
वह मुट्ठी भर लोगों का
स्वस्थ बहुत फाइल में किन्तु
बना हुआ घर रोगों का ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
श्री रामायण, हथुआ (बिहार)

POSTAL LIBERARY
जीवन ज्योति केन्द्र
पोस्टल लाइब्रेरी



Bainy Singh Ki Talaiya
Gohalpur, Jabalpur-482002
Mob. : 930092747, 9300101373

हिन्दी साहित्य : संकट पाठकों की संख्या में गिरावट का

■ विद्या प्रकाश

हिन्दी साहित्य का भंडार विपुल, विशाल और व्यापक है । हिन्दी साहित्य का इतिहास न केवल एक हज़ार साल प्राचीन है, बल्कि चन्दबरदाई, तुलसीदास, सूरदास, भारतेन्दु हरीशचन्द, निराला, सुमित्रानन्दन पंत, प्रेमचन्द आदि अनेकानेक उच्च कोटि के रचनाकारों की कालजयी उत्तमोत्तम रचनाओं से अलंकृत तथा सुशोभित है । विश्व की किसी भी भाषा के साहित्य से तुलना की सामर्थ्य होते हुए भी आज हिन्दी साहित्य के समक्ष पाठकीय संकट उत्पन्न हो गया है तथा तमाम कोशिशों के बावजूद साहित्य उन लोगों तक नहीं पहुंच पा रहा है, जिनके लिए वह रचा तथा लिखा जा रहा है । अब स्थिति कुल मिलाकर यह हो गयी है कि हिन्दी में साहित्यिक पुस्तकों का कोई भविष्य नहीं है । इस स्थिति में लेखक के साहित्य के नाम पर लेखन, सृजन तथा आत्माभिव्यक्ति का क्या उद्देश्य, सार्थकता, आवश्यकता तथा औचित्य है ?

हिन्दी में उत्कृष्ट साहित्यिक पुस्तकों का अभाव नहीं है मगर वे विभिन्न कारणों से पाठकों तक नहीं पहुंच पाती । दक्षिण भारतवासियों का पुस्तक प्रेम उल्लेखनीय तथा प्रशंसनीय है । दक्षिण भारतवासियों में यह प्रचलन है कि वे बर्थ डे, विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर बच्चों तथा वर-वधू को नक़द, वस्त्राभूषण और मिष्ठान के साथ पत्र-पत्रिकाओं का पैकेट तथा साहित्यिक पुस्तकों का सेट भी सप्रेम उपहारस्वरूप भेंट करते हैं । हिन्दी भाषा-भाषी उत्तर भारतवासियों में यह बात नहीं पायी जाती । वे बच्चों के सालगिरह, विवाह, बरही, तेरही आदि मौक़ों पर आत्म प्रदर्शन के उद्देश्य से इलेक्ट्रिक डेकोरेशन, आतिशबाज़ी, डी॰जे॰, सूट-बूट, गिफ़्ट, प्रीति भोज वग़ैरह में पचासों हज़ार रुपया देखते ही देखते बरबाद कर डालते हैं मगर वे हज़ार पांच सौ रुपये में साहित्यिक पुस्तकें नहीं ख़रीद सकते । विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में प्रेमचन्द, इलाचन्द्र जोशी, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर आदि रचनाकारों की जो साहित्यिक कृतियां निर्धारित हैं, वे भी छात्रों तथा अध्यापकों द्वारा ख़रीद कर नहीं पढ़ी-पढ़ाई जाती तथा विद्यार्थीगण गाइड वग़ैरह ख़रीदकर शार्टकट पद्धति से वार्षिक परीक्षा की वैतरणी पार करने का जुगाड़ लगाने लगते हैं । यदि विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम में साहित्यकारों की पुस्तकें निर्धारित न हों तो वे जो अल्पसंख्या में बिकती हैं, वे भी न बिकें । साहित्यिक पुस्तकों को ख़रीदकर पढ़ने में हिन्दी भाषा-भाषियों की रुचि नहीं है । जिस प्रकार वे अपनी मासिक आय में से बच्चों की फ़ीस, पढ़ाई-लिखाई, दूध, गल्ला, सब्ज़ी, मकान का किराया, मोबाइल के सिम कार्ड, बिजली के बिल वग़ैरह विभिन्न मदों के लिए अलग रुपया निकालकर ख़र्च करते हैं, उसी प्रकार वे साहित्यिक पुस्तकों की ख़रीदारी के लिए अलग मद क्यों नहीं बनाते ? एक तो हिन्दी भाषा-भाषियों में वैसे ही साहित्यिक पुस्तकों को ख़रीदकर पढ़ने में दिलचस्पी नहीं है, ऊपर से रही-सही कसर इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने पूरी कर दी । घरेलू महिलाओं तथा बच्चों की दिलचस्पी पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के स्थान पर टी॰वी॰ चैनलों के सीरियलों, टी॰वी॰ गेम, मोबाइल गेम तथा कंप्यूटर गेम में बढ़ गयी जिससे आम पाठकों की तादाद में और भी गिरावट आ गयी । इस विषमावस्था में साहित्यिक कृतियों के मुद्रण-प्रकाशन का क्या मूल्य है ?

एक ज़माना था जब हिन्दी की साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन की दुनिया में इलाहाबाद का बोलबाला था । मुंशी प्रेमचन्द तथा रवीन्द्र नाथ टैगोर से लेकर मैथिलीशरण गुप्त, रघुपति सहाय, फ़िराक़ गोरखपुरी, उपेन्द्र नाथ अश्क, महादेवी वर्मा, मार्कण्डेय और अमरकांत जैसे देश के अनेकानेक

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्वाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इंन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्वाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं॰

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

नामी-गिरामी साहित्यकारों की रचनाएं यहीं से प्रकाशित हुआ करती थीं । लेकिन समय की बदलती रफ़्तार ने बहुत कुछ बदल डाला तथा इलाहाबाद में प्रकाशन व्यवसाय देखते ही देखते बरबादी के कगार पर पहुंच गया । साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन के क्षेत्र में कभी केन्द्रीय भूमिका निभाने वाले इलाहाबाद के स्थान पर आज दिल्ली क़ाबिज़ हो गया है । साहित्यानुरागी पुस्तक प्रेमियों के ज़ेहन में आज भी इलाहाबाद के इंडियन प्रेस, माया प्रेस, सरस्वती प्रेस, हंस प्रकाशन, किताबिस्तान, साधना प्रकाशन, नीलम प्रकाशन, धारा प्रकाशन, ला जर्नल प्रेस, भारती भंडार, छात्र हितकारी प्रकाशन, संगम प्रकाशन, साधना सदन तथा चित्रलेखा प्रकाशन सरीखी प्रकाशन संस्थाओं का नाम है । प्रकाशन की दुनिया में लाला रामनारायण लाल बुकसेलर ने भी काफ़ी शोहरत और दौलत कमाया । मगर इनमें से अधिकतर प्रकाशन संस्थान समय के साथ नहीं चल पाए तथा जो प्रकाशन संस्थान बने भी हैं वे प्रतिकूल परिस्थितियों में किसी प्रकार अपना वजूद क़ायम किये हुए हैं तथा वे कमोबेश सरकारी ख़रीद के ही भरोसे प्रतिद्वंद्वितापूर्ण परिस्थितियों में अपना अस्तित्व बचाये हुए हैं । विपरीत अवस्था तथा परिवर्तित परिस्थितियों में इलाहाबाद के अधिकतर प्रकाशक अब पुस्तकों की सरकारी ख़रीद और बल्क परचेज़िंग के मोहताज हो गये हैं ।

सरकारी ख़रीद में धांधली, कमीशनख़ोरी, जोड़ जुगुत तथा गुणा-गणित से प्रकाशन जगत को काफ़ी नुक़सान पहुंचा । स्थितियां ऐसी बन गयी कि बड़े-बड़े लेखक तथा प्रतिष्ठित रचनाकार भी सरकारी ख़रीदारी के मोहताज हो गये । सरकारी ख़रीद में व्याप्त अराजकता के आगे उनका टिका रहना आसान नहीं रहा तथा उनके हाथ निराशा के अलावा ऐसा कुछ नहीं लगा जो फ़ायदेमंद, सकूनबख़्श और आशाजनक कहा जा सके । इस स्थिति के लिए सरकारी नीतियां भी कम दोषी तथा ज़िम्मेदार नहीं ।

यह स्थिति उन साहित्यिक पुस्तकों से जुड़ी है जिनके माध्यम से हम जनजागरूकता की उम्मीद करते हैं । साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी ग़ैर-सरकारी स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिए तथा साहित्यिक पुस्तकों का दाम इतना अधिक न हो कि वह पाठकीय क्रयशक्ति तथा जनसाधारण की पहुंच के बाहर हो । जन-जन में साहित्यिक रुचि के स्फुरण की आवश्यकता है तथा इसके लिए पुस्तक प्रकाशकों, सामाजिक संस्थाओं तथा शिक्षण संस्थाओं को शहर तथा क़स्बों में शिविर तथा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन कर आम लोगों में पुस्तक प्रेम जाग्रत करना चाहिए ।

साहित्य समाचार

मंशा साहब कभी भुलाए नहीं जाएंगे

उर्दू साहित्य के जाने-माने शायर मंशाउर्रहमान ख़ां मंशा का पिछले दिनों नागपुर में देहांत हो गया । मंशा साहब उम्र भर महाराष्ट्र में उर्दू भाषा की ख़िदमत के लिए कभी भुलाए नहीं जा सकेंगे । मंशा साहब बहुत सौभाग्यशाली थे, उन्होंने महाराष्ट्र में उच्च शिक्षा प्राप्त साहित्यकारों, शायरों और बुद्धिजीवियों का एक बड़ा समूह तैयार किया ।

मंशा साहब का तहरीके अदब इस्लामी से गहरा संबंध था । उन्होंने जनवरी 2010 ई० में इदारा अदब इस्लामी के ऑल इंडिया मुशायरा की अध्यक्षता भी की थी । इदारे के महासचिव जनाब इन्तिज़ार नईम ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है ।

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877

Hosiery Centre

Wholesaler

Readymade & Handloom

B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G)

कर्नाटक के मुख्यमंत्री
श्री बी॰ एस॰ येदियुरप्पा ने
सलाम सेन्टर के चेयरमैन
सैयद हामिद मुहसिन से
पवित्र क़ुरआन
और
मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन पर किताब प्राप्त की



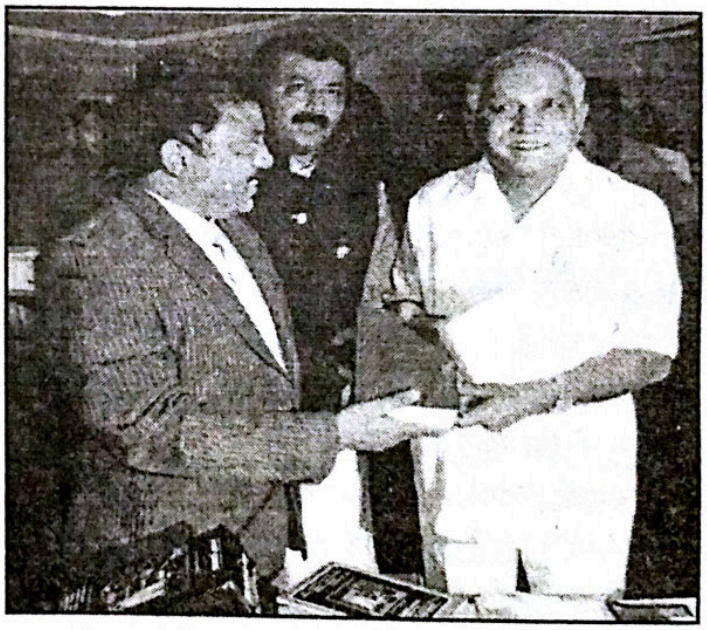

बंगलोर मलबार मुस्लिम एसोसिएशन के प्लेटिनम जुबली समारोह के अवसर पर 2 जुलाई 2010 ई॰ को सलाम सेन्टर के चेयरमैन सैयद हामिद मुहसिन ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री बी॰एस॰ येदियुरप्पा को पवित्र क़ुरआन का कन्नड़ अनुवाद और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन पर एक पुस्तक भेंट की । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन पर पुस्तक प्रस्तुत करते हुए सैयद मुहसिन ने पुस्तक का परिचय कराते हुए मुख्यमंत्री से कहा–''यह पुस्तक धरती पर आये सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्तित्व के पवित्र जीवन का उल्लेख करती है, जो धार्मिक और राजनीतिक दोनों ही स्तरों पर समान रूप से सफल रहा और जिसने धरती पर शांति एवं न्याय की स्थापना की, जिसका पालन हर काल और स्थान पर किया जा सकता है । मुख्यमंत्री ने सलाम सेन्टर के पवेलियन का दौरा किया और वे पवित्र क़ुरआन का भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद देखकर चकित थे ।

अभियान के पीछे

झोला छाप डॉक्टरों द्वारा सस्ता इलाज दूरस्थ इलाक़ों में उपलब्ध कराया जा रहा है । ग्रामीण इलाक़ों में सरकारी स्वास्थ्य सेवा अनुपलब्ध है, क्योंकि सरकारी डॉक्टर शहरों में पोस्टिंग चाहते हैं । यदि झोला छाप डॉक्टरों की दुकान बंद करा दी गयी तो इन दूरस्थ क्षेत्रों के मरीज़ों को कठिनाई होगी । इसके अतिरिक्त रजिस्टर्ड डॉक्टरों की फ़ीस अधिक होती है । यदि झोला छाप डॉक्टरों से प्रतिस्पर्धा समाप्त हो गयी तो रजिस्टर्ड डॉक्टर ख़ूब चांदी काटेंगे । ध्यान दें कि झोला छाप डॉक्टरों के विरुद्ध मुहिम छेड़ने में मरीज़ नहीं, बल्कि रजिस्टर्ड डॉक्टर आगे रहते हैं । ये चाहते हैं कि झोला छाप डॉक्टरों का सफ़ाया हो जाए, मरीज़ के हाथ में कोई विकल्प न बचे और उन्हें मनमानी फ़ीस वसूल करने का अवसर मिल जाए ।

(भरत झुनझुनवाला, दैनिक जागरण, 13 जुलाई 2010)

अपराधी बनाम अपराधी

कश्मीर में चल रहे ताज़ा बवाल का राजनीतिक समाधान खोजने की पहल कोई रंग ला पाएगी, ऐसा मुश्किल प्रतीत हो रहा है । कारण यह नहीं कि वर्तमान संकट ऐसा पेंचीदा है जिसका हल ढूंढ़ना किसी तिलिस्मी क़िले को तोड़ने जैसा है । कारण यह है कि इस पहल के तमाम पात्र और साथ ही इसका विरोध करने वाले भी, दोनों किसी न किसी रूप में ख़ुद इस बवाल के लिए ज़िम्मेदार हैं ।

(संपादकीय, राष्ट्रीय सहारा, 13 जुलाई 2010)

हमारी विविधता

विविधताओं का देश है भारत । स्कूल की किताबों में दर्ज इस जानकारी को गर्व से बयां करते हम कभी नहीं थकते । लेकिन, इसी विविधता का खुलासा करने वाली दो ख़बरें जब एक साथ आती हैं तो सोचना पड़ जाता है कि ऐसी विविधता पर छाती ठोकी जाए या शर्म से मुंह छुपा लिया जाए ! एक ख़बर बताती है कि भारत ने एक साथ पांच सेटेलाइट छोड़ कर फिर अंतरिक्ष में तिरंगा लहरा दिया है । तो वहीं, दूसरी सूचना आती है कि देश के आठ प्रमुख राज्यों में इतने दरिद्र हैं जितने कि अफ़्रीक़ा के सबसे ग़रीब माने जाने वाले छब्बीस देशों में भी नहीं हैं ।

(संपादकीय, राष्ट्रीय सहारा, 14 जुलाई 2010)

यह कैसी निष्ठा ?

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, ख़ासकर पिछले तीस वर्षों में क्या देखने को मिला है ? सरकारी अधिकारी सत्ता में बै बेईमान प्रतिनिधियों के मोहरे बनकर रह गये हैं । वे भूल ग हैं कि सेवा नियुक्ति के समय उन्होंने निष्ठा की शप देश-सेवा के लिए ली थी, न कि व्यक्ति विशेष की से के लिए । यदि वे उसी रास्ते पर चलते जिसकी उन अपेक्षा की गयी थी, तो देश की स्थिति बदहाल न हु होती । एक आई॰पी॰एस॰ अधिकारी द्वारा सबसे बड़े अपरा एंडरसन को कार चलाकर हवाई अड्डे तक ले जाना औ मुख्य सचिव एवं अन्य कुछ आई॰ए॰एस॰ अधिकारियों द्वा उसकी भागने में मदद करना यह साबित करने के लि पर्याप्त है कि वे अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए सत्तासी व्यक्तियों की सेवा कर रहे थे । क्या इनके ख़िलाफ़ बेईमा एवं ग़ैरक़ानूनी कार्य करने तथा भारतीय संविधान के प्र निष्ठा की शपथ के उल्लंघन के अपराध में क़ानूनी कार्र नहीं होनी चाहिए ?

(साबिर अली, राष्ट्रीय सहारा, 8 जुलाई 201

खोट

यू॰पी॰ए॰ सरकार ने दूसरी बार सत्ता संभालने के ब नक्सली हिंसा को सबसे गंभीर समस्या के रूप में लिया और समस्या से प्रभावित राज्यों से संवाद करने की लगा कोशिश की, लेकिन दुर्भाग्य से इसका कोई सकारात्म नतीजा अब तक देखने में नहीं आया है, उलटे नक्सली हि और बढ़ी ही है । साफ़ है कि नक्सलियों से निबटने तौर-तरीक़े में कोई न कोई बुनियादी खोट ज़रूर है ।

(संपादकीय, नवभारत टाइम्स, 9 जुलाई 201

संप्रदाय और साम्प्रदायिकता

मनुष्य की समस्या यह नहीं है कि उसमें अ विभिन्नताएं हैं, बहुत से संप्रदाय हैं । यह विचार विकसि होना चाहिए कि संप्रदाय रहें, किन्तु साम्प्रदायिकता जाए अनेक संप्रदाय सहअस्तित्व में बाधा नहीं बनते, कि साम्प्रदायिकता दंगे कराती है, विद्वेष उत्पन्न करती है अ हमारी संपूर्ण मानसिकता को लहूलुहान कर देती है ।

(डॉ॰ महीप सिंह, दैनिक जागरण, 8 जुलाई 201

आधुनिक समाज और नारी

औरत मां की हैसियत से आदमी को जन्म देती है और बीवी की हैसियत से मर्द के हर सुख-दुख में उसका बराबर से साथ देती है । लेकिन आज के आधुनिक युग की नारी जाति के इतिहास पर नज़र डालें तो पीड़ा, दास्तां, शोषण से नारी का इतिहास भरा पड़ा है । आज उसे एक नौकरानी बल्कि दासी के दर्जे पर रख दिया गया है । विश्व की अनेक सभ्यताओं ने तो नारी को अपवित्र, नरक की ओर ले जाने वाली आदि अपमानजनक शब्दों से संबोधित किया है । यही नहीं कन्या जन्म को अशुभ माना जाता था । विशेष अवधि में उसे छूना तो दूर देखना भी पाप समझा जाता था । देवदासी बनाकर मंदिर में बैठा दिया जाता था तथा उनके साथ जानवरों की तरह व्यवहार किया जाता था । हाल यह था कि नारी की अपनी कोई महत्वाकांक्षा ही बाक़ी नहीं रही ।

आज जो लोग नारी जाति की इस दशा को लेकर चिंतित हैं उनका मानना है कि औरतों की यह बेबसी तभी दूर हो सकती है जब वह आधुनिक बने और मर्दों के कंधे से कंधा मिलाकर चलें, नारी के इन शुभचिंतकों ने ही उन्हें आधुनिक नारी का नाम देकर अश्लीलता और आधुनिकता की दौड़ में शामिल कर उन्हें फ़ैशन शो और सौंदर्य प्रतियोगिता के नाम पर सरेआम चौराहे पर नग्न कर दिया है । वे उनके जिस्मों को नीलाम कर रहे हैं । अस्ल में ये नारी के शुभचिन्तक नहीं, बल्कि उसके सबसे बड़े दुश्मन हैं । यह वही लोग हैं जो नारी को केवल अपनी पहली ज़रूरत (वासना) के रूप में देखते हैं । अस्ल में वे चाहते हैं कि आधुनिक बनने में ही नारी अपनी सुरक्षा व सम्मान समझें और अर्द्ध-नग्न होकर घरों से बाहर निकले ताकि वह अर्द्धनग्न औरतों को देखकर अपनी वासना भरी निगाहों को ठंडक पहुंचा सकें ।

सबसे अफ़सोसनाक बात है कि आज की औरतें पढ़ी-लिखी होने के बावजूद अपने दुश्मनों की बातों में आकर उनके द्वारा दिखाये हुए रास्ते पर आंख बन्द कर दौड़ी चली जा रही है और इसी में वह अपना मान-सम्मान समझ रही हैं । औरतों में बनाव श्रृंगार का आलम यह है कि उनका शरीर कपड़ों से निकला पड़ रहा है । औरतें अपने शरीर के एक-एक अंग को खोल-खोलकर पेश कर रही हैं और मर्दों की ओर से थोड़ा-और-थोड़ा और की मांग बढ़ती जा रही है । नग्न चित्र, नंगी मूर्तियां एक तरह से वस्त्रहीन नृत्य सबसे ज़्यादा पसन्द किये जा रहे हैं । सिनेमा में बोल्ड दृश्य होना आम बात हो गयी है । आज औरतों और मर्दों के बेख़ौफ़ मेल-मिलाप ने औरतों में हुस्न की नुमाइश गन्दगी और बेहयाई को ग़ैर-मामूली तरक़्क़ी दे दी है । औरतों को मर्दों का साथ और मर्दों को औरतों का साथ ज़्यादा पसन्द आ रहा है । यह अश्लीलता सड़कों पर आ चुकी है । शादी (निकाह) जैसी पवित्र और ज़रूरी चीज़ को मामूली समझा जाने लगा है ।

औरतों में अपने हुस्न को खोल-खोल कर दिखाने की प्रवृत्ति ने आज उन्हें मुश्किल में डाल दिया है । औरतों के साथ बलात्कार जैसी घटनाएं आम होती जा रही हैं । औरतों का अपने घरों से अल्प वस्त्रों में निकलना एक आम बात है, उनमें ग़ैर-मर्दों के साथ बेरोकटोक मेल-जोल की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । शादी (निकाह) ही एक ऐसी चीज़ है जो औरत और मर्द के बीच सुकून, ठहराव व मज़बूती पैदा करता है । शादी व्यवस्था के दायरे में मुहब्बत, अम्न और त्याग का पाकीज़ा माहौल पैदा करती है ।

आज नारी जाति को अपने नारित्व को समझने की ज़रूरत है, तभी वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचार से छुटकारा पा सकती है । उसे अपनी सीमा और संस्कृति का ख़्याल रखते हुए समाज में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए न कि अश्लीलता, नग्नता और बेहयाई के सहारे । यह कटु सत्य है कि औरत व मर्द इस सृष्टि के प्रमुख अंग हैं । दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और दोनों का ही समाज में एक बराबर स्थान है । मर्द और औरत दोनों ही एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं । औरतों को यह बात समझनी चाहिए कि वे समाज में किसी से कमतर नहीं । फिर उन्हें अश्लीलता और नग्नता से भरी वासना की खाई में क्यों ढकेला जा रहा है ? इसका विरोध स्वयं नारी को करना चाहिए और उन्हें नारित्व की सीमा में रहते हुए अपने घरों से निकलना चाहिए ।

मुदस्सिर मुहम्मद

modas_1980mohammed@yahoo.co.in

जीवन में घुले कीटनाशक

■ विनय राणा

आज सामान्य रूप से घरों में आने वाली ज़्यादातर खाद्य वस्तुएं अपने साथ कीटनाशक दवाओं का असर लाती हैं । फल, सब्ज़ी, अनाज आदि पर आजकल कीटनाशकों का जितना प्रयोग किया जा रहा है, वह ज़रूरत से कहीं ज़्यादा है क्योंकि ज़्यादातर किसान कीटनाशी की सही मात्रा और सही विधि पर कोई ध्यान नहीं देते । फलस्वरूप भारी मात्रा में कीटनाशकों का प्रयोग करने से एक तो उनकी लागत बढ़ती है और दूसरी तरफ़ जनस्वास्थ्य के प्रति गंभीर ख़तरों की संभावना काफ़ी बढ़ जाती है । वास्तव में ज़्यादातर कीटनाशक दवाओं के लेबल पर जो प्रयोग विधि छपी होती है, वह होती तो कई भाषाओं में है, लेकिन उसके अक्षर इतने महीन होते हैं कि वे पढ़ने में नहीं आते । यह एक विडम्बना है कि ऐसी बातों के ख़िलाफ़ न तो कहीं से कोई आवाज़ उठती है और न ही ऐसे मामलों पर क़लम चलती दिखायी देती है ।

ज़हरीली दवाओं की बिक्री बढ़ाने का यह कितना घृणित तरीक़ा है कि प्रयोगकर्ताओं को सही मात्रा और उपयोग की विधि बताने पर ख़ास ज़ोर न देना । त्रासदी चाहे भोपाल के कीटनाशक कारख़ाने यूनियन कार्बाइड में हुई हो या फिर बस्ती की दावत में कीटनाशी के रूप में बिखरती मौत कई सवाल खड़े करती है । इन दुर्घटनाओं से शिक्षा लेनी चाहिए । ऐसा नहीं है कि अगर कीटनाशक दवाओं का प्रयोग न हो तो खेत चौपट और गोदाम ख़ाली हो जाएंगे, फ़सल रक्षा के लिए जैविक नियंत्रण और भंडारण के लिए वैज्ञानिक विधियां मौजूद हैं । इनकी जानकारी हर किसान तक पहुंचायी जानी चाहिए ।

कीटनाशकों का प्रयोग एकदम बन्द नहीं तो कम से कम सही ढंग से अवश्य किया जा सकता है । अधिकतर प्रयोगकर्ताओं द्वारा कीटनाशकों के प्रयोग में आवश्यक सावधानी नहीं बरती जाती । किस दवा का प्रयोग कितना और कैसे किया जाए, यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए ताकि हानि की गुंजाइश कम से कम रहे ।

जन-स्वास्थ्य और पर्यावरण की क़ीमत पर कीटनाशी दवाओं का जो उपयोग हो रहा है, उससे आने वाले समय में कोई बड़ी अनहोनी हो सकती है । कीटनाशकों के ज़हर का असर कितना ख़तरनाक है, इस बारे में अब ज़्यादातर लोग अनजान नहीं हैं । इस ज़हर से प्रदूषण फैलता है, जानवरों का चारा प्रभावित होता है और फ़सलों में ज़हर घुल जाता है । संरक्षण के बावजूद वन और वन्य जीव घट रहे हैं ।

सन 1986 में पर्यावरण अधिनियम के अंतर्गत पहली बार प्रदूषण फैलाने वाले दोषी व्यक्ति के लिए कठोर दंड की व्यवस्था की गयी, लेकिन यह सच है कि सज़ा के डर से ज़्यादा असर, सोचने और काम करने के ढंग में बदलाव लाने से होगा । इसलिए सुरक्षात्मक उपाय अपनाने के लिए आवश्यक कपड़े पहनना, प्रयोग के बाद भली प्रकार हाथ-मुंह धोना और कंटेनरों को नष्ट करना ज़रूरी है । प्रयोग के स्थान पर कुछ समय तक दृष्टि रखनी चाहिए, ताकि वहां का चारा पशु न खाएं ।

देश में कीटनाशकों के कुप्रभाव से मरने वालों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ जाती है । इसके अलावा इस ज़हर से पैदा होने वाली बीमारियों के शिकार लोगों को इस बात की भनक तक नहीं होती कि उनकी परेशानी का अस्ली कारण क्या है । इसलिए यह ज़रूरी है कि खाने की चीज़ों को साफ़ पानी से ख़ूब अच्छी तरह कई बार धो लिया जाए । वरना यह धीमा और अदृश्य ज़हर देह में जाकर क्या करेगा कुछ कहा नहीं जा सकता । कीटनाशकों के कुप्रभाव से बचने के लिए हालांकि 'एंटीडोट' भी होते हैं, लेकिन न तो हर किसी को उनके बारे में पता होता है और न ही आसानी से वे उपलब्ध हो पाते हैं । सबसे ज़्यादा हानि कीटनाशक दवाओं के इस्तेमाल में असावधानी बरतने से होती है, लेकिन सवाल यह उठता है कि कीटनाशकों का प्रयोग करना क्या बहुत ज़रूरी है या इसे फ़सल बचाने का एक आसान तरीक़ा मान लिया गया ? पता नहीं क्यों फ़सल खाने वाले कीटों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता । कीटनाशी दवाओं का अंधाधुंध छिड़काव मित्र-कीटों को भी मार डालता है । इसके अलावा एक सच यह भी है कि हर किसान को मित्र-कीटों की पहचान भी नहीं होती ।

AQUIL MUKHTAR
DEVELOPERS PVT. LTD.

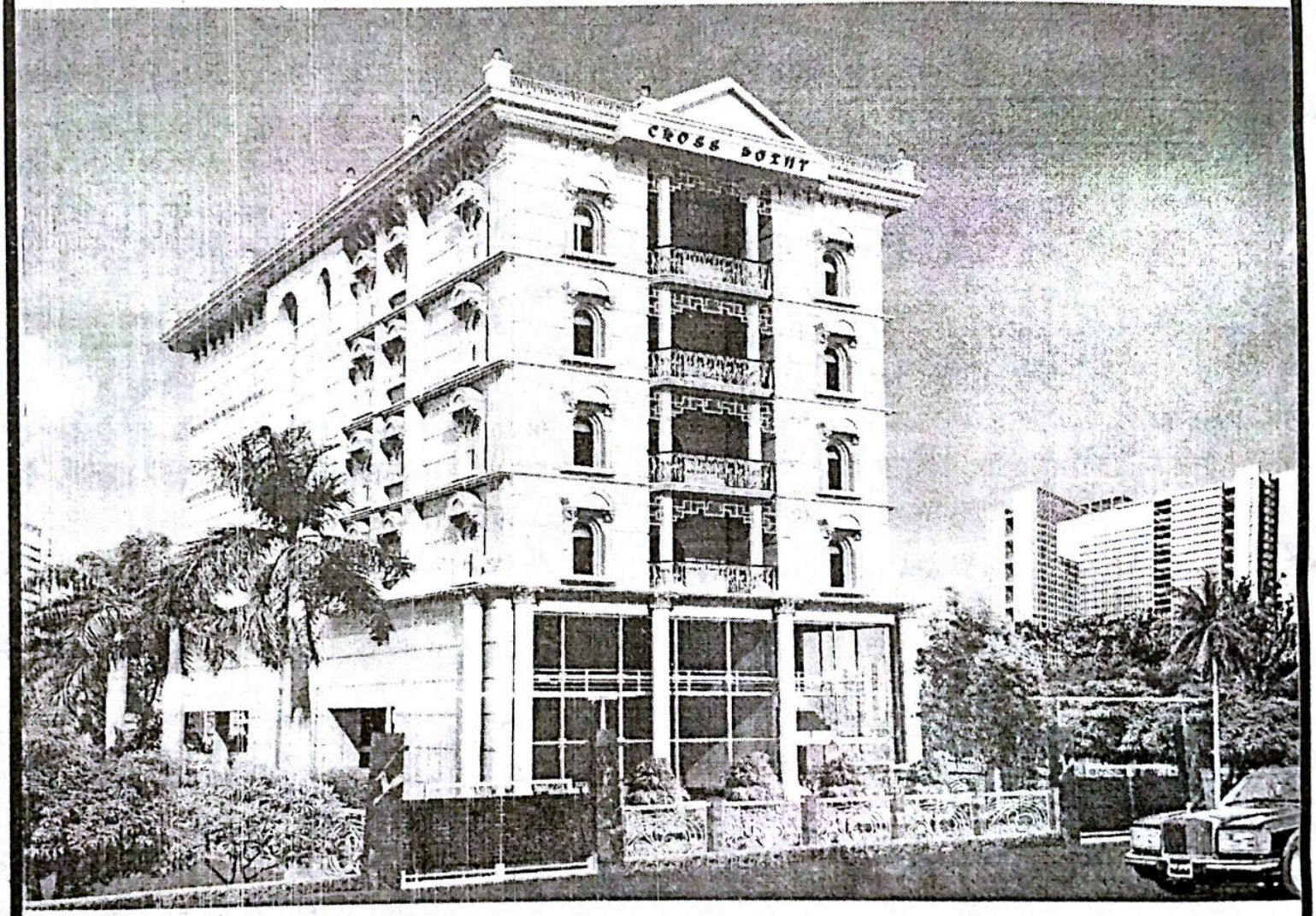

M.D. MR. MUKHTAR AHMED MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

चंगेज़ ख़ान और मुसलमान

● एहसान शौक़

हर तरह से निराश होने के बाद चीनी शहंशाह ने नियमित ढंग से जंग लड़ने के बजाय चंगेज़ ख़ान की सेवा में ख़ूबसूरत सेविकाएं, उत्तम नस्ल के घोड़ों का एक रेवड़, कच्चे रेशम के ढेर और सोने के बहुमुख्य उपहार भिजवाये और फिर शाही ख़ानदान की एक ख़ूबसूरत औरत की शादी चंगेज़ ख़ान से कर दी, ताकि दोस्ताना रिश्ता हमेशा के लिए बना रहे । शादी के बाद चंगेज़ ख़ान चीन से वापस हो लिया और उसने मरुस्थल के किनारे पड़ाव डाल दिया, जहां चंगेज़ ख़ान ने अनेक लड़ाइयों में पकड़े जाने वाले सारे क़ैदियों को एक साथ मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि क़ैदियों का समूह भूखे-प्यासे मंगोल बहादुरों के साथ पैदल सफ़र न कर सकता था ।

चीन से चंगेज़ ख़ान की वापसी के फ़ौरन बाद चीनी बादशाह ने लियावतांग के छिने हुए प्रांतों को दोबारा चीनी राज्य में शामिल करने के लिए एक बाक़ायदा फ़ौज भेज दी । फिर वह अपने उत्तराधिकारी को पीछे छोड़कर ख़ुद दक्षिण की ओर भाग गया और यह शाही घोषणा करता गया कि ''जंग के बाद प्रजा की भलाई व उन्नति के लिए कुछ लाभदायक योजनाओं का बनाना अत्यंत ज़रूरी है । अत: अब भविष्य में मेरा स्थायी ठिकाना दक्षिण में हुआ करेगा ।'' चीनी शहंशाह जब अपनी राजधानी छोड़ चुका, तो पीछे से विद्रोह की आग उठने लगी और सिपाहियों में बुज़दिली और साहसाभाव के लक्षण दिखायी देने लगे । अनगिनत चीनी अफ़सर और सिपाही अपनी फ़ौज को छोड़कर मंगोलों से जा मिले और उन्होंने चंगेज़ ख़ान की अधीनता स्वीकार करने का एलान कर दिया ।

चंगेज़ ख़ान को जब कायर शहंशाह के भाग जाने का ज्ञान हुआ, तो वह वापसी का सफ़र करते-करते रुक गया । उसने फिर अपने सेनानायक सोबदाई बहादुर और मकोली को यनकंग की राजधानी पर आक्रमण करने के लिए रवाना किया । अत: मंगोल सेना ने पहाड़ी शहरों का चक्कर काटकर हवांगहो को पार करके यनकंग का घेराव कर लिया । काफ़ी दिनों तक की घेराबन्दी से यनकंग के निवासियों में अत्यधिक अफ़रा-तफ़री फैल गयी और खुल्लम-खुल्ला लूट-मार, आगज़नी, डकैती की घटनाएं होने लगी, तो मंगोल सेना चीनी सिपाहियों को शान्ति का लालच देकर चीन की राजधानी में एक विजेता की तरह आगे बढ़ते हुए यगकंग में दाख़िल हो गयी । मंगोलो ने शहर में प्रवेश करते ही मकानों और भवनों में आग लगा दी । शहर के निवासियों को सामूहिक रूप से चुन-चुनकर क़त्ल कर दिया । यहां तक कि वहशी और उजड्ड मंगोलों ने कुत्तों और बिल्लियों को भी जीवित न छोड़ा ।

यनकंग से प्राप्त होने वाले सारे माले ग़नीमत और ख़ज़ाने को मकोली बहादुर ने चंगेज़ ख़ान की सेवा में भेज दिया और शाही ख़ानदान के क़ैदियों के क़ाफ़िले भी चंगेज़ ख़ान के पास भेज दिए । अत: मकोली बहादुर की ईमानदारी और बहादुरी से प्रभावित होकर चंगेज़ ख़ान ने मकोली बहादुर को सफ़ेद याक के नौदुमों वाला निशान प्रदान किया और फिर से उसे पूरी आज़ादी और ख़ुदमुख़्तारी के साथ चीन के नये विजित क्षेत्रों के प्रबंध व व्यवस्था की ज़िम्मेदारी भी सौंप दी, ताकि वहां के लोगों के दिलों में मंगोलों के लिए नफ़रत की भावना को धोया जा सके ।

चीन पर विजय प्राप्त करने के बाद चंगेज़ ख़ान ने सारे विजित क्षेत्रों पर ''यासा'' के क़ानून लागू करके शहर कराकोरम को अपनी राजधानी बना लिया, जहां हर जगह समूर वाले ख़ेमों के अलावा मिट्टी और गारे के मकानात थे । जब चंगेज़ ख़ान चीन से वापस कराकोरम पहुंचा तो मध्य एशिया के पश्चिमी भागों की हालत ख़राब थी, क्योंकि पहाड़ों के जंगी सरदार कुराख़ताई को क़त्ल करवा कर ताईहान का शहज़ादा ''कोशलूक़'' ने चंगेज़ ख़ान के विरुद्ध साज़बाज़ शुरू कर दी थी । चंगेज़ ख़ान ने कोशलूक़ की बग़ावत को कुचलने के लिए सेनानायक जबीनोयान को भेजा तथा मकरीत क़बीले को सज़ा देने के लिए सोबदाई

बहादुर को भेजा । जबीनोयान के हाथों कोशलूक़ मारा गया । अत: उन सारे इलाक़ों का शासन प्रबंध जबीनोयान के हाथों सौंप कर चंगेज़ ख़ान ने पूर्वी सरहदी पर्वतीय क्षेत्रों के दूसरी ओर के सदाबहार व हरे-भरे इलाक़ों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी शुरू कर दी, ताकि आक्रमण से पहले उन इलाक़ों की भौगोलिक परिस्थितियों और राजनीतिक स्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके ।

पूरी जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद चंगेज़ ख़ान ने चीन पर आक्रमण कर दिया और चीन पर पूर्ण अधिकार कर लेने के बाद चंगेज़ ख़ान ने पूर्वी सीमावर्ती पर्वतीय क्षेत्रों की तरफ़ ध्यान दिया । प्राचीन काल के अरब पूर्व के इस सिलसिला हायेकोह को 'कोहेक़ाफ़' कहते थे । इस पर्वतीय सिलसिला कोहक़ाफ़ को हुन क़ौम और इदार क़ौम के अतिरिक्त बादशाह दारयूश ने भी पार किया था । बादशाह दारयूश जो ईरान का एक बादशाह था, उसने कोहेक़ाफ़ को पार करके सिंध नदी और समरक़न्द तक जा पहुंचा था । उसके दो सदियों बाद सिकन्दर भी अपनी सेना लेकर इस इलाक़े में घुस आया था । इस विस्तृत और उजाड़-वीरान पर्वतीय शृंखला के पार पश्चिम में मुस्लिम सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद ख़्वारिज़्म का शासन था । सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद ख़्वारिज़्म शाह एक तुर्क नस्ल के ख़ानाबदोश क़बीले से संबंध रखता था और उसके पूर्वज महान सल्जूक़ी बादशाह मलिक शाह के ग़ुलाम रह चुके थे ।

ख़्वारिज़्म शाह एक ज़बरदस्त लड़ाकू सिपाही था और उसका राज्य मिस्र के अतिरिक्त समरकन्द से लेकर बग़दाद तक फैला हुआ था । सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह का राज्य हिन्दुस्तान से बग़दाद तक और ख़्वारिज़्म सागर से लेकर फ़ारस की खाड़ी तक फैला हुआ था । सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह एक निडर व वीर बादशाह था और वह ख़ुद भी चंगेज़ ख़ान की तरह एक बड़े साम्राज्य का शासक था ।

चंगेज़ ख़ान को जब मुसलमान व्यापारियों के द्वारा सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह के बहादुरी के क़िस्से मालूम हुए, तो उसने अपने दूतों को बहुमूल्य उपहार के साथ सुल्तान के दरबार में भेजा । दूतों के द्वारा चंगेज़ ख़ान का संदेश मिलने के बाद सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह ने मंगोलों के साथ व्यापारिक संबंध बढ़ाने पर स्वीकृति दे दी । अत: दोनों तरफ़ के तिजारती क़ाफ़िले आते-जाते रहे । उसी दौरान सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह अपनी क़ौम के द्वारा तैयार किये गये अस्त्र-शस्त्र और हथियार अपने इलाक़े के मुसलमान व्यापारियों के द्वारा मंगोलों को भिजवाता रहा । व्यापारिक समझौता हुए अभी डेढ़ या दो साल भी नहीं बीता था कि अचानक शाह ख़्वारिज़्म शाह के सीमावर्ती क़िला इतरार के क़िलेदार उनील जोक ने कराकोरम के एक क़ाफ़िले पर जासूसी का आरोप लगाकर सैकड़ों व्यापारियों को गिरफ़्तार कर लिया । जब इसकी ख़बर सुल्तान को मिली, तो उसने सारे सामान पर अधिकार करके मंगोल व्यापारियों को क़त्ल करवा दिया ।

कुछ दिनों के बाद जब चंगेज़ ख़ान ने मंगोल व्यापारियों के निर्दोष हत्या पर विरोध प्रकट करते हुए सुल्तान के पास अपने दूत के साथ मंगोल प्रतिनिधिमंडल को भेजा, तो उस अवसर पर सुल्तान ने बिना सोचे-समझे बेवक़ूफ़ी का सबूत देते हुए मंगोल दूत को भी क़त्ल करवा दिया । सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह ने मंगोल प्रतिनिधिमंडल और मंगोल अफ़सरों के बाल सर से उतरवा कर उनकी बहुत बेइज़्ज़ती की और उन्हें अपने दरबार से निकलवा दिया । मंगोल अफ़सर जब वापस अपनी राजधानी कराकोरम पहुंचे और सुल्तान ने जो अपमान उनके साथ किया था, चंगेज़ ख़ान को पूरी घटना से अवगत कराया । पूरी बात सुनते ही चंगेज़ ख़ान ग़ुस्से से बिफ़र उठा । उसने अपने सिर से याक के नौ दुमों के निशान वाली सफ़ेद समूरी टोपी और अपनी कमर से चुरमी पटका उतारा । फिर सुल्तान से निर्णायक युद्ध करने के लिए चंगेज़ ख़ान ने अपने बेटे जोची ख़ान के अधीन, ऐग़ूर, तुर्कों और शक्तिशाली किरगिज़ों को एकत्र किया और फिर अपने अपमान और व्याारियों के क़त्ल का बदला लेने के लिए सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह के विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजा दिया, क्योंकि यासा के क़ानून के तहत सुल्तान पर अपराध करने का आरोप सिद्ध हो चुका था । अत: चंगेज़ख़ान ने सुल्तान शाह को तबाह व बर्बाद करने के लिए एक संदेश भेजा ।

"अगर आसमान पर एक सुरज चमक सकता है, तो ज़मीन पर भी दो के बजाय एक ही ख़ाक़ान शासन कर सकता है ।"

चंगेज़ ख़ान ने इस संदेश को भेजने के फ़ौरन बाद शक्तिशाली मुसलमानों के बारे में ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त कीं । वह बूढ़े मुग़ल व्यापारियों और सिपाहियों से भी

पूछताछ करता रहा, यहां तक कि जब चंगेज़ ख़ान को दुनिया-ए-इस्लाम के शहरों बुख़ारा, समरकन्द, बल्ख़, हेरात और ख़ुरासान की भागोलिक स्थिति की पूर्णतया जानकारी प्राप्त हो गयी, तो चंगेज़ ख़ान ने मिल्लते इस्लामिया पर आक्रमण करने से पहले चांदी की तख़्तियों पर आदेश लिखवा कर गोवी मरुस्थल के सारे क़बीलों को जंगी समान के साथ राजधानी कराकोरम पहुंचने का हुक्म जारी कर दिया । मंगोल बहादुर अपने हथियारों के साथ-साथ सफ़र का सामान भी तैयार करते रहे ।

गर्मियों का मौसम ख़त्म होते ही जब चंगेज़ ख़ान का सबसे छोटा बेटा तोलाई ख़ान सेनानायक का पद संभालने आ पहुंचा, तो चंगेज़ ख़ान ने सारे सेना के बहादुरों और सेना की लड़ाकू औरतों के सामने एक छोटा-सा भाषण दिया । भाषण सुनाने के बाद चंगेज़ ख़ान ने अपने सिपाहियों की सफ़ें तैयार कीं । रवानगी से पहले चंगेज़ ख़ान ने अपनी बीवी ''कोलान'' के साथ बड़ी शानोशौकत के साथ अपने तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सवार होकर लश्कर की सफ़ों का निरीक्षण किया और पूरी तरह से संतुष्ट होने के बाद अंतत: चंगेज़ ख़ान ने अपने तुरख़ानों, अरख़ानों और अनेकों सरदारों की कुरुलताई (मजलिस मुशावरत) से संबंध स्थापित करके अपने एक भाई को कराकोरम का गवर्नर बनाया । फिर उसने ढाई, तीन लाख सिपाहियों की विशाल सेना के साथ बैकाल झील से मध्य एशिया के पहाड़ी सिलसिले वाले इलाक़े की तरफ़ धीरे-धीरे पेशक़दमी शुरू कर दी ।

दर्रा जिंगारिया के दुश्वार गुज़ार पहाड़ी इलाक़ों और भयानक तंग घाटियों में बर्फ़ खोद-खोदकर रास्ता बनाने और अत्यधिक सर्दी की कठिनाइयों को सहन करने के बावजूद मंगोल सेना निरंतर आगे बढ़ती रही । मिल्लते इस्लामिया की सीमा पर कुछ दिन ठहरने के बाद चंगेज़ ख़ान ने अपने जासूसों को नयी जानकारी मालूम करने के लिए आगे-आगे भेज दिया और मंगोल छापामार दस्तों ने खाने-पीने की चीज़ें आसपास के गांवों से लूट लीं और गांवों में आग लगाकर वहां के निवासियों को मार डाला ।

सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह को मंगोल सेना के आने की सूचना मिली, तो वह 4 लाख के लगभग अताबिक, तुर्क, ईरानी औ अरबी फ़ौज के दस्तों को लेकर मंगोलों के मुक़ाबले के लिए सीहूं नदी के उत्तर की ओर रवाना हुआ, जहां जोची ख़ान के नेतृत्व में पड़ाव डाले हुए मंगोल सेना से घमासान का युद्ध हुआ । इस युद्ध में ख़्वारिज़्म की सेना का बहुत नुक़सान हुआ । अभी युद्ध हो ही रहा था कि शाम के समय जलालुद्दीन ख़्वारिज़्म ने तुर्क फ़ौज की सहायता से मंगोलों के अक़ब (पीछे से) में हमला किया, तो मंगोल सेना की सफ़े दरहम-बरहम हो गयी और वे अपने ख़ेमागाहों में आग लगाकर मैदाने जंग से पीछे की तरफ़ भाग गये ।

चंगेज़ ख़ान को जब इस प्रारंभिक जंग के बारे में मालूम हुआ, तो उसने जोची ख़ान की प्रशंसा की और उसके नेतृत्व में और अधिक मंगोल फ़ौज भेज दी, ताकि सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह का पीछा करने के साथ-साथ सीहूं नदी के किनारे पर बसे हुए ''ख़ूक़न्द शहर'' का भी घेराव कर लिया जाए । जोची ख़ान की मंगोल सेना ने ख़ूक़न्द शहर को घेर लिया और शहर पर आग के तीरों की बारिश कर दी, जिसके कारण ख़ुक़न्द के गवर्नर तैमूर मुल्क ने शहर ख़ाली कर दिया । तैमूर मुल्क ने रक्तपात से बचाने के लिए शहर वालों को नावों में बैठा कर दरिया पार करा दिया । फिर वह स्वयं दरिया पार करके सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह से जा मिला, जो राज्य के दक्षिण में सेना तैयार कर रहा था ।

इस रेगिस्तानी मैदान के आर-पार दूसरे मरहले में जबी नोयान की ताज़ादम मंगोल सेना ने ग्लेशियरों का चक्कर काट कर अतरार के क़िले को घेर लिया और इस क़िले के क़िलेदार उनील जौक (जो उस समय शहर का गवर्नर था) का सर क़लम करवाकर उसके बेसिर की लाश को नदी में फेंकवा दिया । मंगोलों ने शहर के लोगों को क़त्ल करने के बाद पूरे शहर व क़िले पर अधिकार कर लिया । सीहूं नदी के उत्तरी भागों की ओर सुल्तान ख़्वारिज़्म शाह की बिखरी हुई फ़ौजें फिर से जमा हुईं, तो चंगेज़ ख़ान ने जबीनोयान के साथ मिलकर राज्य के पूर्वी और पश्चिमी भाग की ओर बढ़ते हुए समरक़न्द, बल्ख़ और बुख़ारा का घेराव कर लिया । सुल्तान शाह की ख़्वारिज़्मी फ़ौजें जब इन शहरों का घेरा ख़त्म करने में असफल रहीं, तो शहरों के क़ाज़ियों, बुज़ुर्गों और धार्मिक रहनुमाओं ने शहर की कुंजियां चंगेज़ ख़ान के सामने रख दी, तो मंगोल सेना एक तूफ़ान की तरह शहर में दाख़िल हो गयी । मंगोल सेना ने शहर लूट लिया और ख़ानक़ाहों, मस्जिदों और पुस्तकालयों को उन्होंने अपने घोड़ों का अस्तबल बना दिया । अनु० : **इरशाद अली ख़ान**

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

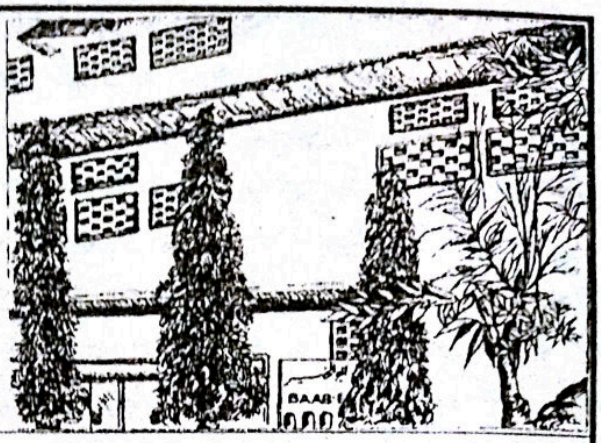

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा • 24 वर्षीय सेवाएं • 19 विभाग • शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक • पत्राचार शिक्षा • 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया • प्रौढ़ शिक्षा • वोकेशनल सेन्टर • कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं • ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं • 1993 ई० से 2010 ई० तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया • वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है • किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है—आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • दीनी किताबें • ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी • स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये • मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना • यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । • इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 • Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com., Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

मानवता

जून की दोपहर थी । एक वृद्ध मेरे घर के दरवाज़े पर बैठा हुआ था । उसके साथ में कुछ चटाइयां थीं शायद वह चटाइयां बेचने वाला था । मैंने उसकी तरफ़ देखा तो वह सहमी निगाहों से मुझे देखने लगा था । उसे देखकर लग रहा था मानो डर रहा हो ।

''आप पानी पिएंगे'' मैंने उससे पूछा था और साथ ही अपनी बेटी को पानी लाने के लिए आवाज़ लगायी थी । वह वृद्ध अब भी मेरी आंखों में कुछ टटोलना चाह रहा था कि मैंने पूछ लिया था, ''क्या बाबा ! ऐसे क्या देख रहे हैं ? कितनी गर्मी पड़ रही है । थोड़ी देर आराम कर लो । पानी पी लो । आप यहां आराम से बैठो । चिंता की कोई बात नहीं ।'' ''कोई इतना अच्छा भी हो सकता है ?'' कुछ शब्द आग उगलती उस दोपहर में ठंडी बूंदों की तरह तैर गये थे ।

''क्यों ?''

''बेटा आप बहुत अच्छे हैं । नहीं तो लोग अपने घरों के सामने खड़ा तक नहीं होने देते । अभी कल ही की तो बात है, एक आदमी ने तो, आपकी इसी दिल्ली की बात है साब, पुलिस बुलवा ली, कहने लगा–आतंकवादी है बुड्डा'' फिर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला था, ''साब ! बड़ी मुश्किल से छूटा था, पुलिस वाला पूरे दिन की कमाई ले गया । आपने मुझे देखा तो लगा, कहीं आप भी पुलिस न बुलवा लें ।'' वह वृद्ध एक ही सांस में कहता चला गया था ।

''नहीं बाबा, अभी मानवता मरी नहीं है ।'' कहकर मैं चुप हो गया था । बेटी पानी ले आयी थी । वह वृद्ध, पानी पीकर बहुत खुश था ।

• डॉ॰ पूरन सिंह

अपराधों का ग्राफ़

राम शरण जी जब से थाना प्रभारी बनकर आये । सबकी रिपोर्ट लिखी जाने लगी । जनता बहुत ही खुश थी । मासिक बैठक में पुलिस अधीक्षक ने डांटते हुए कहा जब से तुम उस थाने को गये हो अपराध काफ़ी बढ़ रहे हैं । इसलिए तुम्हें निलंबित किया जाता है ।

वीर सिंह को वहां का थाना प्रभारी बनाया जाता है । अब थाने में किसी की रिपोर्ट ही नहीं लिखी जाती थी । अगली मासिक बैठक में पुलिस अधीक्षक अपराधों के ग्राफ़ कम होने की वीर सिंह को बधाई दे रहे थे ।

संजय कुमार चतुर्वेदी

निमचेनी, मितौली, लखीमपुर खीरी (उ॰प्र॰) 262727

ईश्वर

है पवित्र कुरआन में, ईश्वर का सन्देश ।
मैं हूं स्वामी जगत का, मेरे ही सब देश ।।
जिसने यह निर्मित किया, जगत् विचित्र ललाम ।
केवल वही उपास्य है, उसको करें प्रणाम ।।
जिसने हमको है किया, जगती में उत्पन्न ।
दे सकता केवल वही, हमें वस्त्र, धन, अन्न ।।
हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, सम्मान ।
सब कुछ उसके हाथ में, निश्चयपूर्वक मान ।।
है जिस प्रभु के हाथ में, अन्तिम दिन का न्याय ।
जीवन-यापन का वही, देता है सदुपाय ।।

• वृहस्पति

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रातः 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रातः 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें–

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

वनों का महत्व

■ विद्या प्रकाश

पृथ्वी के चतुर्दिक व्याप्त वायुमंडल से कार्बन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड तथा सी॰एफ॰सी॰ जैसी ज़हरीली गैसों को सोखकर धरती पर निवास करने वाले असंख्य जीवधारियों को प्राणवायु ऑक्सीजन प्रदान करने वाले वन आज खुद अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं ।

पर्यावरणविदों के अनुसार वर्तमान समय में किसी वयस्क व्यक्ति को जीवित रहने के लिए जितनी ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है, वह उसे 16 बड़े-बड़े वृक्षों से मिल सकती है । लेकिन पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से वृक्षों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है । भारत में पेड़ों की उपलब्धता की स्थिति काफ़ी चिंताजनक है । स्वदेश में औसतन प्रति 36 व्यक्तियों के लिए एक वृक्ष है ।

कोलकाता जैसे महानगर में 15 हज़ार लोगों के लिए सिर्फ़ एक पेड़ है । वर्ष 1988 में पटना शहर में जहां प्रति ढाई हज़ार लोगों के लिए एक पेड़ था, वहीं अब चार हज़ार लोगों पर एक वृक्ष है । इसी से स्थिति की गंभीरता का अंदाज़ा आसानी से किया जा सकता है ।

आज स्थिति यह है कि जंगलों पर तात्कालिक स्वार्थवश मानवीय हमले विश्व भर में बराबर जारी हैं । लकड़ी माफ़ियाओं द्वारा स्थानीय पुलिस तथा वनविभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की मिलीभगत से महुआ, नीम, आम, पाकड़, कटहल वग़ैरह पेड़ों की अंधाधुंध कटाई जारी है । इसी के साथ कल-कारख़ानों तथा स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार, बस, ट्रक आदि वाहनों से उत्सर्जित होने वाली हानिकारक गैसों का वायुमंडल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है । एक तरफ़ वृक्षों की बेतहाशा कटान तथा दूसरी तरफ़ कारख़ानों और वाहनों से हानिकारक गैसों के उत्सर्जन के फलस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन का ख़तरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । इससे नाना प्रकार की गंभीर बीमारियों के उत्पन्न होने का ख़तरा है ।

पृथ्वी का फेफड़ा कहे जाने वाले ब्राजील के जंगल वहां पर होने वाले फुटबॉल विश्व कप तथा ओलम्पिक खेलों की भेंट चढ़ रहे हैं । ब्राजील में वर्ष 2014 में फुटबाल विश्व कप तथा वर्ष 2016 में ओलम्पिक खेल का आयोजन किया जाएगा । ब्राजील में लगभग एक अरब एकड़ क्षेत्र में फैले वर्षा वन विश्व का 20 प्रतिशत ऑक्सीजन पैदा करते हैं । विश्व की आधे से ज़्यादा वनस्पति, जन्तु तथा कीट प्रजातियां इसी उष्णकटिबंधीय वर्षा वन में पायी जाती है, लेकिन औद्योगिक विकास तथा शहरीकरण के नाम पर आज यहां प्रत्येक एक सेकेंड में डेढ़ एकड़ वर्षा वन को नष्ट किया जा रहा है । यदि हम समय पर नहीं चेते तो इस वन विनाश की हमें भारी क़ीमत चुकानी होगी । पेड़ काटकर हम खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं ।

इस संबंध में पर्यावरणविदों का कथन है कि हमने अपने फ़ायदे के लिए पेड़ काट दिये लेकिन जंगल कुदरत द्वारा किये गये वे अनमोल उपहार हैं जो हमें जीवन के लिए आवश्यक प्राणवायु प्रदान करते हैं । स्वास्थ्य तथा जलवायु परिवर्तन जैसी तमाम समस्याओं से बचाव के लिए हमें पेड़ अवश्यमेव लगाना होगा । विश्व की लगभग सात अरब जनसंख्या यदि एक-एक पेड़ लगाये तो पृथ्वी मंडल को फिर से हरा-भरा बनाया जा सकता है ।

खजूर कितनी लाभदायक ?

● मुहम्मद ख़लील

(वैज्ञानिक)

खजूर भी एक स्वास्थ्यप्रद भोजन है । इसकी बहुत-सी क़िस्में हैं परन्तु पदार्थ की आंतरिक विशेषता सब की एक जैसी है । यह संसार के विभिन्न भागों में पायी जाती है, परन्तु विशेष रूप से इराक़, ईरान और अरब के देशों में अधिक पैदा होती है । इसमें शकर, चिकनाई और प्रोटीन के अतिरिक्त अधिक मात्रा में विटामिन भी पाये जाते हैं । इसमें प्राकृतिक रूप से रेशे भी मौजूद हैं । इसमें तेल कैल्शियम, गंधक, लोहा, फ़ास्फोरस, पोटैशियम, तांबा, चूना और मैगनीज़ की मात्रा भी है । इसे हम संतुलित आहार भी कह

सकते हैं ।

कुछ लोग इसे दूध के साथ खाना पसन्द करते हैं, जिससे इसके स्वाद में वृद्धि हो जाती है । यह हमारे शरीर को शक्ति प्रदान करती है । वहीं दूसरी ओर मस्तिष्क को भी विशेष बल देती है । यह एक ऐसा पूर्ण भोजन है जो तुरंत पच जाता है ।

वैज्ञानिकों का विचार है कि खजूर खाने के आधे घंटे बाद पच जाती है और शरीर की थकान दूर कर देती है, जिससे शरीर को आंतरिक रूप से शक्ति प्राप्त होती है । साधारणतया रक्त की कमी से हमें भूख लगने लगती है । जबकि अधिकतर लोगों का विचार है कि पेट ख़ाली होने से भूख लगती है । परन्तु कुछ खजूरें खाने के पश्चात भूख समाप्त हो जाती है ।

खजूर महिलाओं के लिए भी लाभदायक है विशेष रूप से दूध पिलाने वाली माताओं के लिए खजूर अपने कई लाभ छोड़ती है । खजूर से मां के दूध में वह सारी विशेषताएं पैदा हो जाती हैं जिससे डॉक्टर बच्चों को भी कम मात्रा में खजूर खिलाने की राय देते हैं । इसमें भोजन के लवण अधिक मात्रा में पाये जाते हैं । डॉक्टरों का कहना है कि जब मनुष्य के रक्त की नलियां शरीर की दुर्बलता से प्रभावित होती है तो हृदय के कंपन में अधिकता हो जाती है जिससे मनुष्य अपने कार्य को सुचारू रूप से नहीं कर पाता । इस स्थिति में भी खजूर का सेवन लाभदायक है ।

खजूर में कैल्शियम अधिक मात्रा में पायी जाती है । इस तरह खजूर के सेवन से शरीर की हड्डियों को शक्ति प्राप्त होती है और वह बल से परिपूर्ण हो जाती हैं । सामान्यत: बालकों की हड्डियां कमज़ोर होती है इस प्रकार इसका सेवन बच्चों के लिए लाभदायक है । दूसरी ओर निर्बल लोगों के लिए भी इसका सेवन लाभकारी है ।

यह नेत्र की दृष्टि को बनाये रखने में लाभकारी है । रात में कम दिखने की बीमारी में भी लाभकारी है । चिकित्सकों का कहना है कि खजूर मेदे के कैंसर से बचाती है ।

प्लास्टिक का चुंबक

ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने दुनिया का पहला प्लास्टिक का चुंबक विकसित करने में सफलता हासिल कर ली है । इस चुंबक से कंप्यूटर, चिकित्सा क्षेत्र आदि में नयी प्रगति हो सकती है । न्यू साइंटिस्ट पत्रिका की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि दरहम विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित कार्बनिक सुचालक पदार्थ समूह का यह पहला ऐसा चुंबक है जो सामान्य तापमान में भी सुचारू रूप से काम कर सकेगा ।

ब्रिटिश वैज्ञानिकों के अनुसार यह चुंबक एक तरह का पोलिमर है जो पी॰ए॰एन॰आई॰ और टी॰सी॰एन॰क्यू॰ के मिश्रण से निर्मित अणुओं की श्रृंखला है और इसमें असाधारण विद्युतीय गुण हैं । हालांकि धातु के चुंबक की तुलना में इसकी चुंबकीय क्षमता कम है मगर वैज्ञानिकों को भरोसा है कि इसमें सुधार कर लिया जाएगा । प्लास्टिक चुंबक का इस्तेमाल कंप्यूटर हार्डडिस्क की कोटिंग में प्रयोग किये जाने की संभावना है जिससे उच्च क्षमता वाले डिस्क का विकास हो सकता है और इसका उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में किया जा सकेगा । पोलिमर बनाने में कार्बनिक पदार्थों का इस्तेमाल होता है एवं मानव शरीर धातुओं की अपेक्षा इसे ज़्यादा आसानी से स्वीकार कर लेता है ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda)
Chairman

(Prof. M. B. Zaman)
Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001



जानलेवा मोबाइल !

मोबाइल फ़ोन का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल करने वाले लोग सावधान हो जाएं । विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू॰एच॰ओ॰) की निगरानी में हो रही एक बड़ी स्टडी से शुरुआती नतीजा निकला है कि सेलफोन के ज़्यादा इस्तेमाल से कैंसर का ख़तरा भी काफ़ी बढ़ जाता है ।

द डेली टेलीग्राफ़ में छपी ख़बर के अनुसार यह अहम स्टडी 13 देशों में की गयी है । इसमें वर्ष 2000 से 2004 के बीच 12,800 से ज़्यादा लोगों की राय ली गयी थी । इसके तहत ट्यूमर के मरीज़ों के अलावा स्वस्थ लोगों का भी इंटरव्यू लिया गया । उनसे उनकी सेहत के अलावा मोबाइल के इस्तेमाल से जुड़े सवाल पूछे गये । इस ख़तरे को देखते हुए कई देश, ख़ासतौर पर फ्रांस ने इस सिलसिले में कड़ी चेतावनियां जारी करना शुरू कर दिया है । अमेरिका के राजनीतिक दायरे में भी हलचल मच गयी है और वहां भी मोबाइल के इस्तेमाल से होने वाले जोखिम की जांच के लिए दबाव बढ़ने लगा है ।

यह पूरा प्रोजेक्ट दो करोड़ पाउंड का है । इसके तहत मोबाइल फ़ोन के यूज और तीन तरह के ब्रेन ट्यूमर व लार की ग्रंथियों के ट्यूमर में संबंध तलाशा गया । इस दौरान कुछ इस तरह के सुबूत पाये गये जो ज़ाहिर करते हैं कि मोबाइल फ़ोन के ज़्यादा इस्तेमाल से उम्र बढ़ने पर ब्रेन ट्यूमर होने की भी आशंका बढ़ जाती है ।

इस स्टडी की अगुआई करने वाली डॉ॰ एलिजाबेथ कार्डिस इस नयी चेतावनी का समर्थन करते हुए कहती हैं, हम रेडियो फ्रीक्वेंसी रेडिएशन के संभावित बुरे असर के ख़िलाफ़ एहतियात बरतने की सलाह देते हैं ।

एक्सपर्ट्स का कहना है कि भले ही यह नतीजे सौ फ़ीसदी सही न हों इसके बावजूद ये इस मोबाइल कंपनियों के इस आश्वासन पर सवाल खड़ा करते हैं कि मोबाइल का इस्तेमाल पूरी तरह सेफ है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

NEW EMPRESS MILLS
1st Phase Industrial Area BALOTRA-344022 (Raj.)
Visit us. www.Empress. com. E-mail : empresspoplin@hotmail.com
(M) SAYED PARWAN ALI 09214408133
LILLY लिली गोल्ड GOLD
Superior Nighty
KAJAL काजल गोल्ड GOLD
MFG. OF : HIGHCLASS STANDARD POPLIN & NIGHTY PRINTS

M. M. Ibrahim
Partner

MOBILE : 9371194556
9823304999

SEA ISLAND
BRAND

QUALITY FOODS
SEAFOOD PROCESSORS & EXPORTERS
AN ISO 9001 : 2000 COMPANY
FACTORY :
Plot nos. sb 39 & sb 50A,
cuncolim industrial estate,
cuncolim, salcete, GOA-403 703
Tel: 91 832 2865610/11/12
fax: 832 2865609
Email: qualityfoods@sancharnet.in
qualityfood@rediffmail.com

QUALITY EXPORTS
SEAFOOD PROCESSORS & EXPORTERS
Factory:
Plot Nos. Sb 64, 65, 66 & 67
Cuncolim industrial estate,
cuncolim, salcete, GOA- 403 703
Ph : 91 832 2865772/73
Email: qualityexportsgoa@yahoo.com
mmigoa@yahoomail.com
Personal: mmigoa@yahoo.com
mmigoa@ideatimes.com

Md. Khalil Ansari
Ph: 0657-2341175

ASIAN OPTICS
Dispensing opticians





ASIAN LEATHERS
Exclusive Footwear Collection

MAIN ROAD, GOLMURI, JAMSHEDPUR-831003

Posted on 20-21 July 2010
August 2010
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.07.2010

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

A PROMINENT INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY IN JHARKHAND

Under

MARKAZ-E-ADAB-O-SCIENCE

(A REGISTERED EDUCATIONAL CHARITABLE TRUST NO. 9665/IV-474)

SITD

Courses Offered

SOME FACTS & FIGURES

- 4 Wings : (i) Comparative Religion (ii) Literature (iii) Career Guidance & Training (iv) Research and Publication

MBA, MCA, BCA & CIC from IGNOU Courses recognised by AICTE, AIU & UGC
Master in Business Administration (MBA)
Marketing, Finance, HRD & Operation from IGNOU
M.A., B.A., Diploma in Journalism & Mass Communication, Teach English from MANUU
One year Diploma Course in Computer Application and Multilingual DTP
conducted by NCPUL, Ministry of HRD, Govt. of India, New Delhi



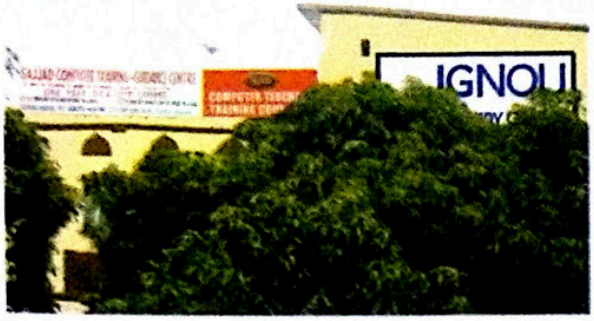

Institutions established

Computer and IT Training Institutes

SAJJAD COMPUTER TRAINING AND GUIDANCE CENTRE
(SCTGC) Bariatu, Ranchi for one year DCA/DTP course
SAJJAD INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY
(SIIT) Doranda, Ranchi for one year DCA/DTP course
IGNOU SPECIAL STUDY CENTRE (Code-0531)
Bariatu, Ranchi for MCA, BCA & CIC, MBA
COMPUTER TEACHER TRAINING COURSE
NURSERY TEACHERS TRAINING CENTRE (NTTC)
Bariatu & Kanta Toli, Ranchi
MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY
MANUU STUDY CENTRE (Code: 158)

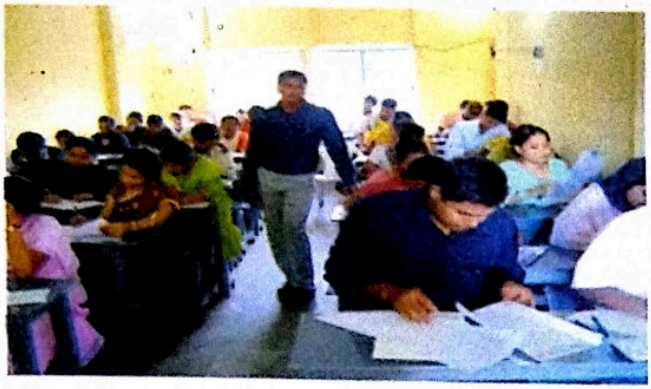



.....Contacts Addresses.....

(I) G.K. Market, 1st Floor, Kantatoli Chowk, Ranchi - 834008, **Phone: 0651-2532060, 9431587148**
(ii) 2k/3, Bariatu Housing Colony, Ranchi - 9 (Jharkhand), **Phone: 0651-2543838, 2540534**
E-mail: tariquesajjad@gmail.com **www.markazadab.org**